॥ श्रीः ॥

सूर्यपुराणादि

(२२५ रत्न.)

जिसमें

परमगुह्य ज्ञान, ध्यान, नीति, शिक्षा और अतिललित चित्रविचित्र सुधासम हरिकी कथा हैं.

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्वाटालेन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रित कर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९८६ शके १८५१

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने वम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्वाटा लैन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहाँ प्रकाशित किया ।

श्रा० १ ......

अथ सूर्यपुराणादि २२९ रत्नोंकी

अनुक्रमणिका ।

इति सूर्यपुराणादि (२२५) रत्नोंकी सूची समाप्त.

॥ श्रीः ॥

अथ सूर्यपुराणप्रारंभ ।

श्रीगणेशाय नमः ।
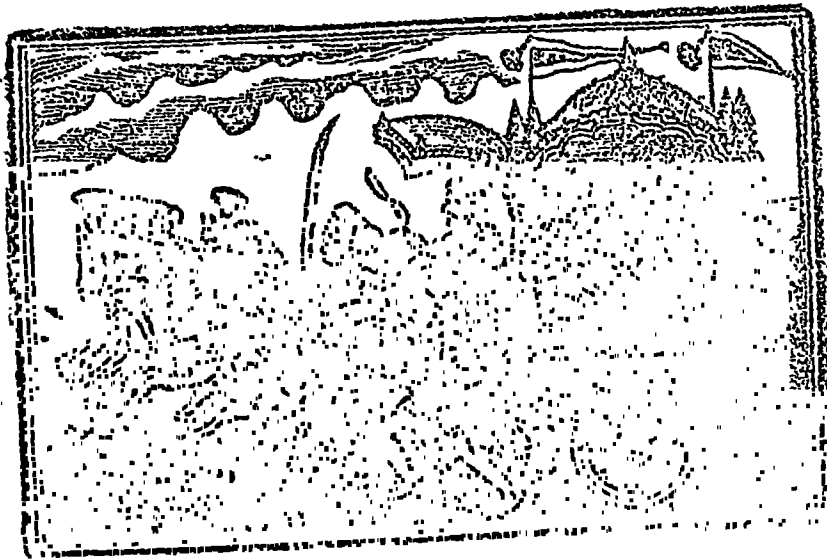
दोहा–वंदौंचरणहृदयधारि, भक्तिप्रेमलवलीन ॥
महिमाअगमअपारहै, सोबहुज्ञानप्रवीन॥१॥
वंदौं चरण जोरिकर, श्रीपति गौरिगणेश ॥
तुलसिदासअतिप्रेमसे, वर्णतकथादिनेश॥२॥

चौपाई ॥ सूर्य देवतासुमिरौंतोहीं ॥ सुमिरतज्ञान सुबुधिदेमोहीं ॥ ज्योतिरूपआदितबलवाना ॥ तेज प्रतापसुअग्निसमाना ॥ तुमआदितपरमेश्वरस्वामी अखिलनिरंजनअंतर्यामी ॥ वर्णिनजाइज्योतिकी लीला ॥ धर्मधुरंधरपरमसुशीला ॥ ज्योतिकला चहुँओर विराजै ॥ जगमगकाननकुंडलछाजै ॥ नीलवर्णछविहयअसवारी ॥ ज्ञाननिधानधर्मव्रत धारी ॥ परमपुनीतआदितअविनासी ॥ अजसुअ-नादिसकलघटवासी ॥ जासुकथामैंकरौंबखाना ॥ सोपूरणहैअग्निसमाना ॥ महिमाआदित अगम अपारा ॥ तीनहुँलोकज्योतिउजियारा ॥ दोहा ॥ आदितकथापुनीतहै, गावहिं शम्भुसुजान ॥ तीन लोकछबिउदितहै, करहिंप्रतापबखान ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाआदित्यप्रतापा ॥ वर्णों विमलजासुमैंजापा ॥ नाथसकलतमसुनहुभवानी ॥

कहौंपुनीतकथाशुभवानी ॥ गिरिजासुनहुकथा मनलाई ॥ मैंतोहिंअर्थकहौंसमुझाई ॥ बांझसुनेइकमासपुराना ॥ मनवचकर्मसुचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसोंकरैअहारा ॥ द्वादशवर्तकरैइतवारा ॥ कुशाबिछाइकरैबिश्रामा ॥ हर्षितलेइसूर्यकोनामा ॥ इतनीटेकधरैतियजबहीं ॥ होहिंदयालुदयानिधितबहीं ॥ वृथावचनभाषौंनहिंतोहीं ॥ मनवचकर्मजोपूछौमोहीं ॥ निश्चयतबप्रसन्नबलवाना ॥ पाँचपुत्रहोइँअग्निसमाना ॥ तिनसोंजीतिसकैनहिंकोई ॥ विद्यावंतगुणीबड़होई ॥ दोहा ॥ बाँझकथामनलाइकै, टेकधरैव्रतध्यान ॥ निश्चय होवैं पाँचसुत, योधाअग्निसमान ॥ ४ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे बाँझपुत्रपावनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथाहैअमृतवानी ॥ मनसुस्थिर करिसुनहुभवानी ॥ कुष्ठवर्णहोइजाकरअंगा ॥

सोयहकथाकरैसुप्रसंगा॥रविदिनभोजनकरैअला
ना॥पुष्पसुवासचढावैदोना॥विप्रबुलाइकैहोम
करावै॥ वहीभस्मलेअंगलगावै॥ निश्चयकुष्ठ
कर्महुटिजाई ॥ धनि महिमा है सूर्यगुसांई॥
दोहा ॥ जाकाअंगसकुष्ठहो, सोयहसुनैपुराण॥
निश्चयसूर्यप्रतापते, पावैकायादान॥ १॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कुष्ठिकायादानपावनो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

चौपाई॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई॥ मनवच
कर्मसुनहुचितलाई॥ जाकेवर्णअंगमहँहोई॥
स्थिरकथापढैनरसोई॥जाकोगाढपरैअतिभारी॥
सोयहकथाकरैअनुसारी॥ पाँचवरतनरकरइतवा
रा॥मनवचकर्मकथाअनुसारा॥ अगरसुचंदनले
पनकरई॥ निशिदिनध्यानसूर्यकरधरई॥निश्चय
वर्णसकलमिटिजाई॥ धनिमहिमाहैसूर्यगुसाँई॥
दोहा॥ जाकेवर्णसुअंगमहँ, सोनितसुनैपुराण॥
धन्यधन्यआदित्यकी, महिमाकरौंबखान॥ १॥

चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई ॥ मनसुस्थिरकरसुनुचितलाई ॥ जोनरहोयअंधदोउलोचन ॥ सो यहकथासुनैदुखमोचन ॥ निशिदिनकरै अलोनअहारा ॥ विविधभाँतिकरनेमअचारा ॥ पीपरतरुतरसुनैपुराना ॥ पावैनयनअंधबलवाना ॥ अंधहुलोचननिश्चयपावै ॥ जोयहकथा सुचितलवलावै ॥ दोहा ॥ अंधालोचनपावही, जोजानैप्रभुएक ॥ पुलकितप्रेमपुनीतमन, धरै कथापरटेक ॥ २ ॥ मनवचकर्मसुप्रीतिदृढ़, भोजनकरैअलोन ॥ रविदिनहर्षितसुचितमन, द्विजहुपचढ़ावैदोन ॥ ३ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे अंधालोचन पावनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौपाई ॥ यात्राकरिनरचलैविदेशा ॥ सोयइपढ़ैपुराणउदेशा ॥ निश्चयतासुसकलसिधहोई ॥ कामभक्तचलिआवैसोई ॥ जाकोगाकृपरैआति

भारी॥ सोयहकथाकरैअनुसारी॥ निश्चयकष्टहु सकलमिटिजाई ॥ धनिमहिमाहैसूर्यगोसाँई॥ दोहा॥ यात्राकरिनरजबचलै, तबयहपढ़ैपुरान॥ निश्चयसकलमनोरथ, पुरवहिंश्रीभगवान॥ १॥ चौपाई॥ सुनहुउमामैंकहौंबुझाई॥ मनवच कर्मसुनहु चितलाई॥ ऐसीमहिमाआदित देवा॥ जासुकरहिंसुरनरमुनिसेवा॥ मेटैंगाढ़-सकलतनुतासू॥ पुलकप्रेमहियहर्षहुलासू॥ दीनानाथनिरंजनसाँई॥ महिमामुखतेवर्णिन जाई॥ जोनरकरैधर्मव्रतदाना॥ सोनतुलैयहि कथा समाना॥ तेजप्रताप वर्णिनहिं जाई॥ सूरजकथापढ़ैमनलाई॥ कहैंशंभुयहकथापु-नीता॥ रविप्रतापतेभयउअजीता॥ दोहा॥ अस महिमाआदित्यकर, वर्णौंप्रेमउछाह॥सुनहुउमाअतिप्रेमसे, प्रभुकीरतिअवगाह॥२॥ चौपाई॥कथा पुनीतकहौंसुभवानी॥कहौंमहातमसुनहुभवानी।

कार्त्तिकचैत्रपुण्यबहुभारी ॥ साजोहिंअर्थसकल नरनारी॥चंदनअगरकपूरकिबाती॥पूजानाथकर- हिंबहुभाँती॥जोउरमनोकामनाराखै।पुलकध्यान धरिसुखतेभाखै॥सोकारजपुरवहिंभगवाना।ऐसेहैं प्रभुज्ञाननिधाना ॥दोहा॥ लीलाअगमअपारहै, कृपासींवबलवान ॥ वर्णहुँकथापुनीतअति, सुनुसुस्थिरधरिध्यान ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सुनहु उमाप्रभुचरितअपारा॥नाथकथावर्णौंविस्तारा॥ सिंहलद्वीपनगरकानाऊँ ॥ तिहिमेंबसहिंपरीक्षि- तराऊ ॥ महापुनीतधर्मउपकारी ॥ तासुभव- नइकसुताकुमारी ॥ सोनितकरैसूर्यकीपूजा ॥ सेवैसूर्यऔरनहिंदूजा ॥ प्रेमसेभक्तिकथामन लावै॥निशिदिनटेकसूर्यजपलावै ॥ इहिकाइक परसंगगुसाँई ॥ सेवैसुरजहिमनचितलाई ॥ तासु भवनप्रभुकरहिंकलेवा॥तीनभुवनपावैंनहिंभेवा॥ एकसमयअसअचरजभयऊ ॥ कन्यासुरसरितीर

हिमवंत ॥ मज्जनकरनलगीसोइबाला॥हृदयवि-
राजतमोतिनमाला ॥ तेहिअन्तरनारदऋषिआ-
ये ॥ ताहिदेखिमुनिनयनछुभाये ॥ ठाढ़भयेमुनि
सुरसरितीरा ॥ लियउछीनकन्याकाचीरा ॥
कन्याजलमेंकरतिपुकारा॥अंबरदीजियऋषेहमा-
रा ॥कहनारदसुनु कन्यामाता ॥ हमसेकरहुएक
संकनाता ॥ सुनुमुनितुम्हरज्ञानबौराई॥ऐसेवच
नकहौकहुँजाई ॥ सोरीकन्यालाखपचीसा॥ऐसो
वचननकहोमुनीशा॥अबविनतीसमसुनहुसुवानी
अंबरदेहुहमहिंमुनिज्ञानी ॥दोहा ॥ नयनवारिजल-
मैंखड़ी,तुमहिंकहौंकरजोर ॥ करिकरुणाकरुणा
यतन,अंबरदीजैमोर॥४॥चौपाई॥जब कन्याबहु
बिनतीलाई॥तेहिक्षणमुनितबगयउलजाई॥अंबर
देमुनिभवनसिधाये॥ तेहिअवसरतहँशंकरआये॥
सोमुनिमुनिहिशापवशकीन्हा ॥ सोआदितसों
कहलेकीन्हा ॥ जहाँकन्यहीमेंअस्नाना॥ मुनिअं-

धरलैगेंअज्ञाना॥ ताहिसमयआयेशिवभोरा॥संग उमाजसचंद्रचकोरा।भक्तिसहितप्रभुनायउँमाथा। पूँछिकुशलतब त्रिभुवननाथा॥ कुशलकहाशिव मनमुसकाई॥बैठेउप्रभुतहँकहासुझाई॥ पूँछाप्रभु- हिंशिवहिंकरजोरी ॥नाथसुनहुइकविनतीमोरी॥ काअपराधकीन्हमुनिभारी॥ सोप्रभुमोसोंकहो विचारी॥ तबप्रभुकहासुनोहोभोरा॥ कन्याश्रा- छितसेवकमोरा॥ सोउसुनामुनिकरअज्ञाना॥दि ष्टिविलोकेमनकरिध्याना॥ यहकारणमुनिशापजो दयऊ॥ तेहितेअंगवर्णमुनिभयऊ॥ इतनासुनि मनशिवमुसकाने॥ दिष्टभुलानेउमनअज्ञाने॥ सुनतवचनक्रोधितमनभयऊ॥कन्यासहतबमुनि पहँगयऊ॥ दोहा॥ मुनिसोंकहावचनतब, क्रोध कियेमनलाइ॥ जसकौतुकतुमकीन्हेऊ, मोहिं कहहुसमुझाइ॥८॥चौपाई॥मुनिकरजोरिसुवचन सुनाये॥ धरिपदकमलसूर्यगुणगाये॥ कहमुनिप्र

सुतसुजाततहमारी ॥ सोसोंचूकभईअतिभारी ॥ यं
हअपराधक्षमहुप्रभुमोरा ॥ विनवौंनाथदोउकरजो
रा ॥ तवप्रभुकहासुनहुममवानी ॥ इहाँकेलोगस
कलगुरुज्ञानी ॥ तातेमुनिसमलेहुजुशापा ॥ जस
कीन्हेउतसभुगतहुपापा ॥ दोहा ॥ तीनभुवनके
स्वामिहैं, ज्योतिकीन्हपरकाश ॥ हर्षिकथाजो
गाइहै, लहैसोरविढिगवास ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे राजापरीक्षितकन्या
नारदशापदेनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ चंपापुरइकनगरकनाऊँ ॥हलधरविप्रनृ-
पतिवहिठाऊँ ॥नगरवसैमानहुकैलासा॥धर्मकथा
तहँहोइप्रकाशा ॥ पूजासूर्यकरैदिनराती ॥ निशि
दिनटेकधरैबहुभाँती ॥ अग्निकोटचारौदिशितहाँ
श्रीसुरजकोआश्रमजहाँ ॥ तहाँतड़ागअखंडसुहा-
वा ॥चारौंघाटसुवर्णबँधावा॥तहाँ थंभइकबड़ावि
शाला ॥सौयोजनसोरहेउपताला ॥ सोहिथंभआ

दितकरवासा॥प्रातहिथंभसोलागुअकासा॥यहि
विधिआदितआवहिंजाहीं॥कथापुनीतसुनहुमन
माहीं॥मैंतोहिंअर्थकहौंसमुझाई॥आदितकथाप
ढेमनलाई॥ दोहा॥ धनिआदितपरमेश्वर,महि-
माअगमअपार॥ तीनभुवनतमभागई, भयेसक
लउजियार॥१॥ कुष्ठीध्यानजुलावही,पावैकाया
दान॥असप्रभुअंतर्यामी,कृपाकरहिंभगवान॥२॥
कपटछोड़िमनलावही, मनवचकर्मऽनुराग॥ सुर
जनसनअस्तुतिकरहिं, प्रसवहोइबड़भाग॥ ३॥
सबगुणआगरशीलसो,जगमहँरूपनिधान॥ मन
वचकर्मतेहर्षित,सज्जनकरहिंबखान॥४॥ चौपाई
गिरिजासुनहुकथामनलाई॥ पूरबदिशिजहँ उग-
हिंगोसाँई॥ ताहिदिशाइकश्रीपुरदेशा॥ तहँके
राजारूपमहेशा॥करैसदाआदितकीपूजा॥वहिस
मानकोउभक्तनदूजा॥यहिविधिसकलनगरउजि-
यारा॥ तहाँशैलइकबड़विस्तारा॥ सहसकोश

पर्वतपरमाना ॥ तहाँबसहिंआदितबलवाना ॥ दोइ पहरतहँकरहिंनिवासा ॥ फिरिपश्चिमदिशिभ्रमहुलासा ॥ मनवचकर्मकथागुणगाई ॥ सूर्य्यचरितमैं तुमहिंसुनाई ॥ सुनिगिरिजाचकितभइवानी ॥ तेजप्रतापसुनतहरषानी ॥ धनिआदितजिनकैयहलीला ॥ धर्मधुरंधरपरमसुशीला ॥ जोनरकथासूर्यकी गावै ॥ चढिविमानबैकुंठसिधावै ॥ सूर्यकथाहैअंमृतसानी ॥ अस्तुतिहर्षितकरहिंबखानी ॥ छंद ॥ तुमप्रभुस्वामीअंतर्यामीज्योतिकलाछबिउदितमहा ॥ रूपनिधानाश्रीभगवाना करहुकृपा हमअधमसहा ॥ छबिज्योतिविराजैकुंडलछाजे तवप्रतापहै त्रयभुवना ॥ महिमाप्रभुतोरीहृदयधरोरीलेतनाम पातकहरना ॥ चौपाई ॥ गिरिजाकहैदोउकरजोरे ॥ इक संदेहऔरमनमोरे ॥ उत्तरदिशिकहँउगहिंगुसाँई ॥ सोमोहिंनाथकहौसमुझाई ॥ कहनलगेशिवकथा रसाला ॥ जेहिविधिउत्तरउगहिंकृपाला ॥ उत्तरदि

शिकरकथाकहानीम॥नसुस्थिरकरसुनहुभवानी॥
तहाँशैलइकबडविस्तारा।सौयोजनसोउच्चपहारा॥
झंपेभानुकिरणिनहिंपावै॥यहिविधिपुरअँधिया-
रतनावै॥ तहाँवासकलिजुगकरहोई ॥ तबसों
पापमलिछहोयसोई ॥ यहिविधिकबहुँनऊगहिं
भानू ॥ मैंतोहिंअर्थकहौंपरमानू ॥ एकसमय
अचरजअसभयऊ॥नारदमुनितहँवाँचलिगयऊ॥
देखानगरसकलअँधियारा ॥ धर्मकथाकरनाद
विसारा॥फिरिफिरिनगरसकलमुनिदेखा॥पाप
सिवायऔरनहिंलेखा ॥ मनमेंनारदकरहिंविचा
रा॥आयेकहांनगरअँधियारा॥असकहिनारद
कोपेउजबहीं ॥ नगरहिशापदीन्हमुनितबहीं॥
कुष्ठीहोउसकलनरनारी ॥ धर्मकथाकरनामविसा
री॥कुष्ठवर्णभेसबकेअंगा ॥ आठौंवदनसकल
तनुभंगा॥कोउनरहाकुष्ठसनबाँचा॥सबकेकुष्ठ
वर्णभासांचा॥व्याकुलभयेतहांनररनारी॥त्राहि

ऋाकरतबहिंमुकारी ॥ शापितकारिंसूरजपहँआ
ये ॥ उत्तरदिशिकरअर्थजनाये॥सुनतकथाआदि
तमुखकाने ॥ कहांगयेमुनिउतरमुलाने ॥ शापि
तकारि उत्तर कहँआये ॥ अब हमरे पहँ बात
जनाये ॥अबैकहहु मुनि पूछौं तोहीं ॥ विप्रशाप
कबछूटैओहीं ।कहनलगेमुनिनारदजबहीं॥अंगवर्ण
मुनिदेखातबहीं॥अंगवर्णमुनिदेखाकैसा॥मानहुहं
ससरोवरवैसा ॥ थकितभयेसबमुनिकेअंगा॥निक
सेवर्णसकलतनुभंगा॥तनुसहँकुष्ठजोमुनिकेभयऊ।
व्याकुलहोयसूर्यसनकहेऊ ॥ हेप्रभुअबमैंपूछौंतो
हीं ॥ केतेअंगवर्णरहैसोहीं ॥ कृपासिंधुप्रभुपरम
अगाधा ॥ वर्णभयोतनुकेहिअपराधा ॥ सोमोहि
नाथकहौसमुझाई ॥ जेहितेअंगवर्णमिटिजाई ॥
तबप्रभुकहासुनहुमयवानी ॥ वहाँकेलोगसकलमु
रुज्ञानी॥सबकहँशापदीन्हतुमभारी ॥ व्याकुलभ
येसकलनरनारी॥सबकरअंगभंगतुमकीन्हा॥उत्त

रजाइशापतुमदीन्हा ॥ दोहा ॥ अबमैंकहिहौंतुम हिंसन,कथापुनीतअसंग ॥ शापअनुग्रहकरहुतौ, वर्णमिटैतवअंग ॥५॥ चौपाई॥ नीकवचननारद मनमाना ॥ उत्तरदिशिकरकीन्हपयाना॥ द्वादश दिनमहँउत्तरगयऊ ॥ नगरशापमेटनमनदयऊ ॥ दोहा ॥ नारदउत्तरजाइकै, शापअनुग्रहकीन्ह ॥ तेजप्रतापादित्यकर, हर्षितवर्णैलीन्ह ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेनारदशापवर्णनो नामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

चौपाई ॥ असकहिमुनिआदितपहँआये ॥ उत्तर दिशिकीकथासुनाये ॥शापअनुग्रहकीन्हगुसाँई ॥ धनिप्रतापतववर्णिनजाई ॥ असमुनिआदितहर्षि तभयऊ ॥ दयालागितबमुनिसोंकहेऊ ॥ अबज निऐसेभर्मभुलाहू ॥ आशिर्वादलेहुघरजाहू ॥भई कृपामुनिपरबहुभारी॥ वर्णिनजाइज्योतिअधिका री॥विदाहुयेमुनिगृहकोआये ॥ हर्षितहुयेसूर्यगुण

गावे॥हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ धन्यसूर्यकहिस बहिंपुकारी॥ धनिआदितकायाकेराजा ॥ जाकि ज्योतित्रिभुँओरविराजा ॥ कोटिविप्रतहँनेवतिपठा वा॥अस्तुतिनारदसूर्यकीगावा ।अश्वमेधकरनेमुनि लागे ॥ तीनभुवनकेदारिदभागे ॥ सबकहँनारदने वतपठाये॥रथचढिदेवतहाँसबआये ॥ ब्रह्माविष्णु आदित्रिपुरारी॥आयेसकलसहितसुतनारी ॥ बहु प्रकारमुनिसबहिंजिवांये ॥ हर्षितहोयसूर्यगुणगा ये ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ ब्राह्मणवेदपढैंजय कारी ॥ चंदनअक्षतपानपकवाना ॥ पूजाकरहिं धरहिंमुनिध्याना॥हर्षितहोयसूर्य्यगुणगावैं ॥ ता लपखावजशंखबजावैं ॥दोहा॥ यज्ञकीन्हमुनिना रद, शोभावर्णिनजाइ ॥ तैंतिसकोटीदेवतहँ,हर्षि कथागुणगाइ ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणे नारदयज्ञशो भावर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चौपाई ॥ जोनरधरैकथापरध्याना॥ ताकरहो
यपरमकल्याना॥ जोयहकथापढैमनलाई ॥ ताप
रआदितहोयँसहाई ॥ धनिप्रतापआदितबल
वाना ॥ तेजप्रतापतुअग्निसमाना ॥ दोहा ॥
गिरिजापूँछेशम्भुसन, सूर्यचरितमनलाइ ॥
दक्षिणदिशिकहँकगहीं, नाथकहोसमुझाइ ॥
॥ १ ॥ चौपाई ॥ कहैंशम्भुसुनुशैल
कुमारी ॥ सूर्यचरितमैंकहौंविचारी ॥ कहनल-
गेशिवकथाबुझाई ॥ जेहिविधिदक्षिणडगरीं
गुसाँई ॥ दक्षिणदिशिइकनगरअनूपा ॥ जेसल
विप्रतहाँकेभूपा ॥ हर्षितभजनकरैदिनराती ॥
जहाँरहैंआदितबहुभाँती ॥ यहिविधिप्रभुकर
ज्योतिविराजे ॥ अनहदनादघंटध्वनिबाजे ॥
तैंतिसकोटिदेवतातहाँ ॥ जगन्नाथकोआश्रम
जहाँ ॥ दक्षिणदिशिमेंकाशिप्रयागा ॥ तहाँ
अहैयकविमलतड़ागा ॥ तहँबलभद्र सुभद्रा

संगा ॥ जहाँबसहिंश्रीसुरसरिगंगा ॥ कृपा सिंधुप्रभुपरमअगाधा ॥ निशिदिन भजन करैंअवराधा ॥ दोहा ॥ दक्षिणदिशाधुनी-तहै, सुनहुउमाचितलाइ ॥ आगिलचरितजुहोइ है, सो मैंकहौंबुझाइ ॥ चौपाई कलियुगअन्त होइजबजैहै ॥ मानुषकोतनुमानुषखैहै ॥ तव प्रभु लेअवतारकलंकी ॥ मानुषतबहोइहैंनिकलंकी ॥ दक्षिणदिशिरविजाहिंजाई ॥ आगिलअर्थ कहौंसमुझाई ॥ धर्मकथाचलिहैंबहुभाँती ॥ नेम धर्मकरिहैंदिनराती ॥ विप्रजिवांयआपतबजेइहैं॥ निश्चयमनासूर्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मीघरघरकरहिंनि-वासा ॥ धर्मकथातहँहोइप्रकासा ॥ वृथावचनकोइनहिंभाषै ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपरराखै ॥ धर्मविचारसूर्यतहँकरिहैं ॥ द्वादशकलाज्योतिले धरिहैं ॥ दोहा ॥ द्वादशकलासेजगिहैं, आदि-

ततबहींआइ ॥ पूर्वजन्मकेपातकै, कथापढत छयजाइ ॥ चौपाई ॥ आगिलअर्थप्रभुटेकि सुनावा ॥ सुनिगिरिजाकेमनअतिभावा ॥ मग्नभईसुनिशिवकीवानी ॥ हर्षिसूर्यगुण करहिबखानी ॥ तीनिभुवनजेहिनावैमाथा ॥ सोप्रभुनाथअनाथकोनाथा ॥ जोयहकथापढैमन लाई ॥ बाढैधर्मपापक्षयजाई ॥ दोहा ॥ जोयह कथामनलाइकै, टेकैधरैव्रतध्यान ॥ जोइच्छा करिपढैनर, सो पुरवहिंभगवान ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कलंकीअवतार वर्णनो नामसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

अथ व्रतविधानप्रारंभः ।

चौपाई ॥ कार्तिकमासजोप्राणीरहई ॥ तीनप त्रतुलसीदललहई ॥ अगहनमासध्यानजोधरई ॥ शक्करचाटिकेभोजनकरई।पूसमासजोप्राणीरहई ॥

तीनदूबकेभोजनकरई॥माघमासकरसुनहुविचारा
तिलखडाकोकरैअहारा ॥ फाल्गुनमासजोयहिवि
धिरहई। दहिखंडीकेढिगहोरहई॥ चैत्रमासकोसुन
हुविचारा॥ घृतगंडूषधारिकरैअहारा॥ वैशाखमा
सजोप्राणीरहई॥ आमिलतासचाटिसोरहई॥ ज्ये
ष्ठमासकरसुनहुविचारा॥तीनअंजलिजलकरैअहा
रा॥ आषाढमासजोप्राणीरहई ॥ तीनमिरचको
भोजनकरई॥सावनमासयहीव्यवहारा ॥कपिला
मूत्रगंडूषअहारा ॥ भादौंमासजोयहिविधिरहई॥
गोबरखंडिकेढिगहोरहई ॥ क्वारमासकोसुनहु
विचारा॥ चंदनखंडिकेकरैअहारा॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे व्रतमाहात्म्यं समाप्तम्।
इति सूर्यपुराणं समाप्तम्।

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ गणेशपुराण प्रारम्भः ।

दोहा-एकरदनगजवदनके, पगवंदौंकरजोरि ॥ कृपाकरहुशिवनंदन, बुद्धिबढ़ैजेहिमोरि॥ १॥ व्यासआदिनरपुंगव, नारदआदिमुनीश ॥ दिनकरब्रह्माशेषगुरु, सबकहँनावोंशीश ॥ २ ॥ चौपाई ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ सुनोस्वामितुममदनगोपाला ॥ सदाकरौसंतनप्रतिपाला ॥ विपतिहमारिविलोकहुस्वामी ॥ कृपासिंधुउरअंतर्यामी॥ छलकीन्होंदुर्योधनराजा॥जीतिलीन्हममराज्यसमाजा॥ वनहिंनिकारिदीन्हदुखदाई ॥ कानचफिरौंदुसहदु

खपाई ॥ तेहितेंप्रभुविनवौंकरजोरी ॥ केहिविधि पावौंराज्यबहोरी ॥ कृष्णकहासुनुवचननरेशा ॥ तुवहितलागिकहौंउपदेशा ॥ पूजोगणपतिमनचित लाई ॥ तेहिपूजेसबदुखमिटिजाई ॥ विघ्नहरन हैजाकरनामा ॥ तेहिपूजेपैहौविश्रामा ॥ दोहा ॥ कृष्णवचनसुनिधर्मसुत, बोलेपदशिरनाइ ॥ गणपतिकवनसुनाथहैं, सोमोहिंकहौबुझाइ ॥३॥ चौपाई ॥ सुनौभूपपरमारथवादी ॥ गणनायकहैं देवअनादी ॥ शिवकोतनयविदितत्रैलोका ॥ तिन्हैंपूजिजगहोइविशोका ॥ सुनिकहधर्मतनय करजोरी ॥ नाथसुनोइकविनतिमोरी ॥ गणपति आदिदेवतुमकहेऊ ॥ शंभुतनयकेहिभाँतिसोभयऊ यहसबुझाइकहोयदुनाथा ॥ बारबारनावौंपदमा था ॥ हँसिकहकृष्णसुनोतुमभूपा ॥ गणनायककीक थाअनूपा ॥ आदिदेवकोउपारनपावैं ॥ वेदपुराण मुनिजनगावैं ॥ आदिकल्पतेजमनिहार ॥

तबतेंगणपतिपूजिप्रुवारा ॥ दोहा ॥ तीनलोक सबपूजते, सुरनरआतमशेष ॥ शंभुतनयजेहि भाँतिभो, सोअबसुनोनरेश ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ एकसमयगिरिवरकैलाशा ॥ सहितउमाशिवकरत विलासा ॥ कारिकछुरामकथागुणगाना ॥ महादेवतबगेअसनाना ॥ बैठीगिरिजासदनसुहाये ॥ ताहिसमयनारदऋषिआये ॥ उठिके उमाविनयबडिकीन्हा ॥ आसनदैचरणोदकलीन्हा॥धन्यभाग्यहैआजुहमारा ॥ कृपाकीन्हमुनि शापगुधारा ॥ केहिकारणआगमनतुम्हारा ॥ कहौऋषीश्वरकरतविचारा ॥ तबबोलेनारदमृदुवानी ॥ वचनएकममसुनहुभवानी ॥ दोहा ॥ बहुदिनबीतेब्रह्मपुर, मनमहँभयेउदास ॥ शिवदरशनकेकारणे, चलिआयोकैलास॥५॥ चौपाई ॥ शंभुकहांगयेशैलकुमारी ॥ सोतुमहमसोंकहोविचारी ॥ बोलीवचनउमाहितकारी ॥ मज्जनकरन

गयेत्रिपुरारी ॥ तबनारदबोलेमृदुबानी॥सुनौएक आचरणभवानी ॥ नरशिरमालशम्भुउरजेऊ ॥ तुमजानहुतिन्हकरंकछुभेऊ॥ उमाकहाप्रभुमैंनहिं जानों ॥ मिथ्यातुमसोंकहाबखानों ॥ तबनारद कहवचनरसाला ॥ तुम्हरेशिरकेहैंजयमाला ॥ तुमसोंशिवकछुअंतरराखा ॥ जोयहकथाकबहुँ नहिंभाषा ॥ जबआवैंशिवकरिअस्नाना ॥ तब तुमपूंछेउसकलविधाना ॥दोहा॥ असकहिनारद नाइशिर,चलेभवनहर्षाइ ॥ मुनिवरकेरेवचनसु- नि, बैठिउमाबिलखाइ ॥ ६ ॥चौपाई ॥ यहिअं तरशंकरचलिआये ॥ देखीउमाविषादबढाये ॥ तबशंकरबोलेमृदुबानी ॥ केहिकारणदुखकीन्हभ वानी ॥ उमाकहाशिवपदशिरनाई ॥ संशयएक अहैमनमाहीं ॥ तुम्हरेहृदयमुंडकीमाला ॥ सोके हिकेशिरआहिकृपाला ॥ तबशंकरबोले मुस काई ॥ कौनेतुम्हरीमतिभरमाई ॥ मुण्डमालमम

हृयमनानी ॥ कथातासुकीसुनोसयानी ॥ जब
जबजन्मतुम्हारोहोई ॥ रामकृपासोंव्याहौंसोई ॥
सम्यपाइजोत्यागहुदेहा ॥ तबतुमशिरकेमालजु
एहा ॥ दोहा ॥जितनेजन्मतुम्हारिभे, देहतजेकारि
भोग ॥ तबतवशिरकेमालकिय, प्रियातुम्हारे
सोग ॥७॥ यहसुनिगिरिजावचनउचारी ॥ सुनहु
बचनममनाथपुरारी ॥तुवअवतारभयोप्रभुएका॥
काविकारममजन्मअनेका ॥ मोरेमनप्रभुभयउ
अँदेशा ॥ सोसमस्तमोंहिंकहौमहेशा ॥ तब
शंकरकहगिरासुनाई ॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघु-
राई ॥बीजमंत्ररघुनायककेरा ॥ सोममहृदये
करतबसेरा ॥ तातेमोरहोइनहिंनाशा ॥ बीज
मंत्रदियअल्पप्रकाशा ॥ बीजमंत्रतुमजानति
नाहीं ॥ तातेजन्मधरेविपुलाहीं ॥ तबगिरिजाबो
लीकरजोरी ॥ विश्वनाथसुनुविनतीमोरी ॥ दासी
जानिकृपाअबकीजै ॥ बीजमंत्रमहूंकोदीजै ॥

दोहा ॥ शंकरबोलेवचनतब, सुनहुउमाममबानि ॥ विपुलजीवबसशैलपर, केहिविधिकहौंबखानि ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ जोयहमंत्रसुनेकोइपावै ॥ ताकेकालनिकटनहिंआवै ॥ अजरअमरसोहोइभवानी ॥ तातेकेहिविधिकहौंबखानी॥तबगिरिजाकहगिरासुहाई ॥ देहुजीवप्रभुसकलभगाई ॥ तबशंकरचितयेकरिक्रोधा॥ भागेजीवसकलचहुँरोधा ॥ ॥ आदिपिपीलजहांतहँजाई ॥ सर्वजीवउडिचलेपराई ॥ जीवरहितगिरिदेखिकृपाला ॥ बैठिबिछाइनागरिपुछाला ॥ जेहितरुतरबैठेसुरनाहा ॥ तहँवसिकीरदीनयकराहा ॥ दोहा ॥ तेहिमेंअंडाएकधारे, कीरसोगयोउडाइ॥ जोभावीसोनामिटै, सुनोयुधिष्ठिरराइ ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ बीजमंत्रशिवउमहिंसुनावा ॥ अंडजीवसुनिकेचितलावा॥कहतसुनतअंडासुखभयऊ ॥ बारहवर्षबीतितबगयऊ ॥ जोजोमंत्रउमहिंशिव

दीन्हा ॥ सोसोसबअंडजसुनिलीन्हा ॥ द्वादश वर्षजुगयेसिराई ॥माताकहँआईअलसाई ॥ सो वतजानिगिरीशकुमारी॥तबतेकीरदीन्हहुंकारी॥ यहिअंतरकहिकथासिरानी ॥ उमाजगाइकहा शिववानी ॥ जहँलगिसुनाकहौसबगाई ॥ अंतर लखिशिवकहाबुझाई ॥ कथापुनीतहमकहाबखा नी ॥ हुंकारीकोदीन्हभवानी ॥ उमाकहाप्रभु मैंगइसोई ॥ देखहुनाथजीवकोहोई ॥ तबशंकर चितयेधरिध्याना ॥ सुनाबीजखगकीरनिधाना ॥ करत्रिशूललैउठेरिसाई ॥ कीरदेखिउड़िचलोपराई ॥ भागोखगव्याकुलअतिसोका ॥ भरमतफिरै सकलत्रैयलोका ॥ जहँ जहँ खगशरणागतभाषा ॥ शिवद्रोहीकाहूनहिंराखा ॥ दोहा ॥ पाछेशिवधा वतफिरे,कियेक्रोधदुखमूल ॥ जोभावीसोनामिटै, छूटैनाहिंत्रिशूल ॥ १० ॥ चौपाई ॥ जबअति कीरविकलमनभयऊ ॥ उड़तउड़तव्यासाश्रमग

यऊ ॥ व्यासनारीतेहिसमयसुवारा॥ऋतुमज्जनक रिसूर्यनिहारा ॥ ताहिसमयआईजसुहाई ॥ वदन मंथस्वगगयउसमाई ॥ पाछेशंभुपहुँचेजाई ॥भयदे खाइत्रियसाथनआई ॥ कहैंशंभुसुनुऋषिकीनारी॥ चोरहमारोदेहुनिकारी ॥ सुनित्रियकहैनाथनहिं जानों ॥ कहाँचोरसैंकहाबखानों ॥ तबहींबोले शंभुसुजाना ॥ उदरतुम्हारेचोरसमाना ॥ दोहा ॥ देनिकारिरिपुमोरहै, करौवचनविश्वास ॥ नहिंतो अबहींमुनित्रिया, करौंतुम्हारोनाश ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरैव्यासऋषिआये ॥ देखि शंभुपदशीशनवाये ॥ समाचारसुनिकहेमुनीशा॥ वचनहमारसुनोजगदीशा ॥ त्रियाजानिप्रभु क्षमाकीजै ॥ बालकहोयसोआपहिलीजै ॥ मुनिकेवचनसुनतअतिहेतू ॥ भयेप्रसन्नतवेवृष केतू ॥ तवमुनिसोंहँसिकहेमहेसू ॥ दीनप्रसन्न होहहमदेसू ॥ होईपुत्रऋषिकुलकी ॥

तासु चरित्र तिहूँपुरजानी ॥ हाथजोरि मुनि विनतीकीन्हा ॥ भयेप्रसन्नशंभुवरदीन्हा ॥ वरदै शंभुगयेकैलासा ॥ मुनिहिपुत्रकीउपजीआसा ॥ दोहा ॥ पूरेदिनबालकभयो,शुकतेसुनहुभुवाल ॥ शुकाचार्यअसनामतेहि,राखेउव्यासकृपाल १२॥ चौपाई ॥ इहाँशंभुआयेकैलासा ॥ बैठेहृदय लागिअतित्रासा ॥ देखतशिवाक्रोधभोभारी ॥ तबहिंउमासोंकहाविचारी ॥ तुम्हरेसंगनकाज हमारा ॥ जाहु जहाँ मनरुचैतुम्हारा ॥ तब गिरिजाशिवआयसुपाई ॥ उठिकै चलीचरण शिरनाई ॥ शिवशिवभाषतउरअभिलाखा ॥ गईजहाँतहँपुत्रविसाखा ॥ मातालखिशुहकी न्हप्रणामा ॥ कहुजननीआईकेहिकामा ॥ सब प्रभावजबउमासुनावा ॥ षट्मुखहृदयशोचतब आवा ॥ करिविचारबोलेसुनुमाता ॥ राखौं इहाँक्रोधकरताता ॥ पितावचनमोहिंमेटिनजाई॥

कठिनकर्मकीन्हेतुमभाई ॥ दोहा ॥ शिवप्रसाद कोसमुझिकै, कहीषडाननबात ॥ मातुतपस्या करहुतुम, सिद्धिकरहिंगेतात ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ सुतकेवचनसुनतमनभाई ॥ उमाचलीकि ष्किंधहिआई ॥ तेहिगिरिपरइकगुहासुहाई ॥ तहाँजायसोतपनलभाई ॥ यहिविधिकालबीति कछुगयऊ ॥ सुनोभूपआगेजसभयऊ ॥ एक समयनिजदेहनिहारी ॥ उबटनकियगिरिराजकु मारी॥तनुकरमैलजुछूटअपारा ।सोउठायमनकीन्ह विचारा ॥ बालकरचिकीन्हेउहरिध्याना ॥ तनुमहजीवकरोभगवाना ॥ हरिइच्छासोभये नरेशा ॥ गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा ॥ तनय शीशकरपरशेउजबहीं ॥ कीन्हसजीवरमापति तबहीं ॥ दोहा ॥ तनयसजीवनदेखिकै, मन आनँदतबकीन्ह ॥ अतिज्ञानीसुतहोहुतुम, माता आशिषदीन्ह ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ सुतसोंबोली

वचनभवानी ॥ सुनोतातमानोममवानी ॥ गुफा द्वारधरिबैठहुजाई ॥ हमयहँकरिशिवतपमन लाई ॥ भीतरआननपावैकोई ॥ जोहमकहैं सुनौसुतसोई ॥ बालकबैठद्वारपरआई ॥ उमा करततपशिवमनलाई ॥ यहिविधिबीतिगयेकछु काला ॥ आगेसुनोकथानरपाला ॥ जबतेउमा शंभुकहँत्यागी ॥ बैठिसमाधिअधिकअनुरागी ॥ आसनडिगोशंभुतबजागे ॥ मनअनुमानकरन तबलागे ॥ कहाँगईधौंशैलकुमारी ॥ तनुकिजीव विनुभयेदुखारी ॥ दोहा ॥ गिरिजाहेरनकारणे, शंभुगयेतजिधाम ॥ वनमहँगिरिखोजतफिरे,मन नलहैविश्राम ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ षड़जनाम पहँगयेमहेशा ॥ बाढोहर्षविषादअँदेशा ॥ दंड प्रणामपुत्रजबकीन्हा ॥ आशिर्वादतबैशिवदीन्हा तबशंकरबोलेमृदुवानी ॥ दीखतातातुमकतहुँ भवानी ॥ अहोतातमैंसुनानभाषों ॥ तुमबिनुआ

थसुकिमिकरिराखी॥ गईविपिनतपकरनगोसाँई॥ सुस्थलनाजानोंमाताई ॥ सुनिशंकरसँगतनयल गाई॥ खोजतचलेविपिनसमुदाई॥यद्यपिशिवजा नतसबबाता ॥ हरिइच्छाराखतसुरत्राता ॥ खोजतकतहुँउमेनहिंपावा ॥ तबशिवहृदयक्रोध होइआवा ॥ दोहा ॥ डमरूपटकेउभूमि पर, तीनलोकअकुलान ॥ धेनुरूपहोइधर णितब, विनयकीनबहुआन॥ १६ ॥ चौपाई ॥ कौनभाँतिमैंप्रभुकिउँसेवा ॥ तेहितेक्रोधकीन्हतुम देवा ॥ शंकरकहेउधरणिसमुझाई ॥ शैलसुता कहँदेउबताई ॥ तबधरणीबोलीमृदुवानी ॥ किष्किंधागिरिबसैभवानी ॥ सुनिशंकरसँगत नयलगाई ॥ खोजतचलेविपिनसमुदाई ॥ गुफामध्यइकदेखिकुमारा ॥ शिवपूछातिहिंवचन उचारा॥गुफामध्यहैमातुहमारी ॥ करतितपस्या शिवअधिकारी ॥ यहसुनिपैठिचलेत्रिपुरारी ॥

बालकदेखिक्रोधभयोभारी ॥ दोहा ॥ गुफाद्वार धरिठाढभे, करगहिशक्तिहिजोहि ॥ विनामातु कीआयसू, जाननदेहौंतोहि ॥ चौपाई ॥ यहसु निपेलिचलेप्रियपाहीं ॥ बालककोपकीन्हमनमा हीं ॥ क्रोधवंतसुतगरजाभारी ॥ शिवपरतीक्षण शक्तिपवारी॥आवतशक्तिदेखिखरधारा।तेजशक्ति सोंकाटिनिवारा ॥ लखिशंकरशरतेजअपारा ॥ बालकधनुषकाटिशिवडारा ॥ मातुसुन्योमारेसब बारा ॥ गुफासोंनिकसीशक्तिअपारा ॥ मारत तनयनमानतहारी॥क्रोधवंततबभेत्रिपुरारी ॥ जौ लोंशिवशिशुहतैप्रचारी ॥ तौलोंशिवयहयुक्तिवि चारी ॥ देखायुद्धभयंकरनाना ॥ कोपेशिवभये अनलसमाना ॥ गहित्रिशूलतेहिनाथप्रचंडा ॥ छड़िगामाथपराअखंडा ॥ यहिविधिबालकमारे महेशा ॥ तनयसमेतगुफायेंपेशा ॥ जबहींउमा शंभुकहँदेखा ॥ इकटकभईतबप्रीतिविशेखा ॥

दोहा ॥ आसनदैपदपखरगहि, चरणोदकलव लीन्ह ॥ शंभुबैठिशुचिआसनै, बहुविधिआशिष दीन्ह ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ उमाशंभुसनकह मृदुबानी ॥ सुनोनाथतुमसबसुखखानी ॥ सुफा द्वारशिशुहमबैठाये॥तासोंकेहिविधिआवनपाये॥ सुनतवचनतबबोलेशंकर ॥ तिनसोंकीन्होंसमर भयंकर ॥ विषमयुद्धतिन्हहमसनकीन्हा ॥ ताको मारियहांपगदीन्हा ॥ सुनिगिरिजाउठिबाहर आई ॥ सुतलखितुरतपरीमुरझाई ॥ सुनो नाथयहतनयहमारा ॥ जेहिविधिजियेसोकरौ विचारा ॥ तबपूछाशिवउमहिंपुकारा ॥ केहि प्रकारभातनयतुम्हारा ॥ दोहा ॥ शंभुवचन सुनिपार्वती, जोरिपाणिशिरनाइ ॥ जेहिविधि उपजोबालवर, सकलकहीसमुझाइ ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ सुनिशंकरबोलेमृदुबानी ॥ बिनासा पूछिबिनजियेभवानी॥कोबिलखाशिरशूलप्रचंडा।

उड़िगोमाथपराब्रह्मंडा ॥ बोलीउमासुनोमम
बानी ॥ कृपासिंधुउरअन्तरज्ञानी ॥ आजुकोभ
योतनयजहँहोई ॥ मातापीठीदैकरसोई ॥ तेहिबा
लककामाथमँगावहु ॥ कृपाकरौममतनयजिया
वहु ॥ तबशिवदूतनलीन्हबुलाई ॥ सकलकथा
कहितिन्हैंसुनाई ॥ आजुकोभयोतनयलैआवहु ॥
जननीपीठिदियेजहँपावहु ॥ सोसुनिदूतदशोदि
शिधाये ॥ हेरिखोजिपुनिशिवपहँआये ॥दोहा॥
कहैंशंभुसनजोरिकर, सकलदूतशिरनाइ ॥ तेहि
प्रकारकाबालकै, हेरिरहेनहिंपाइ॥२०॥ चौपाई॥
पुनिबोलेगणगिरासुहाई ॥ सुनोनाथकरिनी
यकजाई ॥ सोबालकपाछेहैनाथा ॥ आज्ञाहोयतो
आनौंमाथा ॥ आयसुपाइदूतबहुधाये ॥ करिसु
तमाथकाटिलेआये ॥ माथलायजोड़ेसोइग्रीवा॥
प्रगटठाढ़भयेहोइसजीवा ॥ पुत्रदेखिमातासुखपा
ये ॥ आशिषदेशिवहृदयलगाये ॥ तनयदेखिसु

खकीन्हभवानी ॥ शंकरसोंबोलीमृदुबानी ॥ कोरें नीकोसुतदेहुजियाई ॥ ऐसेनाथबहुतदुखपाई ॥ तबशिवकिरकिटसाथमँगावा ॥ कृपाकीन्हहरतिन्हैंजियावा॥ दोहा ॥ किरकिटकोआशिषदियो, जियैबिनहि सोशीश ॥ तबगिरिजाप्रस्तुतिकिये, धन्यधन्यजगदीश ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ उमासंग लैदोऊबालक॥चलेजहाँजगकेप्रतिपालक॥पहुँचे हरिपुरसहितसमाजा ॥ तहांविष्णुबैठेसबराजा ॥ तेंतिशसकोटिदेवतहँसोहे ॥ हरिकोरूपदेखमनमोहे॥ शंभुजायपदबंदनकीन्हा ॥ उमासहितचरणोदकलीन्हा ॥ सुरनरमुनिउठिकैकरजोरी ॥ सबपरशिवकेप्रीतिघनेरी ॥ शिवसुत युगलदेखि सुखधामा ॥ परदक्षिणकरिकीन्हप्रणामा ॥ बालकदेखिसुरनसुखपावा ॥ हरिआशिषदैनिकट बुलावा ॥ हरिकेकरमोदकयकरहा ॥ दोउबालक सोंप्रभुहँसिकहा ॥ जोप्रततीनिलोकफिरिआवे ॥

आवैवेगिसोमोदकपावै॥शरजनमातुरतहिशिरना
पा ॥ चढ़िरथवेगवायुसमधावा ॥ दूसरस्तुतियावर
विधिकीन्हा ॥ उठिहरिकैपरदक्षिणदीन्हा॥दोहा॥
देखातबबुधिवंतगण, देवनजयजयकीन्ह ॥ कर
मोदकअतिमोदसों,तेहिबालककोदीन्ह ॥ २२ ॥
चौपाई ॥ यहिअंतरपटमुखचलिआये ॥ हरिके
चरणशीशतिननाये ॥ देखामोदकबालकहाथा ॥
शरजनमाकोपेरणनाथा ॥मोदकलीन्हवदनपरमा
रा॥एकदंतगाटूटिमुवारा॥तबहरिहँसिकहगिरासु
नाई॥षडमुखकहाकीन्हलरिकाई॥वहबालककेक
हेकसजाता॥दांतटूटिगाकायहवाता॥तबगुहकहा
युगलकरजोरी॥ नाथसुनोयकविनतीमोरी ॥ सब
संसारदौरिमैंआवा ॥ बैठरहासोमोदकपावा ॥
हरिकहतुमसोंआगेआवा ॥ तेहिकारणइनमोदक
पावा ॥ यहसुनिगुहबडिशंकाकीन्हा ॥ तबहरिच
रितदिखावैलीन्हा ॥ हँसिकैजबहरिवदनपसारा॥

तीनलोकतबदेखकुमारा ॥ देखिषडाननलज्जि तभयऊ ॥ तबहरिगुहैसंबोधतभयऊ ॥ दोहा ॥ पुनिसबदेवनजोरिकर, प्रभुहिकहासमुझाइ ॥ सो बालककुधिवंतहै, कृपाकरोसुखदाइ ॥ २३ ॥ चौपाई॥ देवगिरासुनिप्रभुमनभाये ॥ तेहिबालक कोनिकटबुलाये ॥ सावधानह्वैसुनहुनरेशा ॥ नामधरोहारिताहिगणेशा ॥ जानागणपतिदेवअ नादी ॥ विधिहरिहरहियआशिर्वादी ॥ पूज्यनि त्यतुमहोहुगणेशा ॥ जोपूजैतेहिमेटुकलेशा ॥ जो मेरेचरणनमनधरई ॥ सोप्रथमहिंतुवपूजाकरई ॥ यहसुनिदेवनजयजयकीन्हा ॥ सुमनवर्षिबहु पूजादीन्हा ॥ स्वामीकार्तिकबडेलजाई ॥ परे चरणगणपतिकेआई ॥ क्षमाकरोगणनाथगुसाँई॥ चूकपरीसोमेटहुभाई॥गणपतिगुहैलाइउरलीन्हा॥ शोचमिटाईआशिषादीन्हा ॥ दोहा ॥ पूजि गणपकरजोरिकै, धारे चरणनशिरनाइ ॥

अस्तुतिकरतअनेकविधि, सुनोयुधिष्ठिरराइ ॥
॥ २४ ॥ चौपाई ॥ तुमत्रैलोकनाथप्रभुएका ॥
मायावशप्रभुजीवअनेका ॥ जेहिकाजसतुम
आयसुदीना ॥ सोतेहिभाँतिरहैलवलीना ॥
जोप्रभुहमपरदयाकरेहू ॥ तौप्रसन्नह्वैयहवरदेहू ॥
प्रथमहिंनाथभक्तितवपाऊँ ॥ पुनिदूसरवर देहु
जोभाऊं॥जोकोइममपूजामनलावै ॥ मनवांछित
फलसोप्रभुपावै ॥ बोलेशम्भुविहँसिमृदुवानी ॥
सुनेहर्षिशिवसतीभवानी ॥ पुनिप्रभुपदवंदन
करिसेवा ॥ निजनिजलोकगये सबदेवा ॥
शंकरप्रभुपदउरमहँराखी ॥ विदाभयेविनती
बहुभाखी ॥ दोहा ॥ गुहगणपतिप्रभुचरणग
हि, चलेआशिषापाइ ॥ गिरिजासहितमहेशतब,
गमनकीन्हहर्षाइ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥
पहुँचेविश्वनाथकैलासा ॥ सुतनसहितशिवपर
महुलासा ॥ कहेउँकथामैंसकलनरेशा ॥ यहिवि

धिसोंशिवतनयगणेशा ॥ पूजैंनितनरसंशिल्प लोका ॥ तिन्हैंपूजिजगहोयविशोका ॥ तेहिदेपू जहुगणपतिराजा ॥ मिलहितोरसवराजसमाजा ॥ यहसुनिधर्मतनयशिरनावा ॥ धन्यकृष्णअहकृपा सुनावा ॥ अबजानेउँगणनाथपुरारी ॥ सुनतकथाऽत्र टादुखभारी ॥ औरौएककालसासोरे ॥ कहौकृष्ण विनवौंकरजोरे ॥ प्रथमहिकेहिपूजागणनाथा ॥ सो सबुझाइकहौयदुनाथा ॥ दोहा ॥ धर्मतनयकेवच नसुनि, कहाकृष्णविहँसाइ ॥ यहसवसादरभाषिहौं सुनहुभूपमनलाइ ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ प्रथमदरश राजानलकियऊ ॥ ताकेसबसंशयमिटिगयऊ ॥ सुनतवचनकहधर्मकुमारा ॥ नलपरकवनपराडुख भारा ॥ सुनिहँसिकृष्णवचनपरकासा ॥ सुनहुभू पसुन्दरइतिहासा ॥ नवौखण्डकाराजाभयऊ ॥ तेहिंकछुकालराज्यसुखकियऊ ॥ एकसमयनिष शिपनिआई ॥ कृष्णपक्षकैचौथअहाई ॥ नारिदेखेउ

विपिनकहुँगयऊ ॥ तापरतियाबिछोहिलभयऊ॥ कतहूँभूपकतहँगइरानी ॥ महाविपतिकिमिकहौंब खानी ॥ दमयन्तीबहुकरैविलापा ॥ मूर्च्छितभ रीमहासंतापा ॥ गतमूर्च्छाउठिचलवनमाहीं ॥ महाविकलतनुसुधिकछुनाहीं ॥ फिरतविपिनइक आश्रमदेखा॥बैठेऋषितहँपूज्यविशेखा॥ दोहा॥ दमयन्तीमनधीरधरि, गहेऋषिनकेपाँय ॥ करजो रेठाढ़ीभई,आरतवचनसुनाय ॥२७॥ चौपाई ॥ सुनहुनाथममवचनविशेखा ॥ तुमकहुँराजान लकोदेखा ॥ ऋषिनकहानहिंदेखेउँमाई ॥ सुनतवचनरानीमुरझाई ॥ भइसचेतआगेचलि रानी ॥ नदीएकतहँदेखिसयानी ॥ तहाँ अप्सरामज्जनकरहीं ॥ मंगलगानसुनतदुखट रहीं ॥ दमयन्तीतहँवांचलिआई ॥ पूंछातिनसों प्रीतिलगाई ॥ केहिकीपूजाकरौसयानी ॥ कहो [illegible] ॥ गणनाथकीपूजाकरहीं॥

जेहिपूजेसंकटदुखटरहीं ॥ त्रियापुरुषव्रतकरैजु
कोई ॥ मनवांछितफलपावैसोई ॥ दोहा ॥ दम
यन्तीनिजदुखकहे, सकलभांतिसमुझाइ ॥ सुन
तअप्सराप्रीतिसों, बोलोंवचनसुहाइ ॥ २८ ॥
चौपाई ॥ गणपतिकोव्रतकीजैरानी॥मिलिहैभूपस
त्यममबानी ॥ दमयन्तीगणपतिव्रतसाजा॥तिन
केसँगपूजागणराजा ॥ पूजिअप्सरासुरपुरगई ॥
रानीहृदयविचारतभई ॥ बहुदुखविपिनअकेली
रानी ॥ जाउँपितागृहअसजियआनी ॥ तबउठि
चलीपितागृहआई ॥ शोकसहितकछुदिवस
गमाई॥श्रीगणनाथकृपातबकीन्हा ॥ आनिपास
राजैतबदीन्हा ॥ रानीराजाभेयकठांई ॥ व्रतप्र
भावसबबातजनाई ॥ सोईव्रतराजानलकियऊ ॥
ताकरसबसंकटमिटिगयऊ ॥ वैसेराज्यभयेतब
राजा ॥ छूटेताकेशोकसमाजा ॥ दोहा ॥ कथाबहु
केकारणे, सूतकहीसमुझाय ॥ औरौकथा

गणेशकी, सुनोयुधिष्ठिरराय ॥ २९ ॥ चौपाई ॥
मान्धाताकोशलपुरराजा ॥ धर्मनीतिसहसकलस
माजा ॥ ताहिसमयनिशिचरअवतारा ॥ धुंधसु
तातेहिनामसुवारा ॥ तेहिसबलोकजीतिवशकी
न्हा ॥ सुरनरनागसबहिंदुखदीन्हा ॥ सर्व
देवमिलिकरहिंविचारा ॥ केहिविधिजाइनिशा
चरमारा ॥ सुरगुरुकहावचनसुनुमोरा ॥ नृपति
मान्धातावरजोरा ॥ तासोंकरियेयुद्धविचारा ॥
इहिविधिजाइनिशाचरमारा ॥ सुरगुरु
सहित देवतहँआये ॥ मान्धाताको कथा
सुनाये ॥ राजाकहाकहौगुरुमोही ॥ केहि
बलसेमारौंसुरद्रोही ॥ सुरगुरुकहाभूपसुनि
लीजै ॥ गणपतिकीपूजामनदीजै ॥ युक्तिदेव
गुरुदीन्हबताई ॥ तेहिविधिसोंपूजामनलाई॥
दोहा ॥ कृपाभईगणनाथकी, बलसमूहह्वैजात ॥
मान्धातापरसनभये, धुंधसुताहनितात ॥३० ॥

॥ चौपाई ॥ यहइतिहाससकलजगजाना ॥ तातेमैंसंक्षेपबखाना॥गणपतिउईकृपाकहिनाना॥ धुंधसारिअसनामबखाना ॥ औरकथासुनुषर्मकुमारा ॥ कामापतिसोंसुरपतिहारा ॥ सुरपद्देशासुरेशहिदीन्हा॥तबगणपतिकरपूजाकीन्हा ॥ व्रतकेफलपायेउनभारी॥मारेउकामासुरनभचारी॥ औरकथासुनुषर्मकुमारा ॥ जोसुनिकटैसकलदुखभारा ॥ महादेवकहँसंकटभयऊ॥ त्रिपुरासुरसहादुखदयऊ ॥ गिरिजालेनत्रिपुरमनभयऊ ॥ तबशिवगणपतिपूजाकियऊ॥मारादैत्यमहाबलभारी तबतेनामपरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रतकीन्हषडाननवीरा ॥ सावधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुरभयउपरचंडा ॥ जीताकोपिसकलब्रह्मण्डा ॥ गुहगणपतिपूजाअनुरागी॥हतेहुतारकहिवारनलागी ॥ दोहा ॥ अपरकथाअबभाषऊं, चितदेसुनहुनरेश ॥ रुक्मिणिसुतकेकारणे, पूजेदेवगणेश ॥

॥३१॥ चौपाई ॥ व्रतफलतेभृगुमनसुतजायो ॥
अतिआनंदसौंद्दफलपायो ॥ पुनिव्रतकरि
पूजागणराजा ॥ रत्नजटितआरतीसुसाजा ॥
चीररोपितपुनिकहेउनरेशा ॥ पुत्रदानतबदीन्ह
गणेशा ॥ त्रियासहितभृगुमनघरआये ॥
रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये ॥ औरौसुनहुधर्म
मतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलअघपीरा ॥ महिष्म
तीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजराजाकरनामा ॥
तेहिपुरवासकरैद्विजएका ॥ ताकेएकपुत्रअवि
वेका ॥ धेनुवत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्मणभिक्षामाँगि
लेआवै ॥ इहिविधिसोंकछुकालवितावा ॥
बहुरित्रियागणपतिहिमनावा ॥ व्रतप्रभावसों
सम्पतिपावा ॥ कछुकज्ञानबालककहँआवा ॥
दोहा ॥ नीलध्वजकीसभामहँ,बालकआवैजाइ ॥
ताहिदेखिकैभूपसुन,प्रीतिकरहिंअधिकाइ ॥३२॥
चौपाई ॥ जादिनसभमलबालकजानै ॥ राज

हिनिदिनभोजनखावै ॥ बहुअधिकारीद्विज सुतजाना ॥ अतिअभिमान हृदयमनआना ॥ एकदिवसब्राह्मणिव्रतकियऊ ॥ गणपतिकीपूजा मनदियऊ ॥ तेहिअन्तरताकरसुतआवा ॥ माता सोंतबवचनसुनावा॥क्षुधालागिमोहिंमातुबहूता ॥ जननिकहाधरुधीरजपूता ॥ गणपतिकीपूजाकरि लेहूं ॥ तापीछेतोहिभोजनदेहूँ ॥ तबवहबालक उठारिसाई ॥ माताकेसन्मुखचलिआई ॥ दोहा ॥ गणपतिकीमतिमोहनी, लातनदीन्ह गिराइ॥मूरतिपटकीक्रोधकरि, पुनिबोलाक्षुरसाइ ॥ ३३ ॥चौपाई॥ मूरतिपूजिपढैकछुटोना॥पूजा छोडिबैठुइककोना॥ यहकहिगयेउसभानृपकेरी॥ भलअनभलनाहींमनहेरी ॥१ तबवाकीमाता अकुलानी ॥ पूजासाजउठायसुआनी ॥ थापित केपूजामनलावा ॥ करजोरेगणपतीमनावा ॥जोग णपतिद्विजसुतपदमारा ॥ ताकरफलअसफलञ्ज

पारा ॥ जबब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे ॥ सभासूनि लखिमहलसिधारे ॥ भीतरजाइसोकौतुकदेखा ॥ शयनकियेदम्पतिकोलेखा ॥ देखिकैद्विजसुत अतिभयमाना ॥ भ्रमवशबिसरेपगकेत्राना ॥ दोहा ॥ अपनेपदकीपानहीं, छोड़ेभूपअवास ॥ राजाकीपगपनहिलै, आयेनिजपितुपास ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ भोरभयेनीलध्वजजागे ॥ चरणत्रान लखिकहबेलागे ॥ काकेपदकीहैंपदत्राना ॥ रानि कहाप्रभुमैंनहिंजाना ॥ सुनीकिब्राह्मणसुतकी आही ॥ नीलध्वजबोलेमनमाहीं ॥ तुरतै बालकपकरिमँगावा ॥ पुनिचंडालनभूपबुलावा ॥ कहतेहिद्विजसुतआनमँगाई ॥ याहिविपिनमहँ मारहुजाई ॥ बालकलैचण्डालसिधाये ॥ समाचारसुनिमातापाये ॥ तबगणपतिकोकी न्हेसिध्याना ॥ करजोरेविनवेविधिनाना ॥ कृपाकरौगणपतिलखिसेवा ॥ विप्ररूपधरिप्रगटे

देवा ॥ गयेजहाँनीलध्वजराजा ॥ देखिविप्रनिज अस्तुतिसाजा ॥ करिप्रणामनृपशीशनवावा ॥ आशिषदैद्विजवचनसुनावा ॥ दोहा ॥ द्विज सुतकीन्ह नपापकछु, कहिमृदुमीठीबात ॥ निर पराधसुनुराजवह, बालककरियनघात ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ सोसुनिराजातुरतबुलाये ॥ विप्रजानिकैशीशनवाये ॥ द्विजबालकनिज मंदिरगयऊ ॥ देखिमातुउरआनँदभयऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगुसाँई ॥ दीन्होंबालकमोर छुडाई ॥ नृपघरआवेजायसोबालक ॥ तैसी प्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगुसाँई ॥ गणपतिमहिमानहिंनबुझाई ॥ सोकारणसुनुधर्मकु मारा ॥ जसबालककमभोव्यवहारा ॥ एकदिव सनृपकोसुततहवाँ ॥ ब्राह्मणिसुतचलिआवा जहवाँ ॥ मुखमञ्जनकरिभूपकुमारा ॥ जलमाज नलियब्राह्मणिबारा ॥ भइअनकृपानाथगणकेरी ॥

ताकरफलअबसुनोबहोरी ॥ सुखमज्जनझूरीतब भयऊ ॥ जलकेपात्रमाथहोइगयऊ ॥ राजपुत्रत हँभयेअलेषा ॥ यहकौतुकपुरवासिनदेखा ॥ दोहा ॥ द्विजसुतदेखचरित्रयह, मनमहँअतिभय मान ॥ ठाढ़विसूरहिमनहिंमन, काइकीन्हभग वान ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ सबैकहायहभयेअ लेषा ॥ जायभूपसोंकहियविशेषा ॥ ब्राह्मणि तनयकुँवरकहँमारा ॥ महाराजकाकरियवि चारा॥ सुनिकैभूपविपुलदुखमाना ॥ कहारिसाइ हतौतेहिप्राना ॥ गारौशठहिवारजनिलावहु ॥ ताकरमुखजनिमोहिंदिखावहु ॥ सुनतवचनसब मारनधाये ॥ समाचारतबमातापाये ॥ व्याकु लह्वैसुमिरेगणदेवा ॥ जोरिपाणिविनवैकरिसेवा ॥ अहोनाथगणनाथगोसांई ॥ बालकदानदेहुमोहिं धाई ॥ मोहिंसबभाँतिभरोसतुम्हारा ॥ धावहु नाथनलावहुवारा ॥ आरतिहरनकृपाअबकीजे ॥

संकटकाटिपुत्रमोहिंदीजै ॥ आरतगिरासुनीगण राई ॥ धारिद्विजरूपप्रगटभयेआई ॥ ब्राह्मणिकहँगणपतिसमुझावा ॥ तुवसुतकर्मकरेफलपावा ॥ इसकहँकीन्हेसिचरणप्रहारा ॥ सोफलभुगतैअव सँभारा ॥ दोहा ॥ ब्राह्मणिजानेगणपती, परीचरणकरजोर ॥ अस्तुतिकरतअनेकविधि, सुनहुवचननृपमोर ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ यह बालकहैधरमअजाना ॥ तापरकृपाकरो भगवाना ॥ बोलेगणपतिगिरासुहाई ॥ देहौं बालकतोरछुड़ाई ॥ यहकहिगणपतिआये तहँवां ॥ संकटमेंद्विजसुतहैजहँवां ॥ चंडाल नसोंकहगणनाथा ॥ केहिकारणकाटौशि शुमाथा ॥ सबदूतनसमुझावाभेवा ॥ राज कुमारहताइनदेवा ॥ बोलेगणपतिवचनविशेषा ॥ राजकुँवरमैंखेलतदेखा ॥ धायेतबराजापहँआये ॥ नाथनाइकैकथासुनाये ॥ सुनि मन अचरज

कीन्हकुआरा ॥ कहाँबोलावहुविप्रकुमारा ॥ आयसुपाइसुसेवकधाये ॥ नृपसुतवेगिभूपपहँलाये ॥ देखितनयनृपअतिसुखपावा ॥ दूतनसोंतबवचनसुनावा ॥ तेहिजननिआरहुवेगिसिधावहु ॥ ब्राह्मणितनययहाँलैआवहु ॥दोहा ॥ सुनितबधायेविपिनकहँ, जातनलागीवार ॥ ब्राह्मणिकोसुतसंगलै, आयेजहाँकुआर ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ देखि भूप अतिआदर कीन्हा ॥ सँगबसायचरणोदकलीन्हा ॥ यहिकावचनकहाडुइवारा ॥ बाचिजाइसोकवनविचारा ॥ यहिकीमातुयोगकछुजाना ॥ तासोंबालकबचेनिदाना॥ असविचारिकैदूतपठाये ॥ ताकीमातेतुरतबुलाये ॥ आईब्राह्मणिदेइअशीशा ॥ प्रथमैंभूपनवायउशीशा ॥ ब्राह्मणितनयदेखिसुखपाये ॥ तबहींराजावचनसुनाये ॥ कछुचेटकतुमजानुसयानी ॥ सोविधिहमसोंकहहुबखानी ॥ कहब्राह्मणीसुने

होराजा ॥ मैंपूजौंगणपतिमहराजा ॥ दोहा ॥
गणपतिकीपूजाकरौं, ध्यानधरौंमनलाइ ॥ परसन
होतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटिजाइ ॥ ३९ ॥
चौपाई ॥ सत्यसत्यराजाकरिमानी ॥ ब्राह्मणि
सोंबोलामृदुवानी ॥ केहिविधिपूजौंगणपतिराई॥
तबब्राह्मणिकहिसबसमुझाई ॥ कनकवसनसारि
विपुलमँगावा ॥ ब्राह्मणिकोदैपदशिरनावा ॥
तनयसमेतपरमसुखपाई ॥ आशिषदैब्राह्मणिघर
आई॥ गणपतिकीपूजातबभयऊ ॥ सबसुखमयो
सबैदुखगयऊ ॥ व्रतप्रभावनीलध्वजराजा ॥ सुत
पत्नीसुखसंपतिभ्राजा ॥ दोहा ॥ तातेसुनहुधर्म
सुत, व्रतकारिपूजुगणेश॥ विघ्नहरनकेनासते, मेटत
सकलकलेश ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ मुनिकैकथाजो
रिकैहाथा ॥ धर्मतनयतबनायउमाथा ॥ धन्यध-
न्यतुमधन्यमुरारी ॥ मोपरकृपाकीन्हअतिभारी॥
गणपतिकीसबकथासुनाई॥मोरेतनुकेपापमिटाई॥

अबप्रभुकृपाकरोमनलाई ॥ ताकीविधिकहियेस
मुझाई ॥ हरिबोलेसुनुराजसुवारा ॥ व्रतविधिकहों
सकलसुखसारा ॥ भादौंमासचौथिजबआवै ॥ता
दिनव्रतआरम्भकरावै ॥व्रतारंभकैकरिअस्नाना॥
बहुरिकरैपूजाभगवाना ॥काहुदेवकीकरैनानिंदा ॥
मनमहँसुमिरैबालगोविंदा ॥ रविअस्ताचलकोज
बजावै ॥ तबगणपतिपूजामनलावै ॥ दोहा ॥
गोगोबरसोंलीपिकै, चौकेचारुपुराइ ॥ कलश
धरैवेदीरचै, अक्षतदूबचढाइ ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥
पाटाधोयधरैसोइआगे॥पूजैगणपतिमनअनुरागे।
मूर्तिकनककुंकुमकीहोई ॥ कीपषाणपूतरीकी
सोई ॥ तेहिमूरतिकीपूजाकरई ॥मालचढाइपुष्प
शिरधरई॥ धूपदीपआरतिकरैनाना ॥ विधिसों
आनिधरैपकवाना ॥यहसबकरिआचमनकरावै॥
तांबूलपुनिआनिचढावै ॥ जोविधिबारहमासकि
होई॥तेहिविधिसोआवाहिदेसोई ॥ पाछेकथासुनै
मनलावै ॥ जबलगिचंद्रउदयकरिआवै ॥ चंद्र

अर्घ्यदेकरै अभ्यासा॥ करैविसर्जनपुनिदुखधासा॥ पुनित्राह्मणहिंदक्षिणादेई॥ आशिर्वादताहिसन लेई॥ त्रियापुरुषव्रतधारैकोई॥ मनवांछितफलपावै सोई॥ दोहा॥ यहिविधिव्रतधारणकरै, पूजैदेवगणेश॥ जोविधिबारहमासकी, सोअबकहौंनरेश ॥ ४२॥ चौपाई॥ आश्वचौथिपूजामनलावै॥ सुमनतरोईकेरमँगावै॥ घृतकेसंगहोमजोकरई॥ तीनिजन्मभवसागरतरई॥ मासकुवारचौथिजब आवै॥ दूधहरीकेफूलमँगावै॥ घृतसँगहोम करैजोकोई॥ सबविधिसोपावैफलसोई॥ कातिक मासचौथिजबआवै॥ दरदालिघृतहोमकरावै॥ पूजापूरणताकीहोई॥ सकलसिद्धिफलपावैसोई॥ अगहनमासचौथिजबआवै॥ भटकटइयाकेफूल मँगावै॥ घृतसेहोमकरैसुतपावै॥ रिपुनाशकहु खनिकटनआवै॥ दोहा॥ पूसमासकी चौथिको, दशापन्नघृतहोम॥ वश्यहोइराजा

ज्ञा, सिद्धिहोइसब्काम ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥
माघचौथिअँधियारीआवे ॥ गतकरिसांभरि
नोनमँगावें ॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई ॥ राजावश्य
ताहिनितहोई ॥ फाल्गुनकृष्णचौथिकीराती ॥
अमिलतासकीआनैपाती ॥ सँगघृतसोंहोमक
रावै॥षटमोहिनीभूपसोपावे ॥ चैतमासचौथीजब
आवे ॥ तबनिबुवाकेबीजमँगावे ॥ घृतसँगहोम
करैजोकोई॥वाँझतियापुत्रवतीहोई ॥ मासवैशाख
चौथिजबआवे॥ राईकेबलिसुमनमँगावे ॥ घृत
सँगहोमकरैनरकोई ॥ होइसिद्धिफलपावैसोई ॥
ज्येष्ठचौथिअँधियारीआवे ॥ सुमनसेवतीकेर
मँगावे ॥ घृतसँगहोमकरैचितलाई ॥ ताकीवृद्धि
होइअधिकाई ॥ मासअषाढ़चौथिजबआवे ॥
कमलफूलकरलेइमँगावे ॥ शुक्तिसमेतहोमजो
करई ॥ सोप्राणीपुनिदेहनधरई ॥ श्रावणमास
चौथिजबआवे ॥ कुसुमसेइरुवांकेरमँगावे ॥सान

धानहोमतघृतजोई ॥ दनुजदेवताकेबशहोई ॥
॥ दोहा ॥ यहिविधिबारहमासकी, कहीभूपसमुझाइ ॥ विधिसोंपूजेगणपतिहि, सकलकष्टमिटिजाई ॥४४॥ चौपाई॥ सुनिकैकथाधर्मशिरनावा॥ धनिगोपालयहकथासुनावा ॥ जोविधिकृष्णकहाव्रतनीती ॥ तेहिविधिसोंनृपकीन्हप्रतीती ॥ गणपतिकीभईकृपाअपारा ॥ माराशत्रुलागिनहिंबारा ॥ सुखसहहर्षराज्यतबकीन्हा ॥ गणपतिकीदायालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबातचितआई ॥ जोमनसाकरसोफलपाई ॥ ऋधिसिधिसंपतिसुखनअपारा ॥ धरणिधामसुतसंपतिदारा ॥ नारीपुरुषकरैव्रतकोई ॥ सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ जोयहकथासुनैअरुगावै ॥ अंतकालसुरपुरवहजावै ॥ दोहा ॥ श्रीगणपतिकीकथायह, संस्कृतमध्यविशाल ॥ यथाबुद्धिभाषारची, जड़मतिमोतीलाल ॥ १ ॥

इति श्रीगणेशपुराणं संपूर्णं श्रीगजाननार्पणमस्तु ।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीकष्टणाष्टकप्रारंभः ।

श्रियेनमः ॥ छंदमत्तगजेंद्र ॥ नाथविनयसु
नियेजुदयानिधिजानिस्वदासकृपाकरियेजू॥ज्यों
जुविभीषणपैसुढरे रमणेशहुपैअबत्योंढरियेजू ॥
कीजियनाथअजामिलकीसुधि सोअबको नहि
येबारियेजू ॥ मैंअबसोचनजानिगहोंपदसोकरिये

अधमकोहरिजू॥१॥ छंददुमिला ॥ शरणीपरनाथ
करीकरुणा।बहुकौनकुलीनकहौकिनजू॥गुरुचाम
साकुनिहालकिये कितनैद्विजबाणकिवैतिनजू॥ग
तिगीधहिदीन्हदुकौन्हक्रिया निजलोकिनिमसि
भरव्योजिनजू॥रसणेशपुकारतआरतहैउनिपैबहु
बीतिगयेदिनजू ॥ २ ॥ जिहिंपापहत्योहरिवालि
वही अबनाथसुकंठकरैनितजू ॥ पुनिसोइविभी
षणकीन्हकुचालकृपालुननेकुधरीचितजू ॥ नहिं
दासनकोअपराधगिन्यो तुमदीनदयालुकियोहि
तजू ॥ अतिआरतदीनपुकारतहै रसणेशकितेरण
येकितजू ॥ ३ ॥ छंदचंद्रकला॥कुबरीप्रभुकौनकु
लीनरही जिहिसोंरतिकीन्हस्वलोकपठाई॥उपने
नभयेकबग्वालनको जिनकीब्रजमैंनितजूठनिखा
ई ॥ गुणसाधनव्याधकियोकहँजाहि पठायकुधा-
मविमानचढ़ाई ॥ अतिकोमलचित्तसदाअसरूपों
रसणेशकीवेरकरीनिठुराई ॥४॥ कलगोपवधूपति

धर्मवतीजिनसोंकरिप्रीतिदियोनिजधामा ॥
नयतीहुअजामिलभक्तकियोगणिकाकबजाइब-
सीशुभठामा ॥ धरिअंकमिल्योजिहिसोंउठिकै
नहिंनाथहतोधनवानसुदामा ॥ रमणेशकिनाथ
सुनौविनती करकीजियआसुदयानिधिनामा ॥
॥५॥ दुर्योधनकेपकवानतजे छिलकानिजभक्तसु
गेहमखाये॥यहबानितुम्हारिसदाअहुहै निहकिंच
नहीतुमकोनितभाये ॥ हरिदीनदयालुगरीबनिवा
जसुलोकहुवेदचहूंयुगगाये॥ रमणेशविभोअतिदी
नअहैनमिलैजगमासमखोजलगाये॥६॥अपराध
गनौममतौजुसुनौतजिकेपतिधर्मभईतनमीरा ॥
शुचिताजगमेंसुप्रसिद्धभली करमाकलिमेंब्रजमेंसु
अहीरा ॥ रइदाससुवैदिकपूजकहैकबनेमगह्योवन
मेंबसिकीरा ॥ रमणेशहुयाचतहैहरिसोंरघुबीरह
रौममसंसृतिपीरा ॥ ७ ॥ तुमहोगतिहौतुमहीपति

होतुमहींजननीतुमहींधनहोजू ॥ तुमहींगुनअद्यु
णग्राहकहोतुमहींभगिनीयुवतीजनहोजू॥ तुमहींम
मित्रपितातुमहींतुमहींतनुहोतुमहींमनहोजू॥रम
णेशकरैकहलौंविनतीतुमहींममसर्वसजीवनहोजू।
॥८॥दोहा॥यहकरुणाअष्टकपढ़ै, जोजनन्तिमन
लाइ ॥ सीतापतिदशरथसुवन,ताकीकरैंसहाइ ॥

इति श्रीकविरमणेशकृतंकरुणाष्टकंसंपूर्णम् ॥

श्रीसीतारामचंद्रोजयति ॥

विनती-सवैया ।

आजुलगेबहुकीन्हउपाइतहांकवहूँसुखनेकुनपायो
योगविरागकियेतपतीरथ भांतिअनेकनरूपबना
यो ॥ जन्मअनेकगयेरघुनाथनरूपतुम्हारहियेम
हँआयो ॥ देखिदशाअपनीदशहूँदिशिहारिरहेशर
णागतआयो ॥ १ ॥ अंगविभूतिलगाइकेजाइ

छिछाइकेध्यानकरचोकबहूँ॥ मूँड़मुड़ाइबनाइसुवे षक्हावतसिद्धिफिरचोतबहूँ ॥ ऊरधबाहुतपादि कियेतहँमानकहँ अपमानकहूँ॥ श्रीरघुवीरदयालु म्हरीविनवौंरघुनाथदुखीअबहूँ ॥२॥ डूबतहौंदुख सिंधुमँझारसियावरजूगहिबाहँउबारो ॥ जोनगहो करजातबहोतब आपुहिकोजु परिश्रमभारो ॥ तातेनकीजे बिलंबदयानिधि नाथपुकारतहौंचि तधारो ॥ श्रीनृपराजकिशोरप्रभो करुणाकरिके रघुनाथनिहारो॥ ३॥ रागधनाश्री॥ रघुवरराख हुविरदतुम्हारी॥ मैं अतिअधम अधमअधमनते आयोशरणतुम्हारी ॥ वाल्मीकिआदिकभाष तहरिशरणागतअघहारी ॥ जोमैंपापकीन्हअव मोचनशारदसकैनउचारी ॥ तातेअबतवशरणे आयोंश्रीवरलषणविहारी॥

अथ ऊधोलीला प्रारम्भ ।

दोहा॥ एकसमयब्रजवासकी,सुरतिकरीहरिराय॥
निजजनअपनोजानिकै, उद्धवलियेबुलाय॥१॥
श्रीकृष्णवचनऐसेकह्यो, उद्धवतुमसुनिलेहु॥
नंदयशोदाआदिदै, जाब्रजकोसुखदेहु॥२॥ ब्रज
वासीवल्लभसदा, मेरेजीवनप्रान॥ तातेनिमिषन
बीसरौं,मोहिनँदरायकीआन॥३॥हमउनसोंऐसो
कह्यो, आवैंगेरिपुजीति॥ अबतोरेकैसेवनैं,
पितामातुसोंप्रीति॥४॥ उद्धवब्रजमोपिता,उन

धरेरोध्यान ॥ तिन्हैंजायउपदेशद्यो, पूरणब्रह्म ज्ञान ॥ ५ ॥ पागोअपनेअंगको, क्रीटमुकुटपहि राय ॥ श्रुतिकुण्डलमालादई, अपनोवेषबनाय॥ ॥६॥अरुअपनोरथसाजिके, सूतसारथीदीन्ह ॥ उद्धवचरणप्रणामकरि, रथआरोहणकीन्ह ॥७॥ विद्यावंतविवेकयुत, शीलवंतगुणशुद्ध ॥ चतुरचि ह्नजानतसबै, योप्रवीनश्रीउद्ध ॥ ८ ॥ परमसखा श्रीकृष्णको, सुरगुरुशिष्यप्रवीन ॥ तातेलायक पाठयो, ब्रजकोआयसुदीन ॥ ९ ॥ रथहिजोति उद्धवचले, अतिअनंदमनकाम ॥ दिनकरपर ग्रापितभये, गयेनंदकेधाम ॥ १० ॥ चहुँदिशि गोधनआवहीं, वृषभानूकीगाय ॥ बच्छवचन लागतभले, मानोथानसुराय ॥ ११ ॥ अपनी अपनीमंडली, मिलेग्वालकेवृंद ॥ मुरलीमधुरब जावहीं,गावहिंगुणगोविंद ॥ १२ ॥ गोदोहनमोह नप्रिया, देखतकैलास ॥ मोरमुकुटकंजकनी,

छांड़िआवतनँदग्राम ॥ १३ ॥ तबउद्धवरथहाँकिकै,
गयेनंदकीपौर ॥ नन्दयशोदादेखिकै, सन्मुखआये
दौर ॥ १४ ॥ उद्धवरथतेउतरिकै, मिलेनंदकोधाय ॥
नयनसजलजलसोंभरे, आनँदभरनसमाय ॥
॥ १५ ॥ करगहिलैगृहकोचले, सुतसनेहकेचाय ॥
अशनवसनबहुविधिदिये, निजमन्दिरपधराय ॥
॥ १६ ॥ अरुचंदनबहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि ॥
विधिपूर्वकपूजाकरि, सुखशय्याकुसुमादि ॥ १७ ॥
नंदयशोदाप्रेमसों, पूंछनलागेबात ॥ शूरसेनके
पुत्रकी, कहौपरमकुशलात ॥ १८ ॥ जिनकेघट
बालकहते, बन्दिपरेबेकाज ॥ केतकदिनदुःखि
तभये, दुष्टकंसकेराज ॥ १९ ॥ भलीभईसे
नासहित, कृष्णकियोहतकंस ॥ तादिनतेसु
खपावहीं, मातुपितायदुवंश ॥ २० ॥ जाके
अष्टादशप्रिया, रामकृष्णसुतदोय ॥ सरबारिता
कुशलेमकी, कहोकोनपैहोय ॥ २१ ॥ देवनके

मंगलभये, श्रीवसुदेवजनमंत ॥ घरघरप्रतिसब सुरनके, दुंदुभिबजेअनंत ॥ २२ ॥ पटरानीदेवक सुता, सुकृतपरमकृपाल ॥ ताकेगृहप्रगटतभये, श्रीकृष्णकंसकेकाल ॥ २३ ॥ उद्धवतातकीजिये, उनकोसुमिरनध्यान ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, अनँदबधायेकान ॥ २४ ॥ सुफलकसुतआयेइहाँ, रामकृष्णलेजान ॥ तबतेतनुगतिदोभई, यहाँ देहह्वांप्रान॥२५॥ नयनयशोदाजलभरे, कंठश्वास नहिंलेत ॥ कहिकहिबातैंपुत्रकी, हीयोभारिभारि देत ॥ २६ ॥ निमिषनिमिषमहँझगरते, मोसों दोऊभ्रात ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, चोरिचोरि दधिखात ॥ २७ ॥ मोतिनकीमालागरे, राजहंस गतिदोर ॥ यहअंगनकबदेखिहौं, रामकृष्णकी जोर ॥ २८ ॥ पीतांबरकोओढनो, अरुबाजत मृदुबेनु॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, वनहिंचरावतधेनु ॥ २९ ॥ वेतोभूखेहोतहैं, प्रातकालकीबान ॥

तहाँकहौकोराखिहै, घृतसोंरोटीसान ॥ ३० ॥ बातकहौंइकदिवसकी,तुमसोंहितूसुनाय॥ गोदहि करतवनाचलै, चितैचितैरहिजाय ॥ ३१ ॥ उद्धव पयउफलनलग्यो, इंदौरीतजिअंग ॥ पीछेतेमेरो लला,दधिकोभाजनभंग ॥ ३२ ॥ मोहिंदेखिअ तिरिसभई, थोरेदधिकेकाम ॥ ऊखलसोंआनँद वन,मैंबाँधेगहिदाम ॥ ३३ ॥ तादिनतेखटकत सदा, मेरोयहअविवेक॥ऐसीकहौकोसंभवै,सुतसों अवगुणएक ॥३४॥ तबउद्धवऐसेकहैं,सुतकेसुनौ सँदेश ॥ उनकोनाहिंनबीसरो, याब्रजकोआवेश ॥ ३५ ॥ तुमहिंपायँलागनकह्यो, जलसोंनयन भराय ॥ मैयामोहिंनबीसरो, बड़ोकियोपयप्याय ॥३६॥ जादिनतेआयेइहाँ, छाँडचोगोकुलगाँव॥ तादिनतेकोउनाकहै, कान्हकान्हबलिजावँ ॥ ॥ ३७ ॥ जबहमतुमतेबिछुरके,आयेमथुरासाँझ॥ मैंकबहूंनाहींपियौ, घियाप्रातअरुसाँझ ॥ ३८ ॥

अरुतुमभावानंदसों, ऐसीकहियोजाय ॥ वेतुमनी केराखियो, घोरीधुमरीगाय ॥ ३९ ॥ मनवच कर्मसहेतधारि, करिहौंपूरणकाम ॥ आवेंगेदिन पाँचमें, हसमैयावलराम ॥ ४० ॥ राजपाट सिंहासनो, खानपानसुखदेत ॥ याब्रजसुख पावतभले, वनसेंवटसंकेत ॥ ४१ ॥ बातकहत वीतीनिशा, तमचरकीन्होगान ॥ मानोगर्जतमेघ की, घरघरदधीमथान ॥ ४२ ॥ उद्धवउठियमुना गये, कीन्हयमुनअस्नान॥ सेवासुमिरनसबकियो, जोअपनोउनमान ॥ ४३ ॥ करिकृतआयेघोसमें, उद्धवभरआनंद ॥ याब्रजसुखपावतभले ॥ पूरण परमानंद ॥ ४४ ॥ अपनेअपनेधामते, बाहर निकरींग्वार ॥ रथदेख्योश्रीकृष्णको, नंदमहरके द्वार ॥ ४५ ॥ यूथयूथएकैभईं, कीन्होंयाहिविचार यहनाहींसुतनंदको, हैकोऊप्रतिहार ॥ ४६ ॥ उद्धवपैगोपीगईं, कीनोवंदनपान ॥ शीश

नाइआदरकियो, सखाकृष्णकोजान ॥ ४७ ॥
उद्धवब्रजआयेभले, कहौकृष्णकुशलात ॥ वहाँ
जाइकीन्हींभली, कहुकछुउत्तमबात ॥ ४८ ॥
तुमसाँचेउत्तमसखा, मनवचकर्मसहेत ॥ प्राणन
कोहरिलेगये, पिंडदानतुमदेत ॥ ४९ ॥ उद्धव
हमतोबावरी, करैंकवनसोंप्रीति ॥ वहाँजाइ
छाँडीसबै, नंदगाँवकीरीति ॥ ५० ॥ याब्रजकबहुँ
नआइहैं, मैयाकेहितकाज ॥ ब्रजयुवतिनके
नाभये, भयेवहाँकेराज ॥ ५१ ॥ हमश्रवणनछाँडी
सुनी, मोरपक्षवनपात ॥ कुरसीसाँचीचित्रकी,
नाहिंदेखसकुचात ॥ ५२ ॥ तबउद्धवऐसीकही,
सुनौसकल ब्रजनार ॥ बातकहो परब्रह्मकी,
आतमतत्त्व विचार ॥ ५३ ॥ वेतुमपर
करिहैंकृपा, प्रभुताजानिपरम्म ॥ तजियेनातोगाँ
वको, भजियेपूरणब्रह्म॥५४॥ छायामायारहितहैं,
नहींहोतउन्मान ॥ हरितुमसोंऐसोकह्यो, भजिये

श्रीभगवान ॥ ५५ ॥ जापदकोयोगेश्वर, लगे रहतअनुराग ॥ साधनसोइकीजैसदा, नामधरे वैराग ॥ ५६ ॥ नयनमूँदिसुखसौनगहि, त्रिगुण रहितनिजधाम ॥ तुमसबहीमेंदेखिहौ, आपहि आतमराम॥ ५७ ॥मधुकरअंतरकठिनहै, कठिन बातकहिजात ॥ भूखमरैदिनसातलौं, सिंहघास नहिंखात ॥ ५८ ॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहै, तोतुम हीलैजाव ॥ बहुऱ्यो नाहिंन पाइहौ,ऐसोउत्तमदाव॥ ५९ ॥ उद्धवतातेदेखिहौ,तत्त्वरूपतनुमाहिं॥ सोहमकोसिखवतकहा, तुमहींसाधतनाहिं॥६०॥ यहतौउनकोचाहिये, जिनकेअंतरराय॥ दादुरतौ जलबिनजिवै, मीनतुरतमरजाय॥६१॥हैंदोउएकै ठौरके, दादुरमीनसमान ॥ वेजलबिनमारुतभखैं, वेबिछुरततजप्रान ॥ ६२ ॥ उद्धवइतनोअंतरो, ब्रजमथुराकेलोग ॥ विमुखकरैंवारूपको, जारिद्द हैसोयोग ॥ ६३ ॥ पठयेआयेकवनके, कवनसि

नकोजानि ॥ यहांतुम्हारीकौनसों, कहौकवनप हिचान ॥ ६४ ॥ वचनवचनबाढीव्यथा, नहिंजान तपरहेत, मधुकरदाहेअंगपर, कहालोनघसिदेत ॥ ६५ ॥ तनकारेमनसाँवरे, कपटीपरमपुनीत ॥ मधुकरलुब्धीवासके, निमिषएककेमीत ॥ ६६ ॥ तु मतौस्वारथकेसगे, नहीं बेलिसेभाव ॥ आवैयह गह्वरबढ़ौ, आवैजारिबारिजाव ॥ ६७ ॥ तुमतोचर णाजनिछुवौ, ऐसीगतिकेवीर ॥ मधुकररसअतिला लची, नहिंजानतपरपीर ॥ ६८ ॥ रहतनिकटनित श्यामके, तातेनिपटनपीर ॥ विछुरोगेहरिसंगते, तब जानोगेवीर ॥ ६९ ॥ ऊधवहारीविछुरनव्यथा, तुम पैबीतीनाहिं ॥ विछुरोगेजबश्यामते, तबजानौमन माहिं ॥ ७० ॥ हमतुमतेकैसेकहैं, मधुकरसुनोसँ देश ॥ नाहरिजातिनपांतिके, कहांकरोउपदेश ॥ ॥ ७१ ॥ कितविपनासिरजीहमैं, कितदियोव्रजको वास ॥ कितमिलापश्रीकृष्णसों, कितविछुरनको

आस ॥ ७२ ॥ नयनहसारेमधुकरा, आननकृ
ष्णसरोज ॥ ब्रजछांड़ेतादिनसते, वैरीभयोमनो
ज॥७३॥मनमोहनवेनामहैं,मोहननयनविशाल।
मोहनपढ़िकछुमोहनी, लैमोहीब्रजवाल ॥ ७४ ॥
सबअँगमोहनरूपहै, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहन
मूरतिमाधुरी ॥ मोहनवचनमराल ॥ ७५ ॥
वचनवचनमोहीत्रिया, हमतुमकेतिकबात॥सुरन
सहितसुरयोषिता, थकितधामनहिंजात ॥७६॥
एकसमयनिशिशरदकी,मोहनवेणुबजाइ। बैनसैन
देसांवरे, लीन्हींसबैबुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरस
हमसोंमिले, कुंजनकियोविहार ॥ सोसुखनाहीं
बीसरै, सुमिरतवारंवार ॥ ७८ ॥ एकसमयजल
केविषे, करतकेलिअस्नान ॥ चीरचोरतरुपैचढ़े,
वेयशुदाकेकान्ह ॥ ७९ ॥ बहुरचोनाहिंनबीसरै,
भुजबलकीअनुहारि ॥ राखिलियेब्रजकुलसबै,
नखपरगिरिवरधारि ॥८०॥ एकसमयवनकेविषे,

कुंजकुंजवनधाम ॥ हरिहमसोंक्रीडाकरी, पलप
लपूरणकाम ॥ ८१॥ एकदिवसइकगोपिका, गई
गेहकेद्वार ॥ दधिचोरतरोंकेहरी, चलेचपेटासार
॥८२॥ एकदिवसहरिआमिले, मोहिंसांकरीपोर॥
सट्टकीपटकीभूमिपर, हँसेहारकोतोर ॥ ८३ ॥
ऐसीदिनदिनकीकथा, वर्णतनाहींओर ॥ हमरी
वेजानतसबै, मोहनचितकेचोर॥८४॥लीलागोकु
लगांवकी, हमजानतमनमाहिं॥उद्धवतुमश्रवनन
सुनी, नयननदेखीनाहिं ॥ ८५ ॥ जोतुमलाये
योगको, यदुपतिकेपरधान॥हरिरसकीसींचीसबै,
नहिंभावतरसआन ॥ ८६ ॥ पतिव्रताहूंरूपकी,
साखिभरतसबगाउँ ॥ यदपिभजेकोउभूपको, तो
व्यभिचारीनाउँ ॥ ८७ ॥ सीपरहतसागरविषे,
सनमिलापनहिंलेत ॥ मधुकरयहउत्तमतो, स्वा
तिबूँदसों हेत ॥ ८८ ॥ मानसरोवरतेउडैं, आन
भूमिचलिजाहिं ॥ विधिवाहनक्षुध्यारथी, तोऊ

च्छिहनखाहिं ॥ ८९ ॥ जलनाहिंनथोरोकछू, सागरनदीनिवान ॥ स्वातिबूँदचातकपिये, औसबनूठसमान ॥ ९० ॥ येदोउनयनवि राटके, निगमकहतहैंनीत ॥ उडिचकोरअं तरकियो, दिनकरअरुशशिमीत ॥ ९१ ॥ बेलिहोतवर्षासमय, करतवृक्षसोंप्रीति ॥ प्राण गयेछोडेनहीं, अपनीउत्तमरीति ॥ ९२ ॥ हमतोनरदेहीधरी, इतनीजानतनाहिं ॥ रस तजिभजियेयोगको, भंगहोतव्रतमाहिं ॥ ९३ ॥ करतेआयेसोकरत, ऊंचनीचसोंसंग ॥ हमकबहुं नाहिंनकिये, इष्टभावव्रतभंग ॥ ९४ ॥ यद्यपि कुबजाचतुरहै, तहूंकंसकीदास॥भवनगवनकीनों हरी, तुमसेसेवकपास ॥ ९५ ॥ अपलक्षणतेना डरो, बडेभूपकेपूत ॥ कीवेसाँचेरावरे, कीतुम साँचेदूत ॥ ९६ ॥ याहिकठिनलागतहमें, सुनो श्यामकोहेत ॥ वहाँजायकुबजारमी, हमैंयोग

सिखदेत ॥ ९७ ॥ जोकछुलिखोलिलाटमें, बिछुरनमिलनसँयोग ॥ दोषकवनकोदीजिये, जानतहैंसबलोग ॥९८॥ देहधरीजाकारणे,लगि हैंताकेकाम ॥ मनघटयहरससोंभरो, नहींयोगकोठाम ॥९९॥ मोरमुकुटकटिकाछनी, कुंडलतिलकमुभाल ॥ पीतांबरक्षुद्रघंटिका, उरवैजंतीमाल ॥१०० ॥करलकुटीमुरलीगहे, घुंघरवारेकेस ॥ वेहमरेनयननवसे, श्यामम नोहरवेस ॥ १०१ ॥ तबउद्धवऐसीकही,धन्यधन्यव्रजनारि॥ प्रेमभक्तिरसवशकिये, श्यामभुजाउरधारि ॥ १०२ ॥ यहलीलातुमकारणे, गोपवेशऔतार ॥ निर्गुणतेसद्गुणभये, तुमतेकरनविहार ॥ १०३ ॥निगमजाहियोषतरहे, अगमनपावतअंत॥सोतुम्हरेजूठनगहे, श्रीपतिश्रीभगवंत ॥ १०४ ॥ योगेश्वरपावैंनहीं, सिद्धिसमाधिलगाइ ॥ सोतुम्हरेरसवशभये,वनवनचारतगाइ ॥ १०५ ॥ कहतसुनतऐसीकथा,

वहाँरहेषट्मास ॥ तबउद्धवआज्ञालही, हरिचरण
नकीआस ॥ १०६ ॥ नंदमिलेयशुदामिली, मिले
गोपिअरुग्वाल ॥ वंदनकरिकरिसबहिंसों, उद्धव
चलेउताल ॥ १०७॥ नंदकहीयसुदाकही,गोपिन
कहीबहोरि॥वेरजधानीरमिरहे,ब्रजकोनातोतोरि॥
॥१०८॥ अबकबहूँकरिहैंकृपा,सेवकअपनेजानि॥
हरिहमतेनाहिंबीसरो,पूरवहितपहिचानि ॥१०९॥
तबउद्धवआयेइहाँ, कृष्णचंद्रकेधाम ॥ पाँयलाग
वंदनकियो, बोलतलैलैनाम॥११०॥ ग्वालबाल
सबगोपिका, ब्रजकेजीवअनन्य ॥ तुमहिंपाँय
लागनकह्यो, सुनहुदेवब्रह्मण्य ॥ १११ ॥ नंद
यशोदाहेतकी, कहियेकहाबनाय ॥ कीवेजानत
तुमभले, मोपैकहीनजाय ॥ ११२ ॥ वेचिततेटार
तनहीं,रामकृष्णकीजोर ॥ मधुनायकमुरलीगहे,
मूरतिमधुरकिशोर ॥ ११३ ॥ अरुगोपिनकेप्रेम
की, महिमाकहूँअनंत ॥ मैंपूछीषट्मासलौं, तऊ

नपायोअंत ॥ ११४ ॥ देहगेहसबछोडिके, धरत रूपकोध्यान ॥ उनकोभजनविचारिये, औसबकी कोज्ञान॥११५॥संतभक्तभूतलजिते, तेसवब्रजकी नारि॥ चरणशरणलागीरहैं, मिथ्यायोगविचारि॥ ॥११६॥ उनकोगुणनितगाइये, करिकरिउत्तमप्री ति॥मैंनाहींदेखीसुनी, ब्रजवासिनकीरीति॥११७॥ तबहरिउद्धवसेकही, हूँजानतसबअंग ॥मैंकबहुँछो डोंनहीं,ब्रजवासिनकोसंग ॥११८॥ब्रजतजिअंत नजाइहौं,मेरेतोयेटेक ॥ भूतलभारउतारिहौं, धारि होंरूपअनेक॥ ११९ ॥ उद्धवतुमजानौनहीं,प्रेम भक्तिकीरीति ॥ गोपिनकेसम्बन्धते, उपजैप्रेम प्रतीति ॥१२०॥ कृष्णभक्तसोजानिये, जाकेअं तरप्रेम ॥ राखेअपनेइष्टको, गोपिनकेसोनेम ॥ ॥१२१॥यहलीलाब्रजवासकी,गोपीकृष्णसनेह॥ जनमोहनजोगावहीं, सोनरउत्तमदेह ॥ १२२ ॥ जोगावैसीखैसुनै, मनवचकर्मसमेत ॥ रसिकरा

यपूरणकृपा, मनवांछितफलदेत ॥ १२३ ॥
गोपीअरुउद्धवकथा, भूपरपरमपुनीत ॥ तीनलो
कचौदहभुवन, वंदनीकशुभगीत ॥ १२४ ॥
नाशतसकलकलेसऔ, सुखउपजतमनमोद ॥
युगलचरणमकरंदमन, पावतपरमविनोद १२५॥
श्रीमुकुन्दमनमधुपजहँ, सकलसंतअनुराग ॥
यशुदाप्रेमप्रवाहमें, पडेरहतबडभाग ॥ १२६ ॥

इतिश्रीसनेहलीलासमाप्ता।

अथ दानलीला प्रारम्भ ।

दोहा ॥ चलौसखीतहँजाइये, जहाँबसतब्रजराज ॥
गोरसबेंचतहरिमिलैं, एकपंथदोकाज ॥ १ ॥
चौपाई ॥ प्रभुपूरणब्रह्मअखंडा ॥ जाकेरोमकोटि
ब्रह्मण्डा ॥ जबसद्गुणब्रह्मकहाए ॥ मथुरातेवृन्दावन
आए ॥ जहँदेवलोकमुनिजेते ॥ सबगोपपशुआलि
नितेते ॥ देवकीसुतनामधराए ॥ वसुदेवहिरूप
दिखाए ॥ जबगोकुलइच्छाकीन्ही ॥ वसुदेवहि
आज्ञादीन्ही ॥ जिननंदभवनपहुँचाए ॥ तहँनंद

केलालककहाए ॥छंद॥ जन्मलियेवसुदेवकेगृहनंद
केबालकभए॥ छपनकोटियदुवंशमायायूथगोपी
ग्वालके॥ श्रीकृष्णकेसँगबहुतबालकगोचरावन
वनगए॥ हर्षिगावहिंदानलीलासुनौसज्जनकानदें
॥ चौपाई॥ सबघरघरकीव्रजनारी ॥ दधिगोर
सबेचनहारी ॥ मिलियूथमतोसबकीन्हो ॥
यमुनातट मारगलीन्हो ॥ आगे मोहन धेनु
चरावैं॥ मधुरेस्वरवेणु बजावैं॥ जहँ बाट
सबनकीसोई ॥ मुरलीसुनिआनँदहोई ॥ सब
घाटउपरचलिआई ॥ पहिंचानिलियेयदुराई॥
एक बालक कहत पुकारी ॥ तोहिंसूझत
नाहिंगँवारी ॥छन्द॥ तोहिंसूझतनाहिंगँवारि
गूजरिकृष्णठाकुरघाटके॥ आइकाहेनकरोबिन
तीअजहुँहैवर्षसातके॥ हृदयसमुझिविचारिग्वालि
निकृष्णछाँडिकहाँचली॥ दानदेहुनिवारिअपनो
हारिभलेतुमहूँभली॥चौपाई॥ मिलियूथगोपिका

आई ॥ पहिचानलियेयदुराई ॥ सुनिबातसबै मुसकानी ॥ हमआजुसुनेहरिदानी ॥ हमकौनक हांतेआई ॥ हमकोहरिचीन्हतनाई ॥ तुमगोकुल कीब्रजनारी ॥ तुमहौवृषभानुदुलारी ॥ तुमरेशि रगोरसभारा ॥ हमहैंयमुनाघटवारा ॥ कहुदान हमारोलागे ॥ हँसिकैमनमोहनमांगे ॥छन्द॥ ती नलोकमें कौनजानेघाटयमुनातीरको ॥ जातआ वतकुञ्जवनमें रहतलालअहीरको ॥ दानदेवृष भानुलाडिलिसुयशहमसों लीजिये ॥ नंदके सुतजानिहमसोंगर्वबहुतनकीजिये ॥ चौपाई ॥ तबग्वालसखामिलिघेरे ॥ अरिकामटुकीमहँ तेरे ॥ कोइहाथडारिदधिकाढें ॥ तबद्वंद्वचहूं दिशिबाढें ॥ इकग्वालिनिढीठीरिसाई ॥ प्रभुकाय हरीतिचलाई ॥ कछुमांगदहीभारिलीजै ॥ नइदान कीरीतिनकीजै ॥ जोकंसराजसुनिपैहै ॥ तुमहूंको बदेशपठैहै ॥ छन्द ॥ जोकंसराजकेराज्यमें

प्रभुनईरीतिनकीजिये ॥ नंदकेगृहद्वंद्वउपजेदुखपरें तनुछीजिये ॥ सदाआवतजातमथुरादानहम सोंकिनलिये ॥ दहीमांगतछांछदुर्लभनीरयमुना पीजिये॥ चौपाई॥जबग्वालिनिकहिअसबात। ॥ हँसिबोलेत्रिभुवनदाता ॥ तुमतीनलोकमेंदेखो ॥ हमकोजनिमानुषलेखो ॥ हमहींसबदैत्यसंहारा ॥ इककाकरेकंसविचारा॥तुमकंसकोकरहुमाना॥ तेहिकालकरौंपिसमाना॥अबउग्रसेनभएराजा ॥ हमहूँअबताहिनिवाजा ॥ हमसोंहठवादनकीजे ॥ हँसिदानहमारोदीजे॥ छन्द ॥ जाकोवेदपुराणगा वैंमनमानैसोइकरै ॥ परमअधीनबलहीनजोनरकं सकेडरसोंडरै ॥ दहीगोरसकोनबूझैदेखअभरण आपनो ॥ जटितहीरालालकंचनमांगमोतिनसों बनो ॥ चौपाई ॥ कितमोतिनमांगविराजै॥कित पावननूपुरछाजै ॥ हितकंठरत्नकेमाला ॥ हीराम णिहूनँदलाला ॥ बाजूबन्दकँगनभलसोहै ॥

नकबेसरसोंजगमोहै ॥ शिरबेणीगुथीबहुभाँती ॥ तहँलागिरतनकीपांती॥मणिमाणिककंगनडोलै॥ मधुरीकटिकिंकिणिबोलै ॥ कितपाटपीतांबरपहिने॥कितषोडशभूषणकीने ॥छन्द॥ हृदयदेखिविचारिग्वालिनिकुंजवनकीबाटहै ॥ लूटिलेइकोउ सबैभूषणकोतुम्हारेसाथहै ॥ इहाँसबकोदानलागै हठनकीजैसुन्दरी ॥कंसतेहमडरतनाहींसुनतबात सबैडरी॥चौपाई॥इककंगनलैजबदीन्हा॥हरिसों विनतीबहुकीन्हा॥प्रभुथोरबहुतकछुलीजै ॥ अब पारसबनकहँ कीजै ॥ इकग्वाल करी चतुराई ॥ तिनऔघटनावछुपाई ॥ जबआइकृष्णसों भाखा ॥ प्रभुनावकहांकोइराखा॥ अकुलाइउठीं सँगसाथी ॥ प्रभुसांझपरीयहिभाँती ॥ तबकृष्ण सबैसमुझावैं ॥ अबनावकहांकोउपावैं॥ छन्द ॥ औघटघाटगंभीरयमुना रातको नहिंपथचलै ॥

बाघसिंहवटपारवनमेंकवनतुमकोमेलिकहै ॥ झूठ
मायामोहपरिजनस्वप्नहैदिनचारिके ॥ कोउकाहु
केसंगनाहींअन्तदेखुविचारिके ॥ चौपाई ॥ जब
ग्वालिनिकेमनमाना॥ धिगजीवनकैजगजाना ॥
धिगजीवनधनपरिवारा॥ तुमहींप्रभुनाथहमारा ॥
अबचरणशरणप्रभुदीजे ॥ तनमनअपनोकरिली
जे ॥ अबचरणशरणसबलागीं ॥ हमहैंप्रभुपरम
अभागीं ॥ पथरातिपरीअँधियारी ॥ जनिछांड़ि
यरातमुरारी ॥छन्द॥ जन्महमरोसफलकरियेल
जतजचरणनपरी ॥ कुलकिलाजगमायग्वालिनि
जन्मजन्मसेवाकरी ॥रहसिमोहनसंगहिलिमिलि
मणिनकेदीपकबरें॥ श्रीकृष्णराधेयूथग्वालिनिकुं
जवनक्रीड़ाकरैं ॥ चौपाई ॥ यकरहसमंडलप्रभुठा
ना ॥ सबगोपिनकेमनमाना ॥ कोइगंधधूपलेआ
वें ॥ नैवेद्यकिजुगतिबनावें ॥ तहँराधेजीपानखवा

वैं ॥ कोइमाथेचमरडुलावैं ॥ कोइतालमृदंगबजा
वैं॥कोइआरतिमंगलगावैं॥सुरनारदअमृतबानी॥
रहसमंडलकरतबखानी॥ जहँबाजततालमृदंगा॥
मधुरीध्वनिवेणुउपंगा ॥ करतालबजेकरिचोरी ॥
रहसमंडलकीघनघोरी ॥ तहँमांझकिशोरकिशो
री॥दोउकृष्णराधेकीजोरी ॥छंद॥ श्रीकृष्णचंदव्र-
जायआरतियूथमिलिसेवाकरैं ॥ गिरिजानंदप्रसा
दपावैं जन्मजन्मनदुखहरैं ॥ जोनरगावहिंदान
लीलासुनहिंजोचितलावहीं ॥ सोतो पावहिंप्रेम
भक्तीविष्णुलोकसिधावहीं ॥

इति श्रीदानलीलासमाप्त ॥

अथ करुणाबत्तीसी प्रारंभ ।

श्रीगणेशायनमः ॥ कबित्त ॥ गिरिकोउठायब्रज गोपकोबचायलियो, अनलउबारयोपुनिबाल कमंजारीको ॥ गजकीअरजसुनग्राहतेछुटाय लीनो, राख्योव्रतनेमधर्मपांडवकीनारीको ॥ राख्योगजघंटातरबालकविहंगमको, राख्योपन भारतमेंभीष्मब्रह्मचारीको ॥ त्रिधातापहारीनिज

संतदुखकारीसोहिं, एकहीभरोसोभारीऐसोगिरि
धारीको ॥ १ ॥ कमलानिवासनिजदासनकीपूरे
आश, ताकेविशवासविषभष्योमीराबाईहै ॥
केशवकसलनैनसंतनकरनचैन, सनहितभयोरूप
संजनकोनाईहै ॥ इंद्रजूकोहन्योमानसुदामाको
दियोदान, भक्तजानिछानिनामदेवजीकीछाई
है ॥ नंदकेकन्हाईनिजसंतसुखदाई, बलदेव
जूकेभाईसोहमारोहूसहाईहै ॥ २ ॥ काहूकेआधार
सेवावणिजव्यापारनको, काहूकेअधारथितवित
खेतगाँवको॥काहूकेआधारतनसारभ्रातबंधुनको,
काहूकेअधारप्रियसारनिजनामको ॥ काहूकेआ
धारविद्याबुद्धितनबलकोहै, काहूकेअधारहाथी
घोड़ाधनधामको ॥ मैंतोनिराधारमेरीहारहीकरो
गेपार, मेरेतोअधारएककेवलहरिनामको ॥ ३ ॥
केऊकर्मवादीकेऊअनुभवप्रसादीभयो, केतनकी
मतीभईन्यायसांख्यमतकी ॥ केतेजगदानीयम

नेमकोप्रमाणकरैं, केतेपरतीतकरैंतीरथहूब्रतकी॥ केऊब्रह्मचारीकेऊयोगीजटाधारीभये, वानप्रस्थके तनकूंदृयासांधसत्यकी ॥ मैंतोहूंपतितमेरीकोन धौसहैहैगति, रमापतिराखोपतिमोसेहूपतित की ॥ ४ ॥ केऊकरैसेवाकेऊराखतहैलेवादेवा, केऊकीरधानताकेखेतहीकोहीलाहै॥केतेकर्मवासी केतेदानहूकेआसीकेते, गानतानविषयकेविविध रसीलाहै ॥ केतेमहाकूरकेतेसलगुणपूरधीर, केतेअतिबांकेरणखेतमेंअरीलाहै ॥ मैंतोमहाक्रूर ताकेउद्यमनमूरएक, यशोमतिवारेकेरोहमारो वसीलाहै॥५॥ केऊप्रेमलक्षणाभगतिकोविचक्षण ह्लै, नीकीभाँतिसेवाकरजानैविधिज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्वबोधसेतीआतमकोशोधकरै, साधैनित्ययोग गतिजानैरोधपानकी ॥ केऊतनशासनासबासना जेतनसहैं, केऊकेउपासनागणेशशिवभानकी ॥ हूंतौहूँ अजान ताकेकाहूसोंपिछाननाहीं, । कोऊ

कछुजानैहूँतौजानूंनाथजानकी ॥ ६ ॥ जैसे
खगबालककोराखिलियोघंटातले, लाक्षागृह
बीचराख्योपांडवनसाथको ॥ राख्योजुपरी
क्षितको माताकेउदरमाहिं, राख्योग्वाल
बालगिरिधारचोनिजहाथको ॥ पारथकेस्वा-
रथकोसारथीभयेहोतुम, सखानिजजानकैजिता
योहैभारथको ॥ पावकप्रजारीतहाँराखीहैमंजारी
हूको,वैसीभाँतिराख्योनाथमोसेहूअनाथको॥७॥
केऊध्यानधारणासमाधिविषेलीनभये, सिलावेष
रमात्मामेंआतमविचारिको ॥ केतेनिषकाममन
अजपाकोजापजपैं, केतेभजैंशंकरधतूरकेअहारी
को ॥ केतेसकाममंत्रआठौयामजपैं केते, लोभ
गतिदामकोगणेशसुखकारीको ॥ तेरोध्यानज्ञान
तेरोआसरोतिहारो मोहिं, कोऊकछुध्यावो मैंतो
ध्यावौंगिरिधारीको॥ ८ ॥ लीलाहैअगाधब्रजमें

सिनकेहेतुसेती, धनाजूकीखेतीबिनबोयेनिपजाई है ॥ भीषमकोप्रणऔरद्रौपदीकीलाजराखी, अशरणशरणकीर्तिवेदमध्यगाईहै ॥ बूडतबचायो व्रजकरगिरिधारचोनाथ, साहबननरसीकीहुंडी सकराई है ॥ कारियेनबारअबसुनियेपुकारमेरी, मोपैव्रजराजगजराजकीसीआई है ॥ ९ ॥ दीन बंधुदयासिंधुमेटदुखद्वंद्वनके, ऐसेतोअनेकबिरद ग्रंथनमेंकहीहै ॥गोपमेहतेउबारेराजाबंधतेनिवारे, भारतमेंपार्थहितएतेशरसहीहै ॥ नाभाऔकबीर नीधगणिकारुकारितारे, चीरबाढ़िद्रौपदीकोज क्षयशलहीहै ॥ बेरामांझधारमेरोदुःखवारपारदे के, एहोनाथदयानिधिमेरोहाथगहीहै ॥ १० ॥ छंदमत्तगयंद॥आरतनेकगुहारसुनीतबदीनदयालु किरीतखरीकी ॥ दौरतहैतजिकैनिजधामसुबात सुनीतबभीरपरीकी ॥ मेरियबेरबिलंबरहेसुकहा तकसीरकरीतुहरीकी ॥ वायसबेरसुनीजबटेर

करीनाहिंबेरसुबेरकरीकी ॥ ११ ॥ ताडिनटेरे सुनीततकालसहायककाजकेआनखरेहो ॥ संतन हेतअनंतनपारजुआपसबैअवतारधरेहो ॥ मेरी गुहारकरौनहिंकानसुकान्हकहोकिनबानपरेहो ॥ पौढ़रहेवटपातमेंनाथकि बौरभये किजुराजकरे हो ॥ १२ ॥ कबित्त ॥ तबतोहेभक्तनसहाय काजब्रजराज, कंसकोविडारमतिधरीनाहिंमामा की ॥ बादलभरल्यायेजुलाहाकेदयालुहोय, गवुहीजिवाइअरुछानछईनामाकी ॥ संतनको प्राणराख्योग्वालगनव्यालसेती, विपतिहरीसंप तिअमितसुदामाकी ॥ अहोबलबीरतुमद्रौपदीको बाढ्योचीर, हरैक्योंनपीरअबमोसेनिहकामाकी ॥ १३ ॥ द्रौपदीकीलाजकाजद्वारकासोंदौरआये, चीरकोबढायटेकराखी सत्तशीलकी ॥ पुत्र हेतुनारायणनामलेततकाल, काटेयमजालगति भईअजामीलकी ॥ मूठीएकचावलकीखातहीनि

हालकियो कैसीदशाभईउनबालणकुचीलकी ॥ मेरेहूकरोवीढीलहोतहोकहावमील, तबतोनकरी ढीलटेरसुनीपीलकी ॥ १४ ॥ कबकोपुकार तहौंसुनतनीएकौबात, एहोनंदलालतुमकैसेप्रतिपालहो ॥ कहतेदयालुसोतोदयाऊनदेखियत, मेरीमतिऐसीआछेनीकेपशुपालहो ॥ धारयोहै नृसिंहरूपतबैप्रहलादकाज, अबतोनलाजकछुगोधनसेंग्वालहो ॥ डारयोतेलकाननमेंवसेजायकी धोंबन, शेषशैनलेटकीधोंपैठेधोंपतालहो ॥१५॥ बेरबेरटेरटेरजीभहूँशिथिलभई, हरौनाहिंमेरीपीरकैसेअभिमानीहो॥कृपणभयेहोकीधोंमौनकोगहेहो, कान्ह दयाऊनआवे अबकैसेउनमानीहो ॥ कैसे कैउदारतुमहोतहोमुरारगोपगोपिनके प्यारेछाछहू वहूकेदानीहो ॥ बकिबकिथकीबानीकछुहूनचित्त आनी, जानीहमजानिबूझिकरोआनाकानीहो ॥ ॥ १६ ॥ वेद औ पुराणनमें करतबखान ऐसे,

केराजासये, गोकुलकेवासीखासीछाछिकेदिवय्या
हो ॥ कछूमच्छवाराहनृसिंहपरशुरामभये, कछूं
भयेवामनआछेस्वांगकेसवय्याहो ॥ धेनुकेचरैया
कुंजमालकेधरैया पुनि बँसीकेबजैयाअरुवनमोर
ह्य्याहो ॥ टेरतहौंप्रातरातवूझीनाहिंमेरीबात
जानीहमतातभृगुलातकेखवय्याहो ॥ २२ ॥ कौर
वकोवंशबोरयोकंसजूकोकंधतोरयो, गोपिनको
दधिचोरयोबडेवटपारेहो ॥ वृन्दाअरुबकीबोरी
कुब्जासोंप्रीतिजोरी, दानदेतबलिबोरयो चोर
चीरवारेहो ॥ कबहूँकुलीनकीसहायकरीछुनी
नाहिं, वेश्याअरुकीरगीधऐसेनकोतारेहो ॥
जरासंधसेतीहारेजायद्वारिकापधारे, कौनकाज
सारे हरिऔरकेबिगारेहो ॥ २३ ॥ गौतमकीना
रीताकीकथाबहुविसतारी, यद्यपिउधारीतउछिद्र
दुचरायकै ॥ दुःशासनद्रौपदीकेसभाबीचकेश
खेंचे, तबलाजराखलईलाजकोगमायकै ॥ भयो

बलहीन अतिहीअधीरछीनतवगजकाजहरिआये वेगितुमधायकै ॥ दीनकेदयालुप्रभुयामेंतोसन्देहनाहिं, करत सहाय आपनीकेतनतायकै ॥ ॥ २४ ॥ काहूकेतोहेतकरिखेतहूनिकायदीयो,काहूपरी प्रीतिकाजमेघभरिल्यायेहैं ॥ काहूके मजूर होइछानहूछिवायदई, नाईहोइनृपतीको आरसी दिखाईहै ॥काहूपैदयालुहोइदारिद्रविदारदियोकाहूहेतसाहबनिहुंडीसकराई है ॥ करीहोमजाकसो तोदेखतहोंआयसब, मोसूंतोतिहारेनबातनईबनाईहै ॥२५॥ जानतहोंभलीविधिबडेविशवासीपर छलकोकरैयाऐसोदेख्योकोईधूतना॥ पांडुपुत्रहेतु कुरुक्षेत्रमेंमचायोयुद्धकौरोवंशबोरबेकोऐसेकोऊदूतना ॥ महानिरदयीकछुबातहूनजातकहीयदुवंश बोरबेकोऔरकोउपूतना ॥ अस्तनकोपानकरप्राणनकोपानकियो पूतनासुपूतनाप्रुकारतमोपूतना ॥ २६॥ दासप्रुदामाकोसंपतिदी छुदकीमारिचाब

लपैलहिंलीने ॥ सागकेपातपचोलीकेलाइतवैऋ
पिभोजनदीनेनवीने ॥ कंसकीदासीपैचन्दनले
पटरानीकरीकैहौसानकरीने ॥ कारजजोजगसेंय
दुराय अकोर लियेविन कौनो कीने ॥ २७ ॥
याहीजगहेतुप्रभुकेतेअवतारधरे, ताकेअवपालवे
कोकैसेमनमोरोगे ॥ एहोजगजीवजगदीशपोषण
भरन, विरदनिबाहनमेंकैसेदिलचोरोगे ॥ विर
दके काजन अधीरभयेजातहोसो, कहाश्रेष्ठसे
तीनेहतिनकासोंतोरोगे ॥ धरिकेवराहरूपअवनी
निकारीआप, अब कहा पृथ्वीकूंबिनाहीमोहबो
रोगे ॥ २८ ॥ ब्रह्मारुमहेशशेषनारदगणेशकहैंभ
क्तनकेकाजहरिआपदेहधारीहै ॥ मंगलकरनदुख
द्वंद्वकेहरनपुनि, पोषणभरनऐसेरटैंनरनारीहै ॥
विरदभक्तवत्सलसोवेदऔपुराणकहैं जानतहोंजा
केअबखोवेकीबिचारीहै ॥द्वारकाकेबासीजातकेभे
वासीअबमेरीहोतहांसीयामैंहाँसीतोतिहारीहै२९॥

पीपासों पापीअजामीलसोसुरापीअरुन्याधसोंअ
धमतारचोअहल्याउधारीहै ॥ रांकाबांकाकीरतारे
केतकअहीरतारे हाथीसेहजारवारपुनिवारन्यारी
है। कूबरीदासपीपाधनानामदेवछीपाऐसेतोअनेक
तारेतारचोनागकारीहै ॥ अधमअधमतारेकेऊअ
धमीउधारे सबकाजसारेअबबारीहीहमारीहै ॥
॥ ३० ॥ करुणानिधिकान्हसुनौविनतीसुनवेके
बिनाप्रभुकैसेसरैगो।दीनदयालुदयाकरियेविमला
करियेतोपलाऊधरैगो ॥मोसेकुपूतकेकामकृपानि
धियाजुगमेंकहाकौनकरैगो ॥ तातेअनाथकोहाथ
गहोरघुनाथविनादुखकौनहरैगो ॥ ३१ ॥ करत
अपराधभारेसांझतरकौरनिति अतिहीकठोरमति
बोरकौनकामहौं ॥ आतुरअधीरतातेधीरजधरत
नाहिंऊँचनीचबोलिगतिबकूंआठौयामहौं ॥ अर
थानजानूंकछूचरचाबूझतहौं कछूहेतप्रातसेनले

तहरिनामहीं ॥ लवतकसीरबलवीरमेरीमाफक
रौ कहैमाधोदासप्रभुतोरहीगुलामहौं ॥ ३२ ॥
॥दोहा॥ याकरुणाबत्तीसिको,पढ़ैसुनैनरनारि ॥
ताके सबदुखद्वंद्वको, काटैंकृष्णमुरारि ॥ १ ॥

इति मुन्शीमाधोदासकृत करुणाबत्तीसी संपूर्ण ।

अथ नरसीमेहताकी हुंडी ।

चौपाई ॥ श्रीगणपतिकोपहिलेध्यावौं । जब
नरसीकीहुंडीगावौं ॥ परमभक्तमेहताहैनरसी ।
प्रभुभजनमेंबुद्धिहैसरसी ॥ १ ॥ निशिदिन

रामकृष्णचितधरै । झूठीवंतकथानहिंजरै ॥ जाकेहैगृहमाठदासा । रामभजनमेंरहैहुलासा ॥ ॥२॥ जहँआयेसाधूजनदोय । वासोलैकररहिया सोय ॥ प्रातजागपूंछतहैंतहां । कौनलिखतहै हुंडीयहां ॥ ३ ॥ एकमसखरेकीनीहांसी । सुणज्योहोतीरथकावासी ॥ घरमेहतानरसीके जावो । चाहेजितनीहुंडिदिखावो ॥ ४ ॥ उनकेधनकोछोडोनाहीं । बहुतेरीलक्ष्मीघर माहीं ॥ जबसाधूपूछतघरआय । नरसी जीघरबैठेपाये ॥ ५ ॥ रामरामसाधूबोलेजब । उठिआसननरसीकीनोतब ॥ उज्ज्वलजलसोंपांव पखारे । ऊंचेआसनपरबैठारे ॥ ६ ॥ पांवपखार लियोचरणाम्रत । धनधनअपनोभाग्यबखानत ॥ श्रद्धामाफिककरीरसोई । पायेसुखसाधूजन दोई ॥ ७ ॥ चलूकरीआरामकरायो । नरसीपग चंपीकोआयो ॥ साधुनसोंपूछतहैऐसे । मो

परकृपाकीनप्रभुकैसे ॥८॥ साधूबोलेबातबनाय ।
नरसीजीसुनियोचितलाय ॥ संगनमिलेचलैनहिं
साथ । हमपासेरुपयासौसात ॥ ९ ॥ रोक
रुपैयाघरसेंधरो । नगरद्वारकाहुंडीकरो ॥ शो
चतनरसिकहाकहुंइनको । करसजाकभेजेहैंजिन
को ॥ १० ॥ मेरेतोहरिनामअधार । येहीवणिज
करौंव्योपार ॥ अबहरिकीअस्तुतीकरतहै ।
तोसुमिरेसबकामसरतहै ॥ ११ ॥ गजसहाय
कीन्हीततकाल । गरुड़छांडधायेगोपाल ॥ परसी
शिलाचरणरजधारी । गौतमनारिअहल्या
तारी ॥ १२ ॥ पृथ्वीअसुरडुबोईजबै । धरिवराह
तनुआनीतबै ॥ हिरणाकुशजबखरोरिसायो ।
ह्वैनृसिंहप्रह्लादबचायो ॥ १३ ॥ चारमास
तुमबलिकेद्वार । आपुपधारेश्रीकरतार ॥
मारयोपापीरावणखई । लंकविभीषणकोतुम
दई ॥ १४ ॥ सुतसनेहहरिनामउचारयो ।

अजामीलसोपापीतारचो ॥ आठौयामपढाती कीर। गणिकातारीश्रीरघुवीर ॥ १५ ॥ जूठेबेर भीलिनीहाथ। आपअरोगेश्रीरघुनाथ॥ भेजीकं सपूतनाआई।वनीरूपअतिसुन्दरताई॥१६॥श्री मुखमेंजबअंचलदीनू। ताकोप्राणसोखतबलीनू॥ शकटासुरराक्षसजबआयो। बैठोगाडेवदनछिपा यो ॥ १७॥दीन्हीलातकन्हैयालाल। मारचोपा पीकोततकाल ॥ तृणाअसुरअतिगरदउडाई। नं दगावमेंधूमसचाई ॥ १८ ॥ लेकरकान्हगयोआ काश। मुष्टीमारकियोतबनाश॥बालपनेतुममाटी खाई। मातुयशोदामारनआई ॥ १९ ॥ देखमा तुमेंकछुहुनखायो। तीनलोकमुखमें दरशायो ॥ देखयशोदाविस्मयभरी ।पलमेंमायादूरीकरी ॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥पयउफनातोदेखकर, गईयशोदा दौर॥पीछेदधिकीमाथनी,फोरीनंदकिशोर॥२१॥ रीसभरीमाताजबै, सुतकोपकरचोधाय ॥ ऊखल

सूबांध्योतवै, नँदनंदनब्रजराय ॥ २२ ॥ दोरूख नके बीचमें, ऊखलखैंच्योजाय॥नलकूबरपरकट भये, टूटपरयोवृक्षराय ॥ २३ ॥ नारदजीकोशा पहो, दूरभयोततकाल ॥ चटविमानसुरपुरगयो, तिनकोकियोनिहाल ॥ २४ ॥ वत्सासुरबच्छोभ यो, रूपकपटकोधार ॥ श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्योपांवपछार ॥ २५ ॥ वरुणलेगयोनंदको, यमुनामाहिंडुबोय ॥ पितासांचजानीतवै, कृष्णछुड़ायोसोय ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ चोरेचीर जबैघनश्यामा । ब्रजवासिनकेपूरणकामा ॥ ऋषि पत्नीकेकरकेतीवण । आपअरोगेयुगकेजीवण ॥ २७ ॥ जलयमुनाकोमोटोभाग । जामेंनाथ्यो कालीनाग ॥ वत्सग्वालब्रह्माहरलीना । नंदला लफिररचेनवीना ॥ २८ ॥ वर्षएकलागी सबमाया । ब्रजबासीकछुलखनहिंपाया ॥ को प्योमघवाब्रजपरजलझीं । गोपीग्वालबचायोतह

हीं ॥ २९ ॥ धनधनव्रजकेगोपीग्वाल । सदाखे
लेतुमउनसँगख्याल॥निशाशरदअरुबालासाथ।
रासरमेश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ साथअक्रूरमधुपुरी
आये । नगरलोकअतिहीसुखपाये ॥ कुबजासँग
तुमरसेकृपाल । क्रीडाकीन्हीश्रीगोपाल ॥ ३१॥
हाथीहत्योकुवलयापीड़।जिनकोकंसचढ़ायोभीड़
जानवृक्षकेमलोखिलायो । पकड़शुण्डकरिदूरब
गायो ॥ ३२ ॥ मुष्टिचाणूरहनेद्वैमल्ल ॥ कुस्तीक
रिपारचोयकपल्ल ॥ पापीकंसहत्योमहराज । उग्र
सेनकोदीयोराज ॥ ३३॥ आठभईतुमपैपटरानी
एकतेएकअधिकमनमानी ॥अंतर्यामिद्वारिकाना
थ।इनकोहैशिरमेरेहाथ ॥३४॥ दोहा ॥ अतिसु
न्दरिहैरुक्मिणी, लक्ष्मीकोअवतार ॥ सतिभामा
कोमानहैं, जाम्बवतीसुंप्यार ॥ ३५ ॥ कालिंदी
नागनजिती, भद्राजीसोंहेत ॥ मित्रविंदाअरुल
क्ष्मणा, कृष्णकोशोभादेत ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥

पारिजातसुरपुरसूँल्यायो ।सतभामाघरआनलगा यो ॥ असउपज्योनारदकोजबै । सहलोंमहलप धारेतबै ॥ ३७ ॥ विपतिसुदामाकीतुमहरी । घर मेंऋद्धिसिद्धिबहुकरी ॥ अग्निअजीर्णहोगईजबै । बनखंडीमेंचराईतबै ॥ ३८ ॥ यज्ञराजपांडवको कियो । थालीमांजनकोतुमरयो ॥ जबजबबोल्यो जोशिशुपाल । थालीफेंकिहत्योततकाल ॥ ३९ ॥ जबेद्रौपदीकीनीभीर । वस्त्रबढ़ायोघट्योनचीर ॥ शापदेनपांडवकोआये ॥ वनमेंऋषिकोबोतअघा ये ॥ ४० ॥ दासविदुरकोमोटोभाग।अतिहिप्रीति सोंपायोसाग ॥ भीषमकोप्रणराख्योजबै । भीर पड़ीभारतमेंतबै ॥ ४१ ॥ परीक्षितकीतुमकीन्हि सहाय । गर्भवासमेंलियोबचाय ॥ भारतमेंअति युद्धमचायो।भारद्वूलकोअंडबचायो ॥ ४२ ॥ मि त्राचारकियोहैपारथ ।जाकोआयजितायोभारथ॥ पांडवकोअश्वमेधकरायो । अतीप्रीतिसोंदेवजिता

यो ॥ ४३ ॥ यद्यपियोयादवमिलसबही । तोइ च्छासोंप्रगटेसबही ॥ उद्धवकोतुमज्ञानसिखाये । कृष्णरूपप्रभुधामसिधाये ॥ ४४ ॥ तेरेगुणकोक हाविचारा । सुरतेतीसनपायोपारा ॥ मैंहुँदीनऔ रनहिंहाथ । आपकहीजेदीनानाथ ॥ ४५ ॥ तुम अनेकभक्तनकोतारे । संतहेतुबहुकारजसारे॥मैंश रणागतआयोंतेरी ।तुमपरतिज्ञाराखोमेरी ॥४६॥ गद्गदहोयप्रेमरसेंपाग्यो।अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो। नगरद्वारिकासिद्धिश्री । शुभसुथानजहाँबसैहरी ॥ ४७॥ श्रीसाहाजीसाँवलनाम । जिनकोनरसी करैप्रणाम ॥ तुमपरतापचैनहैयहाँ । अतिआनंद चाहियेवहां ॥ ४८ ॥ पानकपूरआरागणलीजे । डीलांकाबहुजतनकरीजे ॥ डीलांपाछेसारीबात। सुदारगिणज्योडीलांसाथ ॥ ४९ ॥ अपरंचसमा चारसोंकाम । हुंडीसिकारदीजोदाम ॥ हमराखा साधूजनपासा । साहयेमतुमदीजोखासा॥५०॥

सातासहकारुपयालीना । नेमेजाकासाढ़ातीना ॥
पूणादोयचौगुणाकीजो।देखतसबैदामगिणिदीजो॥
॥६१॥ सितीमासअरुसंवतदीनू।लिखिसिरनामो
कोटोकीनू ॥ हुंडीसाधूलीनीजबै । नरसीउनको
बोल्यातबै ॥ ६२ ॥ हाथेसांवलसाहकोदीज्यो ।
तुरतरूपयाअपनालीज्यो।काटिमेंजलपहुंचेतहां॥
नगरद्वारकासांवलजहाँ ॥ ६३ ॥ जाकरभेंटेश्रीर
णछोड़ ॥ पापगयेसबतनुकेकोड़ ॥ तीरथवासी
पूछतजहां ॥ सांवलसाहरतहैकहां ॥ ६४ ॥ कोइ
बतावोउनकोवास । सांवलपरहुंडीहमपास ॥लो
गनगरकाऐसीकहै । सांवलसाहयहाँनाहिंरहै ॥
॥ ६५ ॥ कोउठगारेपासठगाये ॥ तुमसोहुंडीखो
टीलाये ॥ देरनकरोबेगितुमजावो । उसीठगारेकुं
पकड़बँधावो ॥६६॥ उपजीजीवकोबड़ीउदासी।
पाछाचाल्यांतीरथवासी ॥ कोसदोयतीनकजब
आये ॥ बैठेताकवृक्षकीछाया ॥ ६७ ॥ गयाजी

बसेवर्पंवछाह । जबहीं आयोसांवलसाह ॥ रासरा
मकरवैठोआगे । हालहकीकतपूँछनलागे ॥ ५८ ॥
साधूबोलेमधुरीवाणी । कहाकहूँकछुअगतनजाणी
सांवलपरहुंडीहमल्याये । जाकेवासकछूनहिंपाये
॥ ५९ ॥ अबपीछानरसीपैजावाँ । ईजतउसकी
छूवनसावाँ ॥ जबबोलेतुमसारोकाम । सांवलसा
हहमारोनाम ॥ ६० ॥ बसूंद्वारकाअतहीछाने ।
कोइकहरिकोसेवकजाने ॥ हुंडीकाढोरुपयालीजे ।
खरचोखावोजेजनकीजे ॥ ६१ ॥ जबसाधूजनभ
येखुशाल । हुंडीकाढ़दीनततकाल ॥ गांठीरुपि
यावांधाजबे । सांवलकोपूछतहैंतबे ॥ ६२ ॥ क
हातारवअरुकहापिछाण । नरसीकातुमकरोबखा
ण ॥ सांवलकहेसाधुसुणलीजे । नरसीमेरासखागि
णीजे ॥ ६३ ॥ मैंसेवकनरसीकोतनी । उसकीमो
परकिरपाघनी ॥ उसकोबेच्योहूबिकजाऊँ । अधि
कीऔरकहादरशाऊँ ॥ ६४ ॥ मनमेंआयोअनँद

उछाह। कागजलिखतहैंसांवलसाह॥ सिद्धिश्री जूनागढवास। विराजमानहोहरिकेदास॥ ६५॥ सर्वओपमालायककहूं। तापरश्रीअष्टोत्तरधरूं॥ जिनकोहैनरसीजीनाम। चरणकमलपर करूंप्रणाम॥ ६६॥ कृपातुम्हारीसुखहैयहां। अति आनँदचाहियेवहां॥ खानपानचितनीकेआनूँ। सुदारडीलांपाछेजानूँ॥६७॥सदाकरतहोहमपरदाया। जाहीभाँतिराखियोमाया॥ हुंडीतुम्हरीसाधूल्याये। जिनकोदामदियेपरखाये॥ ६८॥ हेतकरोतुमअनँदअपार। हुंडीलिखजोवारंवार॥ इसविधिकागजलिखयोजबै। सौंप्योसाधूजनकोतबै॥ ६९॥ यहहीजोनरसीकेहात। एकजबानीकीजोबात॥ दूजीचितमेंकभीनआनो। सांवलकोसेवकहीजानो॥ ७०॥ ऐसीबातपरस्परभई। बिदाहुयेसाधूजनसही॥ फिरतफिरतजूनागढ़ आयो। सैंदआगलीचितमेंल्यायो॥ ७१॥

साधूजनकरआघोकीनो । कागजसांवलतुमको दीनो ॥ इसकासमाचारतुमबांचो । मित्रतुम्हारो सांवलसांचो ॥७२॥ कागजलियोजबैततकाल । बांचतनरसीभयेखुशाल ॥ धनधनसाधूतुम्हरोही यो । तुमसांवलकोदरशनकीयो ॥ ७३ ॥ इसविधिकरीभक्तकीसाह । हुंडीसिकारीसांवलसाह ॥ कबीरकेघरबादलल्यायो । धनाभक्तकोखेतनिकायो ॥ ७४ ॥ राणेविषकोप्यालोभरयो । चरणामृतकोनामजुधरयो ॥ मेल्योदासीहाथेजबै । मीराबाईपीगईतबै ॥ ७५ ॥ सुखडपज्योपीयतपरमान । सहायकरीश्रीभगवान ॥ खीरआरोग्यश्रीयदुराय । नरसीकीहुंडीसिकराय ॥ ७६ ॥

॥ सोरठा ॥ नगरनागपुरवास, नामजेठमलजानिये॥हरिभक्तनकोदास, संवतसतरासोदशछपरै ॥ ७७ ॥ समयबैठगुरुवार, जेठशुक्लपछअष्टमी॥ हरिगुणकियोउच्चार, जोबांचैसीखैगुणै ॥ ७८ ॥

इति श्रीनरसी मेहताकी हुंडी समाप्त ॥

अथ हनुमानविजय प्रारम्भ ।

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ दोहा ॥स्वस्तिश्रीपतिपशु पती, गणपतिमृगपतिमाय॥ श्रीधर जगपति खग पती, वंदौंनगपतिराय ॥ विजयहनूवर्णनकरूं, हृदयधरूँआनंद ॥ श्रीधरमारुतनंदको, दर्शनपर मानंद ॥ २ ॥ छंदकरखा ॥ ॐनमःशारदासुम तिमनमेंबसो कुमतिकेअंधकोफन्दतोडै ॥ ह्रींन मः ह्राँम्हनुमानमहावीरकी भीरकादुःखकःसुःख

ओरे ॥ श्रींनमः सर्वदासंपदाआप श्रीलक्ष्मीनाथ
केहाथपावे ॥ क्लींनमःक्लेशसंतापदुखदूरको विज
यहनुमाननरनामगावे ॥ १ ॥ प्रथमजानासूँकाम
जगमेंकरैंदुःखकेहरणसुखकरणगन्ना ॥ बुद्धिकेसिं
धुश्रीगिरिसुतापुत्रकेचरणपदशरणकोधरणमन्ना॥
गुरूपदकंजकरिंजमकरंदमन भ्रमरयूंसुमरकरशीश
नाऊँ॥कोटितेंतीससिलिदानआशीशद्योहृदयहनु
मानकोध्यानपाऊं ॥ २ ॥ जगतमेंजगमगैज्यो
तिज्वालामुखी जाहिपदपंकमेंशंकनाहीं ॥ हनुमा
नहंकारटंकारकीशक्तिगुरु शिष्यकीभक्तिलिहुँलो
कमाहीं ॥ चलतहैमंत्रश्रीवचनईश्वरतणांटलतदु
खरोगबहुखुलतभोगा ॥ हृदयहनुमानकोध्यानसु
खगानकरमानसन्मानसबकरतलोगा ॥ ३ ॥
विजयहनुमानविस्तारसंसारमें जीति गढलंकनिः
शंकगाऊं ॥ बुद्धिकोहीनअतिदीनगुणतीनपण
वीरमहावीरकीभीरपाऊं ॥ मातश्रीअंजनीअंश

ईश्वरतणों दानवरदानसुरईशदीयो॥ अरुणप्रति बिंबकोउदितहगदेखकर फूलभखतूल ज्यों ग्रास कीयो॥ ४ ॥वालिकीविपत्तसूंवसेऋषिमूकपेतहां मनधीररघुवीरआये॥ जहांतुमआयकेभक्तिपद पायके मित्रसुग्रीवसोंप्रीतिल्याये॥ गयेगढलंक गेपवनकेवेगआकाशमेंयक्षिणीत्रासखाई॥ मुद्रि काआपरघुवीरकेहाथकी बातकरजानकीखबर पाई॥ ५ ॥ बेफिकरवाटिकाताहिखंखारिआरे पुत्रकोमारकपिनामपाये॥ दनुजदलतोडकपि पूंछकोमोडपुनि मातुढिगदौडपदशीशनाये॥ होतहाकारगढलंकदरबार लंकेशकेपासकपिआ पआये॥ वचनसेमोहवशभयेसबराक्षसालंकपर जारजगजयतिगाये॥ ६॥ पडेहैंआयरघुवीरके पाँयमेंवीनतीबहुतकरजोरकीनी॥ लंकपुरजार तापुत्रकोमार श्रीजानकीनाथको खबरदीनी॥ छकेरणधीरबहुफौजकीभीर तब दाहिनीबाँहपर

अनुजसोहै ॥ दक्षणीकोणपरकोपकोनेत्रजब सहायकोकरणअबऔरकोहै ॥ ७ ॥ गयोगढ़ लंकपरडंकहनुमानको रंककीशंकनहिंअंकजेती ॥ द्विविदसुग्रीवनलनीलऋषिराजपुनि अवरयुव राजहनुमंतनेती ॥ सिंधुपरसेतुधरपाजपाषाण कर नामपरतापकपिकटकपारा ॥ जयशब्द उच्चरैभूमिसबथरहरैफरहरैध्वजादशग्रीवद्वारा ॥ ॥ ८ ॥ कोटपरकूदकरकांगरेकांगरेनागिरैनाडरै कपिजूकूदे ॥ उमँगमनमाँहरघुनाथकेवचनराजा यदासबछभयेमहलसूदे ॥ रामकेभुवनपदआव होलंकपतनाथबखसीसदीलंकतेरी ॥ कहत मंदोदरीपीवसुनपापियारामदलरामदललंकघेरी। ॥ ९ ॥ दशाननकोपकरकहतसुनकामिनीभामि नीदामिनीजातचपला ॥ दामनीचपलघनमेघमें चलपलेभामनीहलपलैभुवनप्रबला ॥ सूरनरघर पलैसमरसंग्रामममेंशत्रुकेशीशभुजदंडतोड़ै ॥ कहत

दशग्रीवसुनराजमंदोदरीलाजके काजकचूंदुःखमो है ॥ १० ॥ कोटगढ़लंकआखातदरियावसेमेरुस मबंधुहैकुंभकर्णा ॥ हारकैजायँगेवनचरामानवा युद्धमेंजीतिहैंलंबकर्णा ॥जानकीहेतुउद्योगनृपराम को मनुजकहजीतिहैदनुजहीते ॥ कहतदशग्रीवसु नरानिमंदोदरीरामकेअनुजकोतनुजशीते ॥ ११ ॥ रामकोदासआरामकोनाशकरलंकसीधामनिष्का मझांपै ॥ अंजनीपूतसोरामकोदूतहै छूतकीहूतसे भूतकांपै ॥ एकहीवनचराकियाविपरीतपुरछांड़ अभिमानसुखठानजीजै ॥ कहतमंदोदरीपीव सुनप्रीतसेजनकजारामकीभेंटकीजै ॥ १२ ॥ नट्योनिशिराजमनरट्योगौरीशको कटचोतनु चाहियेरामशस्त्रै ॥ शट्योजबसेनमेंघट्योनृ मेघमेंलट्योज्यूंलेतललकारवस्त्रै ॥ चापशर करनमेंधर्योतनुधरनमें वस्योमनचरनमेंशरन काजै ॥ जनकजाहीयमेंरामकोबासरघुनाथ

केहीयब्रह्मांडराजै ॥१३॥ अखिलब्रह्माण्डकोभार
लेसमरमें रामकेसंगदशग्रीवजूझै ॥ वीरहनुमान
संदेहकरमोहसेनाथकेकानमें बातबूझै ॥ कोजि
येसहायसबसृष्टिकीकृपानिधिदुष्टके बाणहियटा
लमारो ॥ शत्रुकोवद्धकरकार्यकोसिद्धकरभरतके
शीशपरहस्तधारो ॥ १४ ॥ वीरकीविनयसुनवीर
रघुवीरशरचंडकोदंडध्वनिभूमिजागी ॥ ईशकीश
क्तिघननादसेहाथसेअनुजके आयअनमोघलागी
सिंधुकोकूदकरपलमेंपहाडधर प्राणसंजीवनीवी
रआनी॥लषणकोप्राणदारामकोनामलेसेनजीवंत
करसिंहवाणी॥१५॥ रामकोअनुजलेधनुषकोश्रव
णलगतानशरचंडरिपुवक्षभेद्यो ॥ रामशरचंडलेखें
चकोदंडको मेरुघटकर्णकोशीशछेद्यो॥समरमेंरुंड
मुंडावलीभटनकीसुभटनरबानराशत्रुमारैं।चढेना
भयानसुरसिद्धगंधर्वमुनिसुमनकीवृष्टिआशीशधा
रैं॥ १६ ॥ होतहुंकारध्वनियुद्धमेंशुद्धसेरामशरसा

घदशग्रीवमारयो ॥ बीशभुजशीशदशअंगप्रतिअं गसभकाटलंकेशकोभूमिडारयो ॥ करयोनिष्कंट लंकेशहरिदासको चमरशिरछत्रगढलंकदीन्हो ॥ रामकीकृपातेतेलसिंदूरलेवीरकोरूपहनुमंतकीन्हो ॥ १७ ॥ पुष्पकेयानचढजनकजावामभुज दाहि नीबाँहपरअनुजराजैं ॥ भालुकपिकीशसुग्रीवको आदिलेअंजनीपूतहनुमंतगाजैं ॥ भरतको संगलेअवधकोदरशदेराजको तिलकमुनिराजकी न्हो ॥ रामकाराजकातिलकरघुनंदको दास कोतिलकहनुमंतलीन्हो ॥ १८ ॥ रामकेनाम सेसिंधुशिलातरीरामकोदासआकाशलांघ्यो ॥ रामकेदासके रामहिरदैबसैंरामके दासनिजनाम माँग्यो ॥ रामकेनामसेपापकोनाशहैदासके नामसंतापछारी ॥ रामकेदासकीराममहिमाक रैरामसेरामकादासभारी ॥ १९ ॥ रामकोचरि तशतकोटिविस्तारहै प्रीतिसोंनित्यत्र्यम्पिराज

गावै ॥ रामकेचारितकोश्रवणकेकाजश्रीरामकोडू तहनुमंतआवै ॥ वीरमहावीरहनुमानकीहांकसेम रेसरघट्टकेजीवजागैं॥ डंकिनीशंखिनीवीरवैताल भयमारुतीनामसेभूतभागैं॥ २० ॥ सालइकबी सउगणीशतऊपरैजेठवदिदशमिशुभकाव्यगावैं॥ श्रीतिसोंप्रगटश्रीवरदखेडापती रीतिसोंपठनधन धान्यपावैं ॥ गौडश्रीधरकहेसलेमाबादमेंसुबस शुभनगरकेसर्वलोगा ॥ दुष्टकेचोटदेपुष्टसोंरोटले भावसेंबरतियेभावयोगा ॥ २१ ॥ दोहा ॥ श्रीध रविजयकपीशकी, पढ़ैसुनैमनलाय ॥ महावीर खेडापती, पूरैमनकाचाय ॥ २२ ॥

अथ इक्कीसकवित्तकी अनुक्रमणिका।

ॐनमःग्रथमजाजगतमेंविजयहनुबालिकी विपति बेफिकरबांटी ॥ पढ़ैहैगयोगढकोटपर दशाननको दगढरामकोदासघाटी॥नटचौंनिशिअखिलहीवी रकीरामको होतहूँपुष्पकेयानसाटी ॥ रामकेनाम सेरामकोचरितहैसालइकवीसकबिकाव्यछांटी १

श्रीधर कह्यो जो हनुमान विजय ताको पाठ करैया मंत्रको मयूरके पक्षसों झाड़देवै तो दृष्टि मुष्टि भूत प्रेतादिक दूर होजायँ, अन्न धन-प्राप्तिहोय, ग्रहपीडा दूरिहोय, राजमान्य होय ॥ इतिफलम् ॥

॥ इति श्रीधरकृतश्रीहनुमानविजयसंपूर्ण ॥

अथ श्रीकृष्णमंगलप्रारंभ।
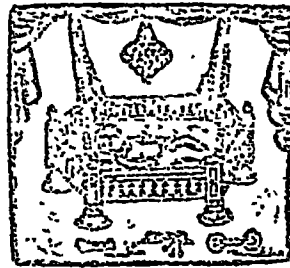
छंद ॥ जनमें श्रीकृष्णमुरारि भक्तहितकारने ॥ मथुरा लियो अवतार गोकुलझूलपालने ॥ तिथिअष्टमीबुधवारभादौंवदिकरी ॥ रोहिणीनक्ष त्रआधीरातजनमलियोशुभघरी ॥ धनिदेवकीव

सुदेवजहाँप्रभुअवतरे ॥ धन्ययशोदाबाबानन्दम हरघरपगधरे ॥ धन्यधन्यसुरनरमुनिसबजयज-यकरैं ॥ दुंदुभिबजतअकाशसुमनवर्षाकरैं ॥ ब्रज वासीगोरसभरिभरिकरिल्यावहीं।दधिकांदौंबाबा नन्दसुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृदंगबीनऔ बांसुरी ॥ निरततगोपीग्वालचरणचितचावरी ॥ यशुमतिचीरपहिरायनौरंगभईग्वालिनी ॥ सुन्दर वदननिहारिचकितभईभामिनी ॥ श्रीबलभद्रजी केबीरअसुरदलखंडना ॥ भक्तवत्सलमहाराजया दवकुलमंडना ॥ शंकरधरतहैंध्यानसुगोदखिला वहीं ॥ सोसुखचूमतिमाइसुपलनाझुलावहीं ॥ श्री नँदयशुदासेनेहचरणचितल्यावहीं ॥ हरिगुणमंग लगायगोविंदगुणगावहीं ॥

॥ इति श्रीकृष्णमंगलसंपूर्णमस्तु ॥ शुभमू ॥

अथ राधामंगलप्रारंभ ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ चौपाई ॥ वसानेवृषभानुदु
लारी ॥ चन्द्रवदनिमृगलोचनिप्यारी ॥ पंकजव
पुगुणरूपरसाला ॥ खेलनगईजहाँनँदलाला ॥
निरखतरूपनन्दकीरानी ॥ गोदउठायभवनमें
आनी ॥ छन्द ॥ गोदउठायभवनमेंआनीआभू
षणपहिराइयाँ ॥ मांगमुक्तापीतपटउरतारसुम
नसुहाइयाँ ॥ बिंदुकाजलकीदईकुलदेवमानमना

इये॥ सूरकेप्रभुसाजिनखचखकुँवरिघरपठाइये॥
॥ १॥ चौपाई॥ आवोमेरीप्राणजुप्यारी। मो
रहिखेलनकहाँजुसिधारी॥ कुमकुमभालतिलक
किनकीन्हो। किनमृगमदकोबिंदादीन्हो॥छन्द॥
बिंदामृगमददियोमस्तकनिरखशशिसंशयपरचो
एकशरदनिशिकीकलापूरणसानमनगँभ्रवहरचो॥
हँसिहेरमुखसोंकहतजननीअलकवेणीकेंगुही ॥
सूरकेप्रभुसोहव्यापेसांचिकहमोहेभईजही ॥ २ ॥
॥ चौपाई ॥ नंदजीकेवरनीयकसोहै। मेरोवदन
तनुफिरिफिरिजोहै॥ खेलतडोलतनिकटबैठारी।
मनसेंआनँदकियोहैभारी॥ छंद ॥ आनँदमनसें
कियोभारीनिरखमुखबलिबलिगई॥ बाबाजूको
नामलेलेतोहिहँसगारीदई॥ पाटीतोपारिसवारभू
षणगोदलेमेवाभरी॥ सूरकेप्रभुहर्षहियमनमेंवि
धिनासोंविनतीकरी॥३॥ चौपाई॥ सुनतबात
...रतिमुसकानी ॥ मैंनँदरानीजियकीजानी ॥

येरीसुतारूपगुणरासी ॥कान्हउदासीवनकोवासी ॥ छंद ॥ कान्होउदासीवनकोवासीरंगढंगादखूँक णे॥ इकरत्नअमोलनीलमणियजुकांचकंचननहिँ जुडै॥ ललताविशाखासूँकहैतेरीललीअलतककहँ रही ॥ सूरकेप्रभुभवनबाहरजानमतिदीजोसही ॥ ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ दिनदशपांचहटकजब कीन्ही ॥ कुँवारिकोकृष्णदिखाइआनदीन्ही ॥ मूछिंपरीजब तनु न सँभारयो ॥ लाड़लीको डस्योरीभुजंगसकारयो ॥ छंद ॥ लाड़लीकूंडस्यो भुजंगमकारोगारडूहारयासवै ॥ नंदनंदनमंत्रका नूयहविषढाप्यानांनिंढवै ॥ पठयेसखीगोपालको जैल्यावोआनंदकंदको ॥ सूरकेप्रभुलहरउतरै मिलैब्रजकेचंदको ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ करसनुहावै रकृष्णजबल्याये ॥ देखतहीविषदूरहोजाये ॥ उठ बैठीमनकियोहुलासा ॥ कीर्तिचलीअपनेपति पासा ॥ छंद ॥ कीरतिचलीअपनेपतिपासेभीति

रीतिबधारिये ॥ ब्याहकायकमंत्रकाजोसखियांमं
गलगाइये।वृंदातोवनमेंरच्योस्वयंवरकुंजमंडपछा
इये।सूरकेप्रभुश्यामघनश्रीराधिकावरपाइये॥६॥

इति श्रीललितराधामंगलसमाप्तम् ॥ श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥

अथ जानकीमंगलप्रारम्भ ॥

छंद ॥ प्रथमसुमिरिगुरुदेवगणेशमनाइये ॥
शारदकोशिरनाइरामगुणगाइये ॥ प्रभुगुणसिंधुस
मानकौनवर्णनकरै ॥ जैसीजाकीबुद्धितैसिहिरदय

घरे ॥ तबबोलेऋषिरायअवधपुरजाइये ॥ रामभ
येअवतारयज्ञहितलाइये॥ करिसरयूअस्नाननृपति
गृहआइये ॥ बहुविधिपूजाकरिसिंहासनबैठाइये॥
कहततपोधनअवधपतिदोउकुंवरहमकोदीजिये ॥
यज्ञपूरणहोइहमरोविघ्नकोयशलीजिये ॥ सुनिऋ
षिकेवचननृपशोचकीनोघनी ॥ कीजैकौनउपाय
बातगाढ़ीबनी ॥ तबबोलेगुरुवशिष्ठनृपतिशोचन
हिंकीजिये ॥ येपूरणअवतारयज्ञहितदीजिये॥प्रेम
कोउपकारकरनृपसुतदोऊगोदीलिये ॥ महामुनि
नकीभेंटलैश्रीरामअरुलक्ष्मणदिये ॥ रत्नजड़ित
पटबाँध धनुषलियो हाथसों ॥ कीनो बहुतप्र
णाम पिता अरु मातुसों ॥ नयन रहे जल
पूरि पिता अरु मातके ॥ इनको नीके राखि
यो ये पुत्र अनाथके ॥ आगे आगे विश्वामित्र
महामुनिपाछेलक्ष्मणरामजी ॥ सजलतनघन
श्यामसुन्दरसकलपूरणकामजी ॥ राजतवदन

विशालबाँकेदृगसोहना ॥ नाशापरमसुढार मदनमनमोहना ॥ यहछबिविविधप्रकाररामगुण गाइहैं ॥ गौरश्यामदोउभ्रातमुनिकेमनभायहैं ॥ उठीराक्षसीघोरमहाप्रभुबाणएकेसोंहनी ॥विप्रको मखकियोपूरणकृपाकरिकौशलधनी ॥ मारोगर्व गुमानध्यानहरिसों धरो ॥ चौंकिपरी जियमाँझ रामशरसों डरो ॥ ब्रह्मअस्त्र करधारिमारीचसुमा रियो ॥ सौयोजनतनुपर्‍योसुरतिबिसराइयो ॥ मारीचटारिसुबाहुमारेमुनिनकेमंगलभये ॥सुरवि मानन पुष्पवर्षहिंहर्षजैजैजैकिये ॥ रच्योहैस्वयंवर जनकरामचलिदेखिये ॥ आयेहैंबहुभूपसबैमिलि पेखिये ॥ भलीकहीऋषिराजजनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकठिनकठोरकोदरशदिखाइये ॥चरणकी रजलागिअहल्यातुरतहीछबिसोंभरी ॥ करजोरि अंजलिभईठाढ़ीरामकीअस्तुतिकरी॥चरणपरशि छुलतारितुरतपतिपुरकोगई ॥ ऐसोकौतुकदेखि

कीरनौकागही ॥ टेरतहैंरघुनाथकीरनौकाल्याउरे वेगिउतारोउपार डरौ जिन बावरे ॥ करजोरि केवटयोंकहैप्रभुबाहनपै पार उतारिहौं ॥ शिला ज्योंउड़िजायनौकाकुटुंब किसविधि पालिहौं ॥ जोनौका उड़िजायधूरिलगि पाँवकी ॥ ताते दूनी देहुँगढ़ाई नावकी ॥ केवट चरणपछालि श्रीराम बैठाइया ॥ क्षणमहँनौकाखेयकेपारलगाइया ॥ करुणासिंधुदयालुरघुवरतारिदासअपनोकियो ॥ योगीसुरनको होतदुर्लभसोपदरीझकेवटकोदियो नौकाउतरेपार श्रीरामजनकपुरको चले ॥ तोरेंगे शिवधनुपशकुणभेंटेभले ॥ वनउपवनबहुबाग विविधबैठकबनी ॥ कंचनद्रुमैंजटितहेमरचनानं नी॥ठौरठौरबहुभूपउपमाजनकपुरअतिसोहना॥ बसेजनकपुरलोगसुन्दरमदनकोमनमोहना॥जन कसभाकेमध्यभूपलखिद्वकिरहे । ठगकेलड्डूखा यमनोसबथकिरहे ॥ पूँछतहैंमिथिलेशकुँवरके

पिकौनके ॥ पूरणजिनकेभाग्यदोउसुतजौ
नके ॥ महासुभटरणधीरदोउगुणलायके ॥
रघुवंशीमहाराजश्रीदशरथरायके ॥ नरनारी
योंकहैंयेदोउवयसकिशोरहैं ॥ शिवधनुकठिन
कठोरकैसेकारितोरिहैं ॥ येछबिश्यामलगौर
हरषिनिरखिकरलीजिये ॥ वारैकामकोटिस्वरूप
सुन्दरनयनभरिभरिपीजिये ॥ अष्टसौमलकष्ट
करिकैधनुसभामध्यआनियो॥ लागेहैंबड़ेबड़ेभूप
योधाधनुषकाहु न तानियो ॥ कहत सिया सुन
तातधनुषप्रण जिन करौ ॥ नातर तजिहौं प्राण
केजेईबरसेंवरौं।करुणासागररामजीयकीजानिये।
पीतांबरकटिबाँधिधनुषलैतानिये ॥ जयजय
कारभईतिहुँलोकभूपसबैमुरझाइये ॥ श्रीरामचन्द्र
मुखनिरखिसियाकेसुमनमालपहिराइये ॥ सोहत
सीतारामकंचनमंडपतरे ॥ शिरसोनेकोमुकुटमंजु
मुक्तनरे ॥ राजतअमलकपोलकिमुक्तालोलके ॥

सुन्दरलोचनलोलकमलजनुभोरके ॥ सुरँगचून रीनिपटपीतपटछारही ॥ मानोअरुणघनश्याम चपलताह्वैरही ॥ यहभूषणप्रतिबिंबरामछबि उरधरैं ॥ मनोयमुनजलमध्यदीखदीपकबरैं ॥ रामभुजाकेनिकटसियाभुजसोंलसे ॥ मरकत मणिकेखंभमनोकंचनकसे ॥ रामभयेतनुगौर सियाभइसाँवरी॥सादरसोभुधिवन्तबधूभइबावरी रामभयेघनश्यामसियाभईदामिनी॥ मुनिभयेचं द्रचकोरचकितभइभामिनी॥पुष्पनवर्षतमेघमुनी सबथरहरैं॥ होतजनकपुरव्याहरामभामरिकरैं ॥ रामसियाकोध्यानसदाशंकरधरैं॥ ब्रह्मारूपनिहा रिइंद्रपूजाकरैं॥सुरनरमुनिआनंदकुसुमनवर्षाकरैं॥ ब्रह्मादिकसबदेवमुदितजयजयकरैं ॥तुलसीसीता रामसहित उर आनिये ॥ रामभजन विनु जन्म सुमिथ्याजानिये ॥

इति श्रीजानकीमंगलसंपूर्ण ॥

गोपियोंकाउद्धवप्रतिउत्तर।

उद्धव कमलनयन बिनु रहिये ॥ इक हरि हमैं अनाथ करि छाँडी दुजे विरह किमि सहिये ॥ जैसे ऊजर खेरकी मूरति को पूजै को मानै ॥ ऐसी हम गोपालबिन ऊधो कठिन व्यथाको जानै॥ तनुमलीनमन कमलनयनसों तामिलवेकी आश। सूरदासस्वामी बिनु देखे लोचन मरत पियास ॥ १ ॥ इति ॥

श्रीकृष्णचन्द्रकी गोपीप्रति हाँसी।

ऐसे जनिबोलो नँदलाला ॥ छाडिदेहुअचरामेरो मोको जानत और सी बाला ॥ बारबारमैं तुमहिं कहतिहों परिहो बहुरि जंजाला ॥ योवन रूप देखि ललचाने अबहींते येख्याला॥ तरुणाई तनु आवन दीजै कत जिय होत बिहाला ॥ कृष्णबिहारी उरते कस्टारहुटूटैगी मोतिनमाला ॥ १ ॥ इति ॥

वृषभानुलली का यशोदाप्रति उरहना ।

कवित्त ।

माखन चुरावै मेरा दही ढरकावै कान्ह गारी मोहिं गावै करै निज मन मानकी ॥ अंग माहिं लपटिकै अँगियाको नोचलेत यशुदाजी साँची कहौं बातमें प्रमानकी ॥ यामें झूठी है न सौंह कक्काकी कृष्णबिहारी सुनि नँदरानी कह्यो एरी वृषभानकी ॥ मैं नहीं प्रतीत करौं तेरीहै सहजबानि सुरि मुसकानि औ कका की सौंह खानकी ॥ १ ॥

गंगाजीकी स्तुति ।

कवित्त ।

छूटी शिव शीशते प्रचण्ड तेज धाराधँसी काटत अघ ओघनके पातक हिते हिते ॥ कृष्ण बिहारी गङ्ग तेरीही तरंग देखि गये सुरलोक सब पातक बिते बिते ॥ सुरसरि महारानीकी महिमा

बखानै कौन वेद औ पुराण यश गावत निते निते॥ यमआगे पाप रोवैं पाप आगे यमरोवैं चित्रगुप्त आप रोवै कागज चिते चिते॥१॥इति॥

अथ विज्ञाननौका प्रारभ्यते।

श्रीगणेशायनमः॥ तपोयज्ञदानादिभिःशुद्धबुद्धिर्विरक्तोनृपादौपदेतुच्छबुद्ध्या॥परित्यज्यसर्वंयदाप्नोतितत्त्वंपरंब्रह्मनित्यंतदेवाहमस्मि॥ १ ॥ दयालुं गुरुंब्रह्मनिष्ठंप्रशांतं समाराध्यभक्त्याविचार्यस्वरूपम्॥यदाप्नोतितत्त्वंनिदिध्यासविद्वान्परंब्रह्म० ॥२॥ यदानंदरूपंप्रकाशस्वरूपंनिरस्तप्रपंचंपरिच्छेदशून्यम्॥ अहंब्रह्मवृत्त्यैकगम्यंतुरीयंपरंब्रह्म० ॥ ३ ॥ यदज्ञानतोभातिविश्वंसमस्तंविनष्टं च सद्योयदात्मप्रबोधे ॥ मनोवागतीतंविशुद्धंविमुक्तं परंब्रह्म० ॥ ४ ॥ निषेधेकृतेनेतिनेतीतिवाक्यैः

समाधिस्थितानांयदाभातिपूर्णम् ॥ अवस्थात्रयातीतमद्वैतमेकंपरंब्रह्म० ॥५॥ यदानंदलेशैःसमानंदविश्वंयदाभातिसत्त्वेतदाभातिसर्वम्॥यदालोचनेरूपमन्यत्समस्तंपरंब्रह्म० ॥ ६ ॥ अनंतंविभुंसर्वयोनिंनिरीहंशिवंसंगहीनंयदोंकारगम्यम्॥ निराकारमत्युज्ज्वलंमृत्युहीनंपरंब्रह्म० ॥७॥ यदानंदसिंधौनिमग्नः पुमान्स्यादविद्याविलासः समस्तप्रपंचः ॥ यदानस्फुरत्यद्भुतंयन्निमित्तंपरंब्रह्म० ॥ ८ ॥ स्वरूपानुसंधानुरूपांस्तुतिंयः पठेदादराद्भक्तिभावोमनुष्यः ॥ शृणोतीहवानित्यमुद्युक्तचित्तोभवेद्विष्णुरत्रैववेदप्रमाणात् ॥ ९ ॥ विज्ञाननावंपरिगृह्य कश्चित्तरेद्यदज्ञानमयं भवाब्धिम् । ज्ञानासिनायोहिविभिद्यतृष्णांविष्णोःपदंयातिसएवधन्यः ॥ १० ॥

इति श्रीविज्ञाननौकासंपूर्णा।
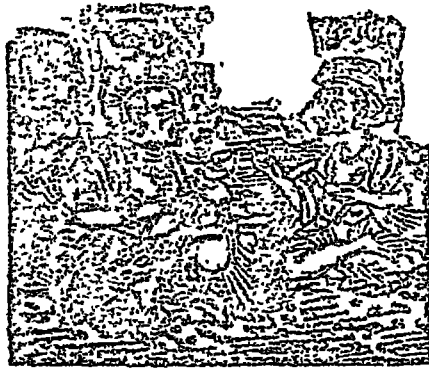
अथ सुदामाजीकी बाराखडी।

श्रीगणेशायनमः ॥ कक्काकमलनयननारायणस्वामी॥वसैंद्वारकाअंतर्यामी॥वासुदेवसंकर्षणछाजें॥ प्रद्युमनअनिरुद्धबिराजें ॥ कक्काकलियुगनाम अधारा। प्रभुसुमिरोउतरोभवपारा ॥ साधुसंगतिकरिहरिरसपीजे ॥ जीवनजन्मसफलकरिलीजें॥ १ ॥ खखाखोजोसकलजहाना ॥ जाकोगावैवेदपुराना ॥ निर्भयनामहरीकोलीजे ॥ चरणकमलकोध्यानधरीजे॥ २॥ गगागुणगोविंदकेगावो॥ मायाजालभूलिजनिजावो ॥ धनयौवन

तनुरंगपतंगा ॥ छिनमेंक्षरहोतयहअंगा ॥ ३ ॥ घघाघटघटबोलेभाई ॥ जलथलमेंप्रभुरहेसमाई ॥ ऊँचरुनीचज्ञानकरिदेखो ॥ एकैब्रह्मसकलमेंलेखो ॥ ४ ॥ ननानिमिषखोजकरिदेखो ॥ दूजोऔर नहींकोइलेखो ॥ सातोद्वीपअवरब्रह्मांडा ॥ नाम हिछायरह्योनवखंडा ॥ ५ ॥ चचाचितनिश्चयक रिराखौ ॥ मिथ्याबातझूठमतिभाषौ ॥ सत्यशब्द तपहोइप्रमाना ॥ झूठवचनसोपापसमाना ॥ ६ ॥ छछाछलबलतजोविकारा ॥ निर्मलनामजपौय कसारा ॥ कामक्रोधकोतजोप्रसंगा ॥ सदारहोसंत नकेसंगा ॥ ७ ॥ जजाजपोजगतपतिईसा ॥ जाको ध्यावेंसुरतेंतीसा ॥ निशिवासरजुरहोलवलाई ॥ हरिपदकमलसदासुखदाई ॥ ८ ॥ झझाझेरनकी जोभाई ॥ शिरपरकालरह्योमड़राई ॥ चेतनाहै हरिशरणैरहिये ॥ कालत्रासकाहेकोसहिये ॥ ९ ननानिमिषनिमिषहरिरूपनिहारो ॥ चितते ध्या

नपलकनहिंटारो ॥ आठोयामरहोलवलाई ॥ चित्तचरणमेंरहोसमाई ॥ १० ॥ टटाटोरुजगतकोनाता ॥ नहिंकोइमातुपितासुतभ्राता ॥ हरिसोंहित्तूनहींकोइअपना ॥ जगव्यवहाररैनिकोसपना॥ ११ ॥ ठठाठाकुरपरमसनेही॥ जिनयेदीनीसुन्दरदेही ॥ नरदेहीकोलाहोलीजै ॥ प्रेमसगनह्वैहरिरसपीजै॥ १२॥डडाडामाडोलचित्तजनिकरो॥ हृदयेध्यानहरीकोधरो ॥आनदेवकाहेकोध्यावो ॥ दृढविश्वासविष्णुगुणगावो ॥ १३॥ ढढाढूँढनकोकहँजइयेभाई ॥ रोमरोमप्रभुरहेसमाई ॥ पिंडब्रह्मांडरहोसबपूरा ॥सदानिकटहरिनाहिंनदूरा ॥१४॥ ननानामहरीकोलीजै । हरिभक्तनकीसेवाकीजै ॥ सांचिभक्तिभगवानकोभावै ॥ प्रेमसहित रसनागुणगावै ॥ १५ ॥ ततातेरीसफलकमाई ॥ नरदेहीसुमिरनकोपाई ॥ हरिभजगर्भवासतेछूटो रामनामधनसोधनलूटो ॥ १६ ॥ थथाथोराजीव

नआई ॥ हरिबिनजन्मअकारथजाई ॥ चेतनह्वेह
रिनामउचारो ॥ तनकोत्रिविधातापनिवारो १७
ददादेखतहीजगकोव्यवहारा ॥ मायाजालबँध्या
संसारा ॥ बँधनतेछूटनजोचहिये ॥ शरणजाइ
संतनकेरहिये ॥ १८ ॥ धधाधरणीधरहिरदैधर
भाई ॥ संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ सदासमीपनि
मिषनहिंटरहीं ॥ भक्तजनौंकीसेवाकरहीं ॥ १९
ननानेहहरीसोंलावो ॥ प्रेममगनरसनागुणगावो
कुविधाम्मर्मतजोमनभ्राता ॥ सन्तजननकोकीजे
साथा ॥ २० ॥ पपापरेपरेसबजन्मगमायो ॥
गुणावादप्रभुकोनहिंगायो ॥ मायामर्मभूलिरह्यो
अंधा ॥ जन्मगमायेकारेकारेधंधा ॥ २१ ॥
फफाफिरिफिरिपरेमोहकेफन्दा ॥ अजहुँनचेतैमूर
खअंधा॥ गुरुचरणनकीधरुमनआसा ॥ हरिभज
मेटौयमकीत्रासा ॥ २२ ॥ बबाबोलोअमृतबा
नी ॥ कहश्रीतिरसनागुणखानी ॥ हरिहीराहिरद

यधरिराखो ॥ कटुकवचनमुखतेजनिभाखो ॥ ॥ २३ ॥ भभाभूल्योमनसमुझावो ॥ जासोंभव जलफेरिनआवो ॥ ऐसीभक्तिकरोमनमेरा ॥ जरामरनहोवैनहिंतेरा ॥२४॥ ममामोहजालभव सागरभारी ॥ झीमरकालमीनसंसारी ॥ जाल लियेयमफिरतअहेरा ॥ हरिविमुखनपरदेतदरेरा ॥२५॥ ययायहअवसरनाहिंवारंवारा ॥ तातेपुनि पुनिकरतपुकारा ॥ मानमित्रतुमचतुरसुजाना ॥ विषरसछांडिभजोभगवाना ॥ २६ ॥ ररारटनह रीसोंलावो ॥ हीराजन्मजनिवादिगमावो ॥ ऐसो हीराजोगमजाई ॥ अवसरचूकेफिरपछिताई ॥ ॥२७॥ ललालालअमोलकमनमलहरना ॥ तन्नु भंडारजतनकरिधरना ॥ प्रभूलालगुरुदेवलखा या ॥ तृष्णालोभसबदूरिगमाया ॥ २८ ॥ ववा बारबारनावौंपदमाथा ॥ उनपदकमलचरणचित दाता ॥ २९ ॥ ससासतगुरुकीकाकरौंबड़ाई ॥ महिमामुखतेवरणिनजाई ॥ चितलागोसतगुरुके

चरणा ॥ रसनाएककहाँलगिवरणा ॥३०॥ षषा खींचिलियोगुरुअपनीओरा ॥ मायाफंदपलक मैंतोरा ॥ निर्भयभयेपापसबत्यागे ॥ जबगुरुच रणोंमें चितलागे ॥ ३१ ॥ शशाशोचविचारमिटे जियतबते ॥ दीपकज्ञानदियेगुरुजबते ॥ नाश्यो तिमिरभयोपरगासा ॥ मानोरविपूरणकरिभासा ॥ ३२ ॥ हहाहरिगयेपापपराजितआपू ॥ श्रीगु रुचरणकमलपरितापू ॥ जैसेधुन्तचहूँदिशिघेरा ॥ प्रगटभानुजबभयोउजेरा ॥ ३३ ॥ लेवेकोहरिजी कोनामा ॥ देवेकोअन्नदानसमाना ॥ धरनेकोप्र भुजीकोध्याना॥सेवनकोगुरुचरणसमाना॥३४॥ क्षक्षाछाँडनविषयबदनसोंचहिये ॥ संतगुरुचरण निहोरहिए ॥ नाममधुररसपिवोसुजाना ॥ गर्भ वासनहिंहोयपयाना ॥३५॥ बारारवडीअनन्दगु णगावों ॥ सबसंतनकोशीशनवावों ॥ दीनपति तहैदाससुदासा ॥ नमस्कारगुरुदेवसुनामा ॥ ॥३६॥ इति श्रीसुदासजीकीबारारवडीसमाप्त ॥

श्रीवेंकटेशायनमः ।
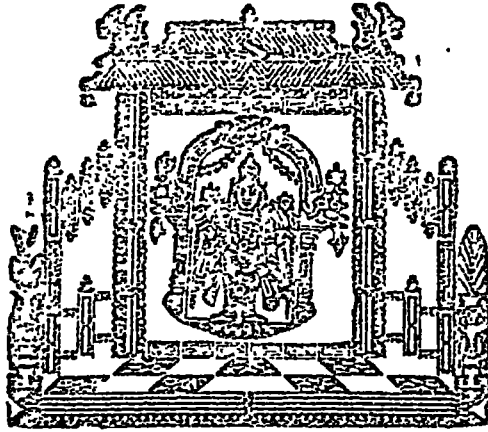
लावनी.

जय जय जयश्रीवेंकटेशप्रभु महिमा अपरम्पारा है ॥ शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडाराहै ॥ वेंकटेश श्रीछापाखाना सारे जगत बखानाहै ॥ श्रीयुत खेमराज अधिकारीपरम भक्त हरिमानाहै ॥ उत्तम काम दाम लघु भारत अत्युत्तमव्यापाराहै ॥ शहर बम्बई मध्य

विराजत पूरण भरो भँडाराहै ॥ १ ॥ वैदिक औ वेदांत पुस्तकैं धर्मशास्त्रकी सारीहैं ॥ परम पवित्र पुराण सबै विधिकर्मकाण्डकी न्यारी हैं ॥ लघु अरु दीर्घ वैद्यक सिगरी रामबाण अघ हारी हैं॥ भक्तन प्रिय स्तोत्रछपाये जिनकी नहीं शुमारीहैं ॥ रामानुजी काव्य चंपू छंद राजनीति चचाराहै॥शहरबम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडाराहै ॥२॥ ज्ञानभक्ति गानेके लायक नाटक नये बनायेहैं ॥ करुणा, वीर, हास्य, रसपूरित सकल जनन मन भायेहैं ॥ सबप्रकार ज्योतिषकेपुस्तक ग्राहकगण ललचायेहैं ॥ वैयाकरण एकनहिं बाचा मोटे टैप छपायेहैं ॥ मीमांसा इतिहासभाष्य अरु योगशास्त्र साराहै शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडाराहै ॥ ३ ॥ मूल संस्कृत भाषा टीका हिन्दोस्थानी सबै रकम ॥ भाषाके सब ग्रंथ सुहाये छन्दबद्ध वार्तिक न कम॥

मोटाकागज जाड़ा अक्षर परमपुष्ट मनभावन कोर ॥ कृष्णविहारी शुक्क बखानत भारतवासी जल्दीदौर ॥ परम शुद्ध सुन्दर दर कमती जानत सब संसाराहै ॥ शहरबम्बई मध्यविराजतपूरण भरोभँडारा है ॥ ४ ॥

अथ षट्त्रिंशद्वादित्राभिधान।

छप्पय

मंडल बीन रबाब अनूप तम्बूर उपंगह ॥ वर वसु सुरद पिनाक कुमायच पुंग सुरंगह ॥ बंसी परिगह बांस कानुटक ताल सुपिंगी ॥ तूरभेरसह नाय पाव रण संग दरसिंगी ॥ करणाटक पणव आनक मुरज डफ सुडाक डमरूलजे ॥ जलतरं गझांझमंजीर मिलि षट्त्रिंश बाजनबजे ॥

षट्त्रिंशदायुधाभिधान।

चक्र शूल धनु गज बाण कैबान तुफंगह ॥ परशु कटारह छुरा शेल खेटक गद खंगह ॥ तोम

रपाश भुशुण्डि बांक खंजर जंबूलट ॥ यंत्र सु अंकुशभाल हलह मूशल खगवरवट ॥ जंजाल जहर गुप्ती गुजर दाव पटा पिस्तोल लिय ॥ आयुध षडांगषट्त्रिंशयुत नीतपालसेना चलिय

गणेशस्तुति।

सवैया

शैलसुतासुत सिंदुर आनन संकट गंज सदा शिवनन्दा ॥ एकरदी सुरदी वरदीवर बंदन भाल विराजित चन्दा ॥ मूषकरूढ़ प्ररूढ़ महातम गायकमूढ़ गिरागुण छंदा ॥ नायक देव महासिधि दायक पायक पच्छ विनायक वन्दा ॥

मन शिक्षा।

कवित्त।

छारसम काया सब माया धूम छाया जैसी तमोगुण तजरे तू तजि देवोगारीको ॥ तजि है

बड़ाईतू आदर अनादर तज तज शोक मोह चिंता झूठनेहनारीको ॥ जप तप दान पुण्य विना किये बैठ रह्यो जानत न तेरे शिर दण्ड दण्ड धारीको। अहो मनमूढ़ तोसों कहाकहों बेर बेर राखरे भरो सो एक कुंजके बिहारीको ॥

राधिका छबिवर्णन ।

सवैया ।

साजि शृँगार चढ़ी है झरोखन ठाढी है भानुसुता सुखदाई ॥ हारनके दबि भारनसे कुच दोउ नपाई मनो लघुताई ॥ चूरन भार उतार मनो मनमत्थन हत्थ किये सुघराई ॥ सोहत है त्रिवली सुमनो कचके लचके कटिहे दरकाई ॥

शनिफलम् ।

छन्दतोटक ।

चतुरं सुवसे खगमन्द जिहीं, अति उन्नत धानहर

ष्य तिहीं ॥ उन ग्राम घनेवनबागलता, सबसे अरुची मन व्याकुलता ॥

भृगुफलम् ।

भृगु सप्तमथानक जासुरहैं, अतिचातुरता पति तासुकहैं ॥ वह दंपतिको मन एक सदा, सुख होइ लखे अलखेदुखदा ॥

केतुफलम् ।

अटमें गृहकेतु जिहीरहतं, अति चातुरताह उदार चितं ॥ तनु व्याधि न व्यापत तासु यथा, भय आतुर मानसि आधि विथा ॥

भौमफलम् ।

संपतगृहमें पुनि भौम रहै, मन कंतमिले तनु ना मिलिहै ॥ विरहा तनु ताप सआतुरता, सुरतंन प्रियं सुरता सुरता ॥

बुधफलम् ।

नवमे शशिसूनु सुशीलवती ॥ तपतीरथ सेवित पुण्यमती ॥ गुणवानसुमंत्र सँगीत पढ़े, रति संस्तुति देवनसेव बढे ॥

रविफलम् ।

दशवें रवि उच्चग्रहे गतिहै, परतापबड़ो दिनही प्रति है ॥ विविधं वह राजसुनीतलहै, क्रमकी रति योग विशेषकहै ॥

शशिफलम् ।

दशएकमें जासु शशी सुबसे, रतनांबरईभ अनेकअसे ॥ बुधि दीनदयालुकमी न धनं, शुचि तारुचि प्रेम प्रकाश मनं ॥

राहुफलम् ।

बसि द्वादश राहुरह्यो जिनको, अनुराग

विराग बढ़ै तिनको ॥ भयभीत सुचित्त नहीं थिरता, अह एफल जातक उच्चरता ॥

शरदृऋतुवर्णन ।

दोहा—अम्बरजरी सुसोसनी, पनासु भूषणधार ।
चंद्रोदय जल कमलछबि, शरद सुकरत विहार ॥

हेमन्तऋतुवर्णन ।

नील निचोल सु अंबरी, माणिक भूषण सार ।
अतिहि उष्णउपचार तनु, हेमँत करत विहार ॥

पुनःहेमन्तऋतुवर्णन ।

छप्पय ॥ भूमि भुवनमय भोग तैल मर्दन तनु तापन । है जलकेलि हमाम तप्त भोजन तरुणी तन ॥ बहु मृगमद तंबोल तल्पघन तूलतलाई । सुजनी सुभग दुसाल सदल सरपाउ सुहाई ॥ शुभ माणिक भूषण सकलकोक कुतूहल रसकवित । विलसेविलासनिशिदिनविविधरससागरहेमंतऋत॥

शिशिरऋतुवर्णन।

दोहा—अबसरसैपीतिमवसन,नीलमणीसुअपार॥
दंपति प्रेम अनन्त उर, शिशिर सु करत विहार॥

वसंतऋतुवर्णन।

श्वेत विचित्रित तनु वसन, सकल अंग शृंगार।
केसर चन्दन कुमकुमा, करत वसंत विहार॥

वर्षावर्णन।

सुदी कसूँबी पट सकल, नीक जटित शृंगार।
अटा घटा निरखन नवल, वर्षा करत विहार॥

ग्रीष्मवर्णन।

चेल गुलाबी केसरी, सब शीतल उपचार।
मुक्ता मंडन बाग बसि, ग्रीषम करत विहार॥

स्वरनाम।

छंद चन्द्रायणा—षड्ज ऋषभ गंधार सुमध्यम जानिये॥ पंचम धैवत और निषाद बखानिये॥

सप्तस्वर अनुमान भेद ।

छप्पय ॥वरहि बान सुर षड्ज ऋषभचातकी उचारन ॥अंगुचार गंधार मध्य कुरची कल धारन ॥ पंचम कोकिल शब्द बाजध्वनि धैवत जाने॥ घन गर्जन सुनिषाद सप्तसुर भेद बखाने ॥ षट सुर फिरन्त पंडव वहें पंच सुओड वधारिये ॥ स्वर सप्तसोय पूरण कहे रागन धाम विचारिये ॥ भैरवहरतेभयो मालकोशहू विष्णुमुख ॥ ब्रह्मगात हिंडोल और दीपक दिन मणिरुख ॥ शेषहुते श्री राग मेघगाजत अकाश हुव ॥ इक इक इक प्रतिराग पंच रागिनी प्रकट ध्रुव ॥ सुत पंच पंच प्रतिराग नी पंच पंच पुत्री कहे ॥ विस्तार बढ्यो सम्बन्धसे तीनलोक फैल्यो वहे

श्रीभैरवपंचरागिनी नाम भेद ।

चौपाई-भैरू राग भैरवीनारी ॥ बैरारी

माधवी विचारी ॥ सिंधू बंगाली सुकहावे यहै रीत संगीत बतावे ॥

श्रीमालकोशपंचरागनी।

मालकोशहूकी यह बाला ॥ टोडी गोडी रूप रसाला ॥ पुनि गुणकली खमायचिनारी॥ कुंकुम शुक्र पंचो हितकारी ॥

हिंडोर पंचरागिनी नामभेद।

चौ०रामकली देसाख सुवामा। ललिता अरु विलावली नामा ॥ पट मंजरी पंचमी नारी । एहिंडोरकी आज्ञाकारी ॥

दीपक पंचरागिनी नाम।

देशी और कमोद कहावे। नरकेदार दार गुण गावे ॥ बहुरिकान्हरारूपविशाला ॥ यहै पंचदीपककीबाला ॥

श्रीराग पंचरागिनी ।

मालसिरी मारू शुभनामा । धन्यासरी वसंत सुवामा ॥ आसावरी युक्त यह जानी । श्रीरागके पंच मनमानी ॥

मेघरागपंचरागिनी नामभेद ।

टंक मलार कुञ्जरी नारी । पुनि भूपाली अति हितकारी ॥ देशकार युत पंचगनाई । मेघ रागहूके मनभाई ॥

दशदोषाभिधान ।

छप्पय–प्रथम काक सुर कहत तालहीनहु सुरभंगा । कूसुख ग्रीवझुलंत और पुनि डोलत अंगा ॥ सुरभेदन जानंत और सुरग्रहत कपालहि ॥ समय विना संगीत राग उपजे न रसालहि ॥ दशदोष राग संगीतमत गावत गुणी बचावहीं ॥ श्रोता प्रवीन तब सुखलहैं संगन मोजसुपावहीं ॥

शठलक्षण।

मुख सुमिष्ट हृदिकपट अडर अपराधि सदाही स्थूल भुजाउर पृथुल श्रोणि बड़ तनु कठराई॥ कूर्मोदर दृग चपल भूरि देही लज्जातनु। लंपट काम सुकेल अतिहि आतुर मर्कट मनु॥ साँच हीसमान क्रूरहि कहे निज स्वारथ नितहीचहे। अतिहानि वृद्धि अनुमाननहिं शठ सुजान तासे कहे।

अथ शिवस्तुति अष्टकप्रारंभ।

श्रीः॥ असारेध्यानशिवहरीहरकाहरकरआसन

बाघंबरका।अगडबंअगडबंडिमाकडिमाकडिम् ॥ बाजेडमरूशिवशंकरका ॥ टेक ॥ अंगविभूतिल गावसदाशिवहाथलिये निशिदिनगोला ॥कैलाश छोडकरलोटेमशानमोऐसाहैशंकरभोला ॥ १ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ खोपरीमें भोजनकरतागि रिजाहैसोअर्द्धंगा॥सुरनरमुनिध्यानधरेकोइदेवता हैअद्भुता ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ त्रिशू लसेत्रिपुरासुरमाऱ्योतीनलोकमें अधिकारी ॥ ना गनकेराकुंडलविराजैंचढेबैलकीअसवारी ॥ ३ ॥ असारे० ॥ अगड०॥कुंडीसोंटालेकरगौराघोटपि लावैं निशिदिनभंगा ॥ गलेरुंडकीमालविराजैं जटाजूटशिरहैगंगा ॥ ४ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ विषसेकंठहुवाजबनीलारामनाममुखसेबोला ॥ ठंढाशीतललहरहुवाजबप्रेममगनमेंशिवडोला ॥ ॥ ५ ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ जोकोइमाँगेउनकूंदे

येऐसाहैशंकरभोला ॥ आकधतूरोआपआरोगेदूध
भातकोइकूंदेता ॥६॥ असारे०॥अगड०॥ शृंगी
शेलीशिवकूंसोहैहाथलियाझोलीचंगा॥ बहुरंगक
रशिरछत्रविराजैओढेगुदडी नवरंगा ॥ ७ ॥
असारे० ॥ अगड०॥ यकरानीतोरेगौरापार्वतिदू
जीरानीशिवअर्द्धंगा ॥ तीजीरानीअसलमिलादे
जटाजूटशिरहैगंगा ॥ ८ ॥ असारे० ॥ अगड०॥
यकरानीतोरेचन्दनघसतीदूजीजलभरलावेगी ॥
तीजीरानीधूपदीपलेचौथीज्योतिजलावेगी॥ ९ ॥
असारे० ॥ अगड० ॥ तुकारामउस्तादनामसो
साहेबहैसोबहुरंगा ॥ देखदाखलेपोथीपुराणमेंम
तकरबातांअडभंगा ॥ १० ॥ असारे० ॥
अडगबंअडगबंडिमाकडिमाकडिमूबाजे डमरू
शिवशंकरका ॥

इति शिवस्तुतिअष्टकसमाप्त।

॥ श्रीः ॥

अथ संकटमोचनहनुमदष्टकम् ।

श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयंदछन्द ॥ बालसमयरविभक्षलियो तबतीनहुँलोकभयोअँधियारो ॥ ताहित्रासभईजगको यह संकटकाहुसुजातनटारो॥देवनिआनिकरीविनती तबछांड़िदियो रविकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहैजगमेंकपिसंकटमोचननामतुम्हारो ॥ १ ॥ बालिकित्रासकपीशबसेगिरिजातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहा

मुनिशापदियोतबचाहियकौनविचारविचारो ॥ कैद्विजरूपलिवायमहाप्रभुसो तुमदासकुशोकनिवारो ॥ कोन० ॥ २ ॥ अंगदसंग गयेसियखोजनवैनकपीशतबाहिउचारो ॥ जीवतनाबचिहौइमसोंजु विनासुधिलेइयहां पगुधारो ॥ हेरिथकेतटसिंधुसबैतबलेसियकीसुधिप्राणउबारो॥कोनहिं० ॥ ३ ॥ रावणत्रासदईसियकोतबराक्षसिसोंकहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमयहनुमानमहाप्रभुजायमहारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसुआगिसुदैप्रभुसुद्रिविषादनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ४ ॥ बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतबप्राणतजे सुतरावणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेततबीगिरिद्रोणसुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतबलक्ष्मणकेतुमप्राणउबारो ॥ कोनहिं० ॥ ५ ॥ रावणयुद्धअजानकियोतबनागकिपाशसबैशिरडारो ॥ श्रीरघुनाथसमेतसबैदलमोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनि

खगेशतबैहनुमानजुबंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमेतजबैअहिरावण लै रघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूजिभलीविधि सों बलिदेहुसबैमिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहाय भयेतबहींअहिरावणसैन्यसमेतसँहारो॥कोनहिं० ॥ ७ ॥ कार्यकियेबड़देवनकेतुमवीरमहाप्रभुदेख विचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीबकोजोतुमसोंन हिंजातहिटारो ॥ बेगिहरोहनुमानमहाप्रभुजोक छुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं०॥८॥ दोहा ॥ लालदेहलालीलसे, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानवदलन, जयजयजयकपिशूर ॥ १ ॥ यह अष्टकहनुमानका, विरचिततुलसीदास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढ़ै होय दुखनास ॥ २ ॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकट
मोचनहनुमदष्टकं संपूर्णम् ॥

अथ भद्रनारायणाष्टकं प्रारभ्यते ।

वामेभागेराधयाराजमानंश्यामेरूपेपीतवासोवसानम् । शश्वद्भद्रंभावयंतंजनानांदेवंवंदे भद्रनारायणाख्यम्॥ १ ॥ मूर्ध्निभ्राजद्बर्हिपिच्छंदधानंकाश्मीरैणोद्भासितंभालदेशे । गुंजापुंजैर्मञ्जुकर्णावतंसं वंदेदेवंभद्रनारायणाख्यम् ॥ २ ॥ वक्षोदेशेवन्यपुष्पच्छदाद्यैःक्लृप्तांमालांधारयंतंविशालाम्।तद्वत्कंठेकौस्तुभेनोद्विभान्तं वंदे देवंभद्रनारायणा० ॥ ॥ ३ ॥ केयूराभ्यांरत्नभाभासिताभ्यांबाहुस्थाभ्यां जातरूपोद्भवाभ्याम् ।विभ्राजंतंस्निग्धवर्षाघनाभं देवंवंदेभद्रना०॥४॥भूषावृंदैर्भूषिताशेषगात्रंकंदर्पाभंयोगिभिर्योगगम्यम्॥ भक्ताभीष्टापूरकंराधिकेशं देवंवंदेभद्रना० ॥ ५ ॥ क्वापिप्रेम्णावंशकं वादयंतंगोपीवृंदैर्वेष्ट्यमानंवनान्ते । ताभिर्गीतंगीयमानं मनोज्ञं देवं वंदे भद्रना० ॥ ६ ॥ गोपैर्युक्तं क्वापिगोवर्धनाख्येगोत्रोपांतेगाःसवत्साघटोध्नीः ।

नानारूपैश्चारयंतं सरामं देवं वंदे भ०॥ ७ ॥वृंदा रण्येबालकैःक्रीडमानंनानावेषैश्शुद्धभावाद्युरक्तैः। क्रीडासक्तैः साकमेभिर्हसंतं देवं वंदे भद्र०॥ ८ ॥ स्तोत्रेणानेनयेदेवं भद्रनारायणं हरिम्॥संस्तुवंति नरास्तेषां कार्यसिद्धिः पदेपदे ॥ ९ ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशोद्भवचहोतरग्रामनिवासिश्रीपंडितराम नारायणशुक्लविरचितं भद्रनारायणाष्टकस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

पुष्पबिननलीलावर्णन ।

फूल बिनन नहिं जाउँ सखीरी हरिबिन कैसे बीनो फूल । सुनरी सखी मोहिं राम दुहाई फूल लगत तिरशूल ॥ वेजोदिखियत राते राते फूलन फूली डार॥ हरिबिन फुलझारीसी लागत झारि झारि परत अँगार ॥ कैसेकै पनिघट जाउँ सखीरी डोलों सरितातीर । भरि भरि यमुना उमड़ि चलीहै इन नयननके नीर ॥ इन नयननि

कैनीर सखीरी सेजभई घरनाउँ । चाहतहौं याही पर चढिके श्याम मिलनको जाउँ॥प्राण हमारे विन हरिप्यारे रहे अधरन पर आय । कृष्णबिहारीके प्रभुसों सजनी कौन कहै समुझाय॥इति ॥

प्यारेका विदेशपयान वर्णन ।

कवित ।

रोकहिं जोतो असंगल होय औ प्रेमनसै जो कहैं पिय जाइये ॥ जो कहैं जाहु न तो प्रभुता जो कछू न कहैं तो सनेह नशाइये॥कृष्णबिहारी कहैं तुम्हरे विन जीहे नतो यह क्यों पतिआइये । ताही पयान समैंतुम्हरे हमकाकहैं आपै . इसैं समझाइये ॥ १ ॥ इति ॥

हनुमानयुद्धप्रशंसा ।

नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि हकारि हकारि राहलेत आशमानकी । बलकि

बलकि बल करि करि छरि दरि छरत छरेद भेद
कृतगत भानकी॥रुण्डन सो रुण्ड अरु मुण्डनसो
मुण्डकारि भारीभट झुण्डन भुसण्ड मारुधानकी॥
शाबस कहत राम हिये हरषात जात देखो बीर
लषण लड़नि हनुमानकी ॥ इति ॥

वर्तमान दशा ।

कवित्त ।

दानी कोउ नाहिंने गुलाबदानी पीकदानी गोंद
दानी घनीशोभा इनहीं सें लहेहैं ॥ मानत गुणी
को गुणहीमें प्रकटत देख्यो याते गुणी जन मन
सावधानी गहेहैं ॥ हयदान हेमदान गजदान
भूमिदान किशुनविहारी ये पुराणन में कहेहैं ॥
अबतो कलमदान जुजदान जामदान खानदान
पानदान कहिबेको रहेहैं ॥ १ ॥

वर्तमान दान उपहास।

कवित्त।

पौंरिके किवाँर देत घरे सबै गारिदेत साधुन को दोषदेत भीतना चहतहैं। माँगनेको ज्वाब देत बात कहे रोयदेत लेत देत भाँजिदेत ऐसे निबहतहैं॥ बागेहूके बंत देत वाहनको गांठदेत पर्दनकी काछ देत काममें रहत हैं॥येत पै सबैई कहैं लाला कछु देत नाहीं लालाजूतो आठो याम देतही रहत हैं॥ १॥ इति॥

अथ पुरातनकथाप्रारंभ।
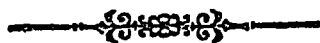
चौपाई॥ पौढ़ोलालकहतिमहतारी। कहौंक थाइकश्रवणनिप्यारी॥ हर्षेयहसुनिमनवनवारी। पौढिगयेहँसिदेतहुँकारी।नगरएकरमणीकसुहावन

नामअवधअतिसुन्दरपावन ॥ बड़ेमहलतहँअग
सअटारी । सुन्दरविशदचारुगचढारी॥बहुतगली
पुरलीचसुहाई । रहैंसदासबसुगँधसिंचाई ॥ भाँति
भाँतिबहुबाटबजारू।अतिसुन्दरजनुविश्वशृंगारू।
तहाँनृपतिदशरथरजधानी ॥ तिनकेनारितीनपट
रानी ॥ कौशल्याकैकईसुमित्रा । तिनजन्मेसुत
चारपवित्रा॥रामभरतलक्ष्मणरिपुहंता।चारौंअति
सुन्दरगुणवंता ॥ तिनमेंएकरामव्रतधारी । अति
सुन्दरजनकेहितकारी ॥विश्वामित्रएकऋषिराई ।
तिनहिंसतावैंनिशचरआई ॥ तिननृपसोद्वैसुत
लियेमाँगी । अपनीरक्षाकेहितलागी ॥ दोहा ॥
रामलषणऋषिलैगये,दनुजहतेतिनजाय ॥ ऋषि
दीनीविद्याबहुत, तिनकोअतिसुखपाय॥सोरठा॥
तहांजनकइकभूप, धनुषयज्ञतानेरच्यो ॥ कन्या
तासुअनूप, जुरेतहाँभूपतिअमित॥चौपाई॥ ऋषि
लेगयेकुँवरतहँदोऊ । जनकरायसनमानेसोऊ ॥

धनुषतोरिभूपनसुखसारी। रामविवाहीजिनकसुमारी॥ चारहुकुँवरव्याहतहँआये। भयेअवधपुर अनंदवधाये॥ रामहिदेनलगेनृपराजू। सज्योसकलअभिषेकसमाजू॥ ताहीसमयकैकयीरानी। चेरीकीमतिसोंबौरानी॥ वचनमाँगिराजासोंलीनो॥वनकोवासरामकोदीनो॥ सुनिपितुवचनधर्महितधारी॥नारीसहितभयेवनचारी॥ तिन्हैंचलतभ्रातासँगलाग्यो॥उनकेजातपितातनुत्याग्यो॥ चित्रकूटभयोभरतमिलनजब॥ दैपदपाँवरिकृपाकरीतब॥ युवतीहेतुकपटमृगमारा। राजिवलोचनरामउदारा॥ रावणहरणकियोतबनारी॥ सुनतश्यामघननींदविसारी॥ चौंकिकह्योलक्ष्मणधनुदेहू॥ देखभयोयशुदहिसन्देहू॥ छन्द॥ संदेहजननीमनभयोहरिचौंकिधौंकाहेपरचो॥ कहुँदीठखेलनमेंलगीधौंस्वप्नमेंकान्हरड्यो॥ बहुभाँतिद्विजमनायपढ़िपढ़िमंत्रदोषनिवारई॥ लैपियति

तफलकूँदेखविप्रनेअपनेमनमैंशोककिया॥ मेरेतो
लायकनहींहैजायभूपकूँभेटदिया ॥ सोफललखि
भर्तरीभूपकाअन्तरसेहुलसाउहिया ॥ उसीसमय
मेंअपनीप्राणप्रियाकूँबुलालिया ॥ इसकूँतुमखा
जाहुसुन्दरीयेअमृतफलरसकाभरा ॥ राजा० ॥
२॥घोड़ेकाइकसहीसथावोरानीकादोसतभारी ॥
उसकूँजायकेदियाफलप्रेमसूँप्रीतमकोप्यारी ॥
सहीसओवेश्यादोनोंकीआपुसमेंथीबहुतयारी ॥
दियाउसेफलइसेतुमखालेनासुन्दरिनारी॥ वेश्या
कीथीलगनभूपसेसोफलनृपकोदियाखरा॥राजा०
॥ ३ ॥ देखअमरफलनरेशअपनेमनमेंअतिअच
रजपाया ॥ पूंछाउस्सेसांचकहुतेरेपासकहाँसेये
आया ॥ वेश्यानेदहसतकेमारेनामसहिसकाबत
लाया ॥छोडउसीकूँएकदमचवेंदारकोबुलवाया ॥
उससेजबपूंछाराजानेउसनेरानीकाव्यानकरा ॥
राजा० ॥ ४ ॥ जिसकोमैंदिनरैनचहौंउसकेचित

चवेंदारबसा ॥ चवेंदारकाचित्तचंचलचातुरगणि
कासेजुफँसा ।उसवेश्याबेवकूफकादिलसेरीदोस्ति
दरख्यानठसा ॥ मुझकोतोअबआकरवैराग्यरूप
अजगरनेडसा॥ धिकरानीवेश्यानौकरधिककाम
सोहिंधिक्कारपरा ॥ राजा० ॥ ५॥ ऐसाकरविचा
रराजानेअसारसबसंसारतजा ॥ जाकरवनमेंश्र
लातनमनसेसीतारामभजा ॥श्रीरामानुजसंप्रदा
यगुरुतुलसीदासचरणोंकीरजा ॥ साधुगंगादास
नेइसलोकरूपरख्यालसजा ॥ जोकामिनिसेबचे
जगत्मेंउसकाअंतःकर्णठरा ॥ राजा० ॥ ६ ॥

इति लंगडी रंगतकी समाप्त ।

अथ रंगलावनी छन्दचौपैया ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ जयतिजयतिजयजयतिजय
तिजयरामानुजसुकृतपालं ॥ जययतिपतिज
यजयजगदीश्वरजयजगकारणकरुणालं ॥ टेक ॥

वंदेअस्मद्देशिकगुरुश्रीरामानुजनिजजनपालं ॥
जगतजनमियतिराजयतनकारि कृतसुबोधकृत
जगजालम् ॥ जिहिजिहियुगविनशतसुधर्मजगहो
इअधर्मअघविकरालम् ॥ तबतबप्रगटस्वधर्मथा
पिअनधर्मउथापिततकालम् ॥ निजआश्रित
तिहिदेतअभयपददुष्टसमूहनकहँकालम् ॥ जय
ति०॥ १ ॥ सतयुगमेंशेषावतारकृतसहसरसनधृ
तमुखआलम् ॥ त्रेतामेंलक्ष्मणलक्षणयुतधारिशरी
रखलदलकालम् ॥ द्वापरमेंबलरामधामबलधारिव
पुबहुबलिबलशालम् ॥ कलियुगमध्यप्रगटरामा
नुजकृतप्रवर्तशुभश्रुतिचालम् ॥ शाक्तजैन
शांकरकृपालमतमत्तगजगंजनहरिबालम् ॥ जय
ति० ॥ २ ॥शीर्षशिखासितवसनसुवेष्टितशशिस
मसुखहगसुविशालम्॥उदितप्रातमार्तंडअखंडित
ऊर्ध्वपुंड्रविलसितभालम् ॥ यज्ञसूत्रकटिसूत्रमेख
लाकंठनलिनतुलसीमालम् । योगयुक्तियुतयज्ञ

क्रियासयपज्ञरूपजनभयटालम् ॥ कौपीनदरको पीनकमंडलुकरत्रिदंडतरभृगछालम् ॥ जयति०॥ ॥३॥कारिदिगविजयविजयकियेदुर्जनआशुअजय अविगतलालम् ॥ मायावादि विवादनिरतुमल दहनप्रबलअगनीज्वालम् ॥ वृथावादवेदांतिध्वांतिविध्वंसिभ्रांतिभ्रमजंजालम् ॥ प्रबलप्रतापनगारिसमग्रसनत्रासकरनदुरजनव्यालम् ॥ श्रीगुरुतुलसीदासदयाते जाह्नविजननिगदित ख्यालम् ॥ जयति० ॥ ४ ॥

आषाढमासवर्णन।

कवित्त।

आई अषाढकि कारीघटा घहरानलगे बदरा चहुँफेरके॥ दूजे जो कंत विदेश गये सुधिपाईन नेक रही मग हेरिके ॥ उमराय स्वभावविहंग कहे मृदुवैनकहै जो सखी कहै टेरिके ॥ सोनेसों चोंच मढेहौंतेरी बलिजैहौंपपीहा पियाकहु फेरिके॥१॥

सावनमासवर्णन।

कवित्त।

कूकै लगीं कोकिलैं कदम्बनपै रातो दिन मोर पिक शोरहू सुनात चहूँपास है। मन्द मन्द गर्जत घनेरी घटा घूमि घूमि बहत समीर धीर संयुत सुवासहै॥ जित तित नारी नर गावैं सुखपावैं अति झूलतहिंडोरे लाल बाढतहुलास है। हिय सरसावनको काम सरसावनको बूँद बरसावनको सावन सुमास है॥ इति॥

हारचोरनलीला।

कहु राधाक्यहिं हारचुरायो। ब्रज युवती सबहीमैं जानति घर घर लैलै नाम बतायो॥ श्यामा कामा रसिका चतुरा नवला प्रमदा नारि। सुखमा शीला,अवधअनन्दा वृन्दा यमुना सारि॥ कपिला तारा विमला चन्द्रा चन्द्रावलि सुकुमारि। अमला अबला कुब्जा मुक्ता हीरा नीलाप्यारि॥ सुबर्ना

बहुला चम्पा जुहिला ज्ञाना आना भास । ऐसा दासा रूपा हंसा रंगा हरषा नाम ॥ झुमिला रूमा कृष्णा ध्याना मैना नैनारूपारत्ना कुमुदा सोहा करुणा ललना लोभानूप । इतनिनमें कहु कौने लीन्हेउ ताको नाम बताव । कृष्णबिहारी चोर तुम्हारे मैं जानति सब दांव ॥ १ ॥ इति ॥

विरहिनीविलाप ।

कवित्त ।

कारे कारे बादर डरावने लगत अब दादुरकी ध्वनि सुनि भूले दशा तनकी । बूँदकी झकोर झकझोर पुरवाई करै हरै मन मोर शोर चहूँ ओर वनकी ॥ हरीहरी लतिका करावैं घरीघरी याद इन्द्रगोपलखि लाल गुंजमाल गनकी । कृष्णबिहारीबिन लागै उर आर ऊधो पपीहा पुकार झनकार झिंगुरनकी ॥ इति ॥

रागलावनीछंदचौपैया।

श्रीगणेशायनमः॥ भूरिभाग्यगुरुदेवमिलेश्रीरा
मानुजमंगलकरणम् ॥ मंगलमूलसकलमंगल
निधिअखिलअमंगलदलदरणम्॥ टेक॥ द्राविड
देशदिनेशउदितहोयदशहुदिशादीपितकरणम्॥
प्रबलप्रतापतापतीक्षणलखिलगेदुष्टजन तनजर
नम् ॥ मायावादिकुहरअतिसंकुल वेदविरोधि
तिमिरितरुणम् ॥ तत्क्षणतिनकहँकियेविनाश
निजवाक्यप्रकाशनिकरकिरणम्॥ भूरि०॥ २॥
जैनउलूकअनेकअंधभयेबौद्धसुकुटमुदितकरणम्।
शैवशाक्तसबचक्रवाककापालिचकोरलगेइरणम्।
अभिमानीअद्वैतनिरंतरचोरलगेसबदुखभरनम्॥
हिंसपाषाणसकलनिंदकजन परशप्रभातत्क्षणग
रणम्॥भूरि० ॥३॥ करत्रिदंडसुप्रचंडअखंडनदंड
नपाषंडीबरनम्॥खंडनअघमंडनभूमंडलपंडितसु

त्तअघूतहृरनम् ॥पाखंडद्रुमखंडसघनदावानलहो यदाहनकरणम् ॥ चारवाकशठशैलसमहहतिश्यवज्रपातितघरणम् ॥ भूरि० ॥४॥भक्तभृंगआनंदकरनअतिअंबुजसमकोमलचरणम् ॥ चरममंत्रउपदेशकरतभवभीतजुजनआवतशरणम् ॥ श्रुतिविचारआचारनिरतअनचारभारततक्षणहरणम् । श्रीगुरुतुलसिदासपदआश्रितजाह्नविजन पोषणभरणम् ॥ भूरि ॥ ५ ॥

इतिलावनीछंदचौपैयासंपूर्ण ।

अथ शिक्षाक्काबत्तीसी प्रारंभ ।

श्रीः ॥ ककारेकर्मधर्मकुलरीतिसँभारो ॥ १ ॥ खखारेखाडेखूंचैपगमतिधारो ॥ २ ॥ गगारेगर्वछाँड़बेगर्वारहिज्यो ॥ ३ ॥ घघारेघरआयांकोआदरकरिज्यो ॥४॥ ङङारेनमस्कारनित्यसूरजदेवन ॥ ५ ॥ चचारेचतुरपुरुषकीसंगतिसेवन ॥ ॥ ६ ॥ छछारेछलीबलीकेसंगनहिंफिरिज्ये ॥७॥

ञजारेजगतसुहायोकारजकरज्ये ॥ ८ ॥ झझारे झगडैजायझूठमतिबोलो ॥ ९ ॥ ञञारेञ ञा ञायोंमतिडोलो ॥ १० ॥ टटारेटकापइसा भेलाकरिये ॥ ११ ॥ ठठारेठाकठोकबोबर्गाकर धरिये ॥ १२ ॥ डडारेडाकनर्कानिंदानहिकाजे ॥ १३ ॥ ढढारेढगढंगनसोदूरारहिजै ॥ १४ ॥ णणारेनातजातमेंपहिलीजइयै ॥ १५ ॥ ततारे तातोभोजनकबहुँनखइयै ॥ १६ ॥ थथारेथरकण विनादूधनहिंपीजे ॥ १७ ॥ ददारेदयाधर्महित चितसूंकीजे ॥ १८ ॥ धधारेधनदेकरनिधननहिं होजै॥१९॥ननारेनारायनलयनानितजोजै २०॥ पपारेपरमेश्वरकीआशाकरियै ॥ २१ ॥ फफारे फलवंतातरुवरपगधारियै ॥ २१ ॥ बबारेबणड बुरारकचरादेखिजे ॥ २३ ॥ भभारेभणवामें आलसनहिंकीजे ॥ २४ ॥ ममारेमातपिताकी आज्ञापालो ॥ २५ ॥ ययारेयादकरोगुरुदेव

सँभालो ॥ २६ ॥ ररारेरसवामेंवेलामतिखोवो ॥२७॥ ललारेलाभहानितनमनसुंजोवो ॥२८॥ ववारेवर्तमानकीविद्यालीजे ॥ २९ ॥ शशारेशङ्क परायेहाथनदीजे ॥ ३० ॥ षषारेषटकहैआराधन करजे ॥ ३१ ॥ ससारेसमझबूझपगआगे धरजे ॥ ३२ ॥ हहारेहँसताँहँसताँरारनकारिये ॥ ३३ ॥ ललारेलक्षणसीखकुलक्षणहारिये ॥ ॥ ३४ ॥ क्षक्षारेक्षमाकरैजासोंनितबोलो ॥३५॥ त्रत्रारेत्रणसमानमूरखमनतोलो ॥ ३६ ॥ ज्ञज्ञारे ज्ञानविनापशुपूंछविहाणो ॥ ३७ ॥ अ. अआरे अर्थ विनाविद्याधनकाणो ॥ ३८ ॥ आ. अआरे आदरसावसवनसोंकीजे ॥ ३९ ॥ इ. इइरेई श्वरकोसुमरणचितदीजे॥४०॥ई ईईरेईर्षाद्वेषत्याग जोमनकी ॥ ४१ ॥ उ. उउरेउधरइधरतोदेखो तनकी ॥ ४२ ॥ ऊ. ऊऊरेऊंचपदीपरमेश्वरदेसी ॥ ४३ ॥ ए. एएरेएकवारसुखदुखकीकहसी॥४४॥

ऐ. ऐऐरेऐसीकरणीतोकबहुँनरहिये ॥ ४५ ॥ ओ ओओरेओलंभोप्रभुकोक्यूँसहिये ॥ ४६ ॥ औ औऔरेऔरकासतोसबहीदूणा॥४७॥ अं. अंअंरे अंगहीनहरिभक्तिविहूणा ॥ ४८ ॥ अः. अःअःरे अःअःकरतोजलनहिंपीजै ॥ ४९ ॥ ऋ. ऋऋरे ऋणमाथेकबहूँनहिंकीजे ॥ ५० ॥ ऌ.ऌऌरेऌऌ करतोघरघरनहिंफिरजे॥५१॥ ॠ.ॠॠरेॠद्धिसि द्धिदाताहियधरिजे॥ ५२ ॥ दोहा ॥ यहशिक्षाब त्तीसको, जोकोइबांचैसार ॥ श्रीधरसांचाहेतसूँ, परजाकरैजुहार ॥ १ ॥ इति ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी विनती ।

छप्पय ।

जयतिराम सुखधाम काम अरिचाप विभंजन॥
जयतिबाहुबल अतिविसूढ नृपकुलमदगंजन ॥
जयति सत्यव्रत जनक कठिनतर प्रणपरिपालक॥
जयतिदेव दुष्करचरित्र माया नर बालक ॥

जयजयति मोहनी सहज छबि विवश नारि नर मनहरण॥ जय जयति नवल घन वरण श्रीराम चन्द्र करुणाकरण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी विनती।

छप्पय।

जयति यशोदानन्द सुखद सुर मुनि द्विजत्राता॥जयतिदेव वसुदेव देवकी अभिमतदाता॥
जयतिरासमण्डल विलास मण्डन गुणमण्डित।
जयति मत्त कन्दर्प दर्प भञ्जन अतिपण्डित॥
जय जयति नृत महिपाल मिष प्रबल दितिज कुलदलदरण। जय जयति कृष्ण प्रभु वपुधरण मम इच्छापूरण करण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीविष्णुजीकी विनती।

छप्पय।

जय जय धृत बटुरूप जयति सुरकारजपटुतर॥
रणमख बलिकृत दैत्य जयति बलिदैत्य दर्पहर॥

जयति तीनपग भुवन करन भयहरन भरनसुख। अशरण शरण दयालु दरणदुख अति सुन्दर मुख। जय जग पावन रावण दुखद वर अभीष्ट रस अघहरण। जय वामन वपुधर विष्णुप्रभु ममइच्छा पूरणकरण॥ १ इति॥

अथ चीरहरण लीला।

हमरो अम्बर देहु मुरारी॥ टेक॥ लै सब चीर कदम चढ़ि बैठे हम जल मांझ उघारी॥ तटपर विना वसन क्यों आवैं लाज लगतिहै भारी। चोली हार तुमहींको दीनो चीर हमहिं देव डारी॥ सुन्दर श्याम कमलदललोचन हम हैं दासि तुम्हारी। जो कछु कहौ सोइ हम करिहैं चरण कमलपर वारी॥ अँग अँग कम्पत कृष्णविहारी विनती सुनहु हमारी। सूरश्याम कछु छोह करोजू शीत भई अति भारी॥

अथ जलविहार लीला ।

राधे छिरकत छैल लबीली।कुच कुंकुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लट गीली ॥ बन्दन शिर ताटंक गंडपर रत्न जटित मनि लीली । गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली॥मचो खेल यमुना जल अन्तर प्रेममुदित रस झीली ॥ नन्दसुवनभुज ग्रीव विराजत भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली ॥ सूरश्यामश्यामा रस क्रीडत यमुना तरँग थकीली ॥ १ ॥

अथ चुगुलखोरनको कवित्त ।

चूकजात जौहरी जवाहिर परख जानै चूकजात पण्डित पढैया वेद चारीके । चूकजात घोड़ेको चढैया असवार पूरो चूक जात बाजे रोजगार रोज़गारीके । चूक जात मेघ मेघराजनकी बात

हूमें कैवो चूकजात या लिखैया लेखधारीके।
बाणकिरपाणको घलैया पूरो चूक जात एक
नहीं चूकेहै जुगुल कर्म्म स्वारीके ॥ इति ॥

अथ बाँसुरीलीला।

बांसुरीदीजेहोब्रजनारि ॥ १ ॥ कृष्णवचन ॥
कालिहसखीयहठौरबाँसुरीभूलिबिसारी ॥ लेजु
गईतुमधामढाकहमसुनीतुम्हारी ॥ नाहिंनतुम्हरे
कामकी, बंशीहमरीदेउ ॥ हम आतुर है माँगहीं
तुमनाहिजुनाहिंकरौ ॥ २ ॥ सखीवचन ॥ लंगर
कन्हैयाढीठतोहिंअब कौन पतीजे ॥ डारिदियो
कहिंऔरदोष हमहीको दीजे ॥ तुम ऐसे लंगर
केतके, माँगतहमसोंछाँछ ॥ चतुराईप्रभुछाँडिकै,
तुमकहानचाओहाथ ॥ ३ ॥ कैसीबंसीहोतनहीं
हमनयननदेखी ॥ बापतुम्हारेसाधुलालतुमबड़े
विवेकी ॥ इतउतखेलततुमफिरो, कहिं खेलत

बिसरीगई ॥ तेरी सौं बाबाकिसौंह, हमसुरली नाहिं लई ॥ ४ ॥ कृष्णवचन ॥ बंसीदेहु गँवारिकाहेकोरारिबढ़ावो ॥ मनमेंसमुझिविचारि काहेकोलोगहँसावो ॥ लोगहँसेंचरचाकरैं, मनमें समुझिविचारि ॥ बंसीहमरीप्रेमकी तुमकाहेनदेत गँवारि ॥ ५ ॥ सखीवचन ॥ हमकोकहतगँवारि आपनीकरतबड़ाई ॥ मारोंगुलचातानितनैबाबा कीजाई ॥ लैलकड़ीमुखपैधरी, बंसीताकोनाम ॥ जाघरतुमसेपुत्रहैं, उजरतवाकोगाम ॥ ६ ॥ कृष्ण वचन ॥ बसैकिउजरहोयनहींपरवाहतिहारी॥तुम सीहैंलखचारनंदघरगोबरहारी ॥ लाखरहैंदरबार खड़ी, लखआवैंलखजाँय ॥ लखनितउठिदरशन करैं, सुन्दरमनपछितॉंय ॥७॥ सखीकाबंसीदेना ॥ ग्वालिनचतुरसुजानबांसुरीआपहिदीन्ही ॥ मो- हनचतुरसुजानसांवरेहँसिकैलीन्ही ॥ लैबन्सीग्वा लिनमिली, घुंघुटबदनदुराय ॥ सूरदासप्रभुहारी

ग्वालिनि, जीतेयदुपतिराय ॥ ८ ॥ (श्रीकृष्णका मुरलीबजाना) लैबंसीयदुरायजाययमुनातटकीन्हीं ॥ सुरतेतीसौकोटिवहाँसरवनजोलीन्ही॥भक्तवत्सलसुखदायक, राखोसबकोनाम ॥ तिनमेंतुम प्रभुआपुहो गुणगावतसूरसुजान ॥ ९ ॥

इति श्रीसूरदासकृतवंशीलीलासमाप्त ॥

अथ नागलीला।

छंद ॥ शुभघरीशुभदिनमुहूरतनंदकेलालाभयो ॥ लाइयेब्रजराजपंडितसुरनरनकोदुखगयो ॥ धनिधनियशोदाभाग्यतेरेगोकुलाकोसुखभयो ॥ कंसआज्ञाफूलकारणकृष्णवनमालीभयो ॥ मारीगेंदगिरोयमुनामेंकूदिकालीदहगयो ॥ जहँनागसोवैनागिनिजागैकृष्णपहुंचेजाइकै ॥ करजोरिविनतीकरतनागिनिजाहुलालनभागिकै ॥ नहिंनागतुमरोशब्दपैहैजागउठिहिरिसाइकै ॥ नाग

जागैहमैंलागेअबतोभागेनाबनै ॥ होनिहोइसो होयनागिनिनागअबनाथेबनै ॥ करजोरिविनती करतनागिनि ऐसोललनमतिकहो ॥ जाकेसहस फनदोसहसजिह्वातासेसरवरिमतिलहो ॥ कंस केसँगपंसखेलैंनागकोसंहारिकै ॥ नागनाथब फूललादबगोकुलाकोजाबरे ॥ पीठठोंकिजगाय नागिनिनागउठो रिसाइकै ॥ अबसहसफन फुफुकारछाँडेकृष्णकालेहोगये ॥ कृष्णउठिजब गरुडटेरोगरुडपहुंचोधाइकै ॥ गरुडआवतनाग देखोनागकेमूर्च्छाभयी ॥ नागकेमूर्च्छाभयीतब कृष्णपहुंचेधाइके ॥ लादलीनाकमलडंडीनाग नाथेउजाइके ॥ करजोरिविनतीकरतनागिनि माँगिपीतमपाइहौ ॥ अहिवातदेयजुदाकेनंदन बंदिछोरकहाइहौ ॥ येजीतबतोनागिनिसोंयों बोलेअबतुविनतीक्योंकरे ॥ तेरोनागछीनहिं

सकैकेऊचरणचिह्न लखातरे ॥ कंसमारिनिज यशकीन्हसंतसबसुखपावहीं ॥ अबसूरकेप्रभु नागलीलारहसमंडलगावहीं ॥

इति श्रीनागलीला समाप्ता ।

अथ विद्याबत्तीसी ।

दोहा ॥ श्रीकृष्णकीशरणहूँ, सुधबुधिदेततका-ल ॥ विघ्नहरणसबसुखकरण, नमोनमोगोपाल ॥ १ ॥ गादीजोसलनगरकी, राजेश्वररणजीत ॥ यहविद्याबत्तीसिको, म्हेताकरीअजीत ॥ २ ॥ प्रातहिउठगुरुध्यानधर, प्रभुकेचरणसँभार ॥ सादरगणपतिसुमिरकै, करविद्याउपचार ॥ ३ ॥ कानासूंगुरुवाक्यसुन, मुखसोंकरोउचार ॥ फेरिहृदयधरकरलिखो, अक्षरनयननिहार ॥ ४ ॥ पंचवर्षसेआदिलै, करविद्याअभ्यास ॥ जबलग कारेकेशहों, छांडनविद्याआस ॥ ५ ॥ अक्षरमा

न्नाअंकशिख, फिरसंयोगविचार ॥ इनविद्याका पारनहिं, होयअपारअपार ॥ ६ ॥ तजछलआ लसअंगते, ढीलापनमतधार ॥ विद्याश्रमअरुल गनसे, सदासँभारसँभार ॥ ७ ॥ एकचित्तह्वैवै ठकरि, पूरणगुरुसेपाय ॥ सुधविद्याकूंसमझके, सीखोनितप्रतिजाय ॥ ८ ॥ थोड़ोहीपढ़बोभलो, श्रद्धासेनरश्रेष्ठ ॥ वेश्रद्धाकेविरुधहोय, बहुतपढ़े फिरकष्ट ॥ ९ ॥ क्रमक्रम विद्यासीखियां, मूरख पंडितहोय ॥ बूँदबूँदजलबरसियां, सागरपूरण सोय ॥ १० ॥ विद्याकोसंग्रहकरो, विद्यारत्नर सान ॥ विद्याजगमेंगुप्तधन, लोहाकंचनमान ॥ ॥ ११ ॥ कामधेनुयाजगतमें, जाहरविद्यायोग॥ मूरखनरसमझैनहीं, भुगतैअपनाभोग ॥ १२ ॥ विद्यारूपीव्यसनरख, राखहर्षहियमाहिं ॥ विद्या देशविदेशमें, मंत्रहोयकारिसाहि ॥ १३ ॥ हिम्म तकभहुँनहारिये, विद्यापढ़िबेमाहिं ॥ हिम्मतसे

कीमतबढ़े, देखविद्याकीछांहिं ॥ १४ ॥ पढबेमें कबहूँनहीं, खालीदिनमतखोय ॥ पीछेपछताना घणा, कारीलगैनकोय ॥ १५ ॥ भलिविद्याकी ज्ञासना, जासेसबसुधहोय ॥ विद्यासेभलपनमिले, पाछेबहुसुखजोय ॥ १६ ॥ विद्याकोसुखब हुतहै, छीसेहैअधिकाय ॥ वाघरमाहेसुखकरै, औघटमेंसुखथाय ॥ १७ ॥ मोटेकुलमेंजनमले, विद्या सीखीनाय ॥ धृकलीनोवाकोजनम, पशुसंज्ञामें आय ॥१८॥ विद्यासबकुलरीतिहै, नीचहिउत्तम दीख ॥ कुलकोकारणनाहिंहै, विद्यासोंनरतीख ॥ १९ ॥ राजकाजविद्याविना, कहाकरोपरबंध न्यायरीतिगुणरीतसब, विनविद्यानरअंध ॥ ॥२०॥ विद्यासेबुद्धीबढ़े, विद्यारोजीसार ॥ विद्या विनभागनखुले, बड़विद्याउपकार ॥२१॥ विद्यासे आदरमिले, विद्यामेसन्मान ॥ विद्यासेउक्तीबढ़े, विद्यायुक्तीज्ञान ॥ २२ ॥ विद्याविनबुद्धीनहीं

विद्याविननहिंसिद्ध ॥ विद्याविनवृद्धीनहीं, विद्या विननहिंरिद्ध ॥ २३ ॥ विद्यानुचोरनलगे,नरत्यों खूटेनाहिं ॥ ज्यूंखरचैत्यूँबहुबढ़ै, हैयशजगकेमाहिं ॥ २४ ॥ विद्यासागरहैबडो, विद्याकोनहिंछेह ॥ जोचाहोसोफललहो, विद्याबड़पनएह ॥ २५ ॥ विद्यारूपसभानमें, विद्यारूपविवाद ॥ विद्यारूप विरूपकी, विद्यारूपसंवाद ॥ २६ ॥ वैद्यकज्योतिपतरकमत, सबविद्याआधीन, विद्याविननरबेसुरत, कहाकरैपरवीन ॥ २७ ॥ कुलमेंविद्यावंत इक, दीपकहोयउजास ॥ अंधेरोसौशठनसे, कहाकरैपरकास ॥२८॥ दृष्टीविद्यावानकी, चहुँदिशिपहुँचैजाय ॥ विद्यामेंसबगुणबसें, विद्याविनानकाय ॥ २९ ॥ विद्यामेंलज्जातजो, देखोग्रंथ अनेक ॥ तंतसारसेप्यारकर, ऐसीधारौटेक ॥ ॥ ३० ॥ गुरूकृपाखातिरजमैं, भइजोबारंबार ॥ आछीबुधिभइशिक्षकी, विद्यासारंसार ॥ ३१ ॥

विद्यासोंदिग्विजयहै, विद्यासेसबजीत ॥विद्यासे पूरणपुरुष, होयअजीतअजीत ॥ ३२ ॥ बातां चतुराईविद्या, आसीकेदिनयाद ॥ जातांजुगांन जावसी, निभसीआदिअनाद ॥ ३३ ॥ धन है विद्यावानकूं, धनजननी धन तात ॥ धनधनहैगुरुदेवकूं, धनहैउनकीजात ॥ ३४ ॥ अरज करत अगजीतये, बहुतनसोंसेंबोध ॥ चूकभूलकूं जांचकर, शुद्ध करो कविशोध ॥ ॥ ३५ ॥ उगनीसौअट्ठारवैं, दीपमालशनिदिन्न ॥ कियोसँपूरणग्रंथकूं, पढैमनहुवैप्रसन्न ॥ ३६ ॥

इति श्रीविद्यावत्तीसीम्हेताअजीतकृतसंपूर्णम् ॥

प्रलम्बासुरवध लीला।

कबित्त ॥ एक ओर श्याम सुखधामसंग सखा लीन्हे राम अभिराम दूजोग्वालगनि लीन्हो है। फलको बुझावलागे खेलन सुमेल मिलि बाल

केलिखेलमें सरस रस भीनो है। असुर प्रलम्ब तहां ग्वालरूप आय मिलो बसाहीं चढ़ाय पीठ जाहै छलकीन्हों है। कसिकै मसकि वलि हँसिकै यों वशकीन्होंचसकि सक्यो न ससकनि प्राण दीन्हो है॥

दावानलपान लीला।

कवित्त॥ एकदिन महर महरि गोपी ग्वाल निशिवनवसि मति गति आरसमें भीनीहै। दावानल दुष्ट तहां आय चहूँ ओर छाय जाय लाय वनको जरायराखकीनीहै। लखिभयपाय ग्वाल पाहि त्राहि भाषी सुनि आंखिन मुँदाय आगि पान कीन्ही हीनी है। जहांज्योति जोमतम तोमहि गिलत देख्यो हरिदास तमजाने ज्योति गिलि लीनी है॥ इति॥

पनघट लीला।

कवित्त॥ गोकुलकी नागरी लै गागरी उमंगि चलीं रूप गुण आगरी उजागरी सुभायकै। नागर नवलनट ठाढ़ो पनिघट घाट पीतपट मुकुट लकुटिअटकायकै॥ आवैं जे भरनघाट ताको ढरकाइ देत लेत अपनाइ घटलाजनि घटायकै। निमिष बिसारिकै निहारैं ब्रजनारैं पतिव्रत पनिहारैं पैं निहारैं तट जायकै॥

चकई भौंरा खेलन लीला।

चौपाई॥ देमैया भौंरा चक डोरी। खेलत रहिहौंब्रजकी खोरी॥ हर्षि जननि आरे पर भाषे। तुमहितनये मोल लै राखे॥ लै आये हरि तुरत निकारी। भये मग्न हरिरंग निहारी॥ विहँसि चले फेरत चक डोरी॥ खेलत सखन संग ब्रज ओरी गोपिनकेयह ध्यान सदाई।नेक न अन्तर होहिं

कन्हाई ॥ मारग चलति तिन्हैं हरि रोके ।
खेलत मांझ जहाँ तहँ टोंके ॥ चकई भौंरा डोर
फिरावैं । तिनके भूषणसों अरुझावैं ॥ गेंदउरोज
न माहिं डुरावैं ॥ यहि विधि हरिसों अंग छुवावैं
कंचुकि फारि आपही लेहीं ॥ यशुदहि जाहि उर
हनो देहीं ॥ इति ॥

अघासुरवध लीला ।

दोहा-गावत खेलत हँसतसब, सखावृन्दगो साथ ।
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥
कवित्त ॥ अघओघ अघ नाम पापी अजगरतनु
धारि मुखफारि उन बाट सबै रोकि लीन ॥ मंद
रकी कन्दरसी सुन्दर निहारी ताके अन्तर गुवाल
सब गायन गमन कीन ॥ बहर दहन जोदहन
लागो तबै अहि धुनि सुनि श्याम ताके मुख
माहिं भये पीन॥मुख नहिं सक्योमीच भयोमीच

वश नीच आपै प्रभु कीन्हों ताको जीव निज ज्योतिलीन ॥ इति ॥

माटीखान लीला।

कवित्त ॥ आनि नँदरानीसों कह्यो है काहू आनि आज माटीखात देख्यो अबै तेरोरी नँदन मैं ॥ सुनत रिसाय सुत बोलिमुख खोलि देख्यो एकैब्रह्म दूजो भेद तीनोदेवतनमें चारौ वेद पांचो भूत छहौ ऋतु सातौ ऋषि आठौ वसु नवो ग्रह दशहूँ दिशनमें ग्यारहौ महेश औदिनेश बारहौ विलोकि तेरहौ रतन लोकचौदहौ वदनमें॥इति॥

छं०॥बैठेजोजेवननंदके सँग श्याम औ बलराम भोजन बने कै भाँतिके अब सुनौ तिनके नाम। पापर जलेवी और पूरी भात उज्ज्वल अति करे। मूंगकी है दालि सुन्दर चनाके व्यंजनधरे॥ चौपाई-मिश्रीदधिओदन मिश्रितकर । लेत

श्याम सुन्दर अपने कर ॥ आपनखात नंदसुख नामैं । सो छबि कहत कौन पै आवैं ॥

सोरठा-कोकारिसकैबखान, भाग्ययशोमतिनंदकी
गृहरह्यो रुचिमान,बालरूप जिनके सदन॥इति॥

पयछोडावन लीला ।

कवित्त ॥ बैठेश्याम सुन्दर यशोदा गोद आँगनमें अतिहिहरषयुत क्षीरपान करेहैं ॥ बारबार कहति जननि सुनो लाल मेरे क्षीर नहीं पिवौ हँसत ग्वाल खरेहैं ॥ जैहैं दन्त बिगारि अधिक क्षीरपान कीन्हे कवि हरिदासकहैं मातु सुख हेरेहैं । मुख झपि अंचर सो तब नंदलाल रहे देखि मातु छबि अतिमोद मन भरे हैं ।

वृंदावन वर्णन लीला ।

कवित्त॥श्याम सुखधाम वृन्दावनकी ललाम छबिराम अभिराम अतिभापी सुखदाईकी ।

बेलि भुजबेलिनकी तरुनरे येलिनकी बेलन चमे लिनकी महक सुभाईकी ॥ शाखा फल फूलनकी भार भरी झूलनकी यमुनाके कूलनकी अनुकूल ताईकी ॥ । शोभा मंजु कंजनकी भौंर पुंज गुंज नकी मंजुलके कुंजनकी रंजन सुहाई की ॥इति॥

कर्णछेदन लीला ॥

दोहा-महरि तबहिं हसि नंदसों, कहत भई कर जोर
हरिको कन छेदन करहु, होय मनोरथ मोर ॥

छंद-बाजी बधाई नंदके गुरु नारि सब हर्षित भई । प्रथम मुण्डनको कियो फिरि कर्णवेधनविधिलई॥ सुर निरखि अति मन हर्षसों तब सुमनकी झारि झर दई। धरिसुपारीपानपर तब नारि गुरुभेलीदई

दोहा-यहि विधि कनछेदन कियो, नारि उठीं तब गाइ । पहिराई ब्रजबधुन कहँ, सारी नई मँगाइ ॥

जानुपाणिविहरन लीला ।

कवित्त ॥ अकल अगुण अज अचल अनादि आदि अलह अनंत अंत जाको न कह्यो परै । पूरण परम पुरुषोत्तम प्रकाश पाँचौ पावक पुहुमि पौन पाणि परते परै । शिव सनकादि सरस्वती शेष श्रुतिजाहि जैसोहै सोकहि न सकत मति हूं हरै । सोई शिशुधारि रूप यशुदाको वसुधामें हँसिहरि धावै आवै जानुपाणि विहरै ॥

अथ शिक्षाबत्तीसी प्रारंभः ।
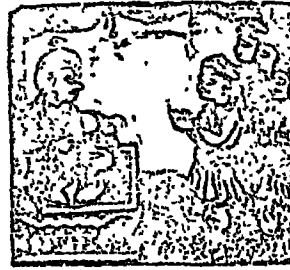
श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभविट्ठल प्रभू,गिरिधर गोविंदराय ॥ बालकृष्णगोकुलश्

यदूश्यामबनसाय ॥ १ ॥ गढ़जेसाणैपैतपै, रावल श्रीरणजीत ॥ यहशिक्षाबत्तीसका, मेहताकरी अजीत ॥ २ ॥ मंत्रीसेवनकीजिये, नृपसेवन केकाज ॥ केवलनृपनहिंसेविये, सेव्याहुवैअकाज ॥ ३ ॥ पहलोभयभगवान्को, भयदूजो भुवपाल ॥ तीजोभयलौकीकको, राख्यांविन मतचाल ॥ ४ ॥ देखइष्टअरिगुणपरख, पैदा खरचसँभार ॥ इयकककारजकीजिये, समयवि चारविचार ॥ ५ ॥ सबदिनहोयँनएकसे, समझ्र विचक्षणबात ॥ वरतनऐसीवरतिये, आदि अन्त निभिजात ॥ ६ ॥ खावोपीवोखर्चलो, करलोसुकृत काम ॥ तनमनधनथिरनहिंरहै, थिररहै गोविंद नाम ॥ ७ ॥ नितउद्यमकरिआपनो, नितगोविंद गुणगान ॥ नितविद्याअभ्यासकरि, नितप्रति बढ़ीसुजान ॥ ८ ॥ वृथाकालनहिंखोइये, वृथान बकियेवाद ॥ वृथानर्निदाकीजिये, वृथाशोचउन

हैराज ॥ १७ ॥ कलौकालसूंदूररह, धन नरधर्मछिपाय ॥ मूरखसचिवनकीजिये, तन कोजतनरखाय ॥ १८ ॥ वसीबखतबखथापनो विद्यारीतिविवेक ॥ सतसंगतिसंसारमें, इन समाननहिंएक ॥ १९ ॥ तनसुखधनसुखनारि सुख, सुखसंततिसुखराज ॥ सुखसुथानकवि मित्रसुख, पुनिपूरबसेसाज ॥ २० ॥ सीरहोय सोईमिलै, बिनासीरनहिंजान ॥ कर्मक्रियाबिन नाखुलै, विधिकेअंकप्रमान ॥ २१ ॥ शीत तपनवर्षासहे, प्रभुइच्छाप्रतिपाल ॥ सर्ववस्तु संग्रहकरो, प्रापतफलकोकाल ॥ २२ ॥ दिशा विदिशाकूंदेखके, तीखीतरकनिकाल ॥ स्वप्नां तरसोंख्यालहै, कटैआलजंजाल ॥ २३ ॥ थिरता तेविपदाकटै, यतनकियादुखदूर ॥ श्रमसेसुख उतपन्नहै, धर्मसेधनहैपूर ॥ २४ ॥ धरणीसे धरध्यानधृ, हदेहानश्रमजान ॥ धरणिलक्षीमा

जगतमें, ढकैदोषपरखान ॥ २५ ॥ जलअसीन केयोगसे, पैदायशजडहोय ॥ जोवोवैसोहीहुवे, मेहनतकारिफलजोय ॥ २६ ॥ रागवशीरसचोज ग,चंचलगुणजजलान ॥ धनखोवनकूमनहुवै करोप्रीतिगणिकान ॥ २७ ॥ रैसीसुखमेंमित्र सब, दुखमेंरहैनकोय ॥ विपतिविडारनकोखरो दुखमेंमंत्रीहोय ॥ २८ ॥ रीतरहेतेयशरहै, गयारीतसबजाय ॥ जनममरणयाजगतमें, रीत विनानहिंकाय ॥ २९ ॥ सबहीस्वारथकेसगे, परमारथकोकोय ॥ सोसोस्वारथसेसधै,परमारथ मतखोय ॥ ३० ॥ तजजारीतजतस्करी, तजपर द्रोहविज्ञान ॥ तजकुसंगतजकूटकृत, तज दुर्मतितजहान ॥ ३१ ॥ भक्तिकियाभगवत मिले, शक्तिकियासिधकाम ॥ भक्तिकियाआदर मिलै, युक्तिकियाजगनाम ॥ ३२ ॥ रसनरमी [illegible]

शीलसत, रखसंतोषसुषप्रीत ॥ ३३ ॥ जुरत
फुरतअरुसुरतसे ॥ सिधकारजसबहोय ॥ म्हेता
अजीतकोकियो, निश्चययहकारिजोय ॥ ३४ ॥
भूलचूकसबसमझके, कारिकविंद्रसुधसोध ॥ सुन
अजीतकीवीनती, मोमैंनहिंबहुबोध ॥ ३५ ॥
शतउनीसअठ्ठारवे, आश्विनसुदिदशराव ॥ भयो
समापतग्रंथये, कारिअजीतसिंहचाव ॥ ३६ ॥

इति शिक्षाबत्तीसीमेहताअजीतसिंहकृतसंपूर्णम् ॥

छंदघनाक्षरी ॥ छापेहैं सुधारकर विद्याअरु
शिक्षाजामें दोहराछत्तीसदूजे छत्तिसप्रमानहै ॥
विपतिविडारिवेको विद्यासोंनऔरकछु संपति
सुधारिवेमें शिक्षाबलवानहै ॥ कुसँगतिकेनाशि
वेकेविद्यासीनखड्ग और शिक्षाविनानरदेही पशुके
समानहै ॥ कहेकविश्रीधर श्रीरणजीतनरेशपे
मेहताअजीतसिंहमंत्रीबुद्धिमानहै ॥ १ ॥ कुंडलिया

छंद ॥ गादीजेसलनगरकी, श्रीरणजीतनरेश ॥ राजतअपनेदेशपै, मानौक्षितियदिनेश ॥ मानो क्षितियदिनेश धर्ममर्यादाजानै ॥ राजनीतिरस रीतिन्यायअन्यायपिछानै ॥ श्रीधरकवितारह मंत्रिकीबुद्धिअनादी ॥ सबसबसोसबदेशअटल श्रीनृपकीगादी ॥ २ ॥ दोहा ॥ पुष्करछायास च्यहै, परशुरामसुखधाम ॥ विप्रसलेमाबादको श्रीधरकविहै नाम ॥ ३ ॥

अथ शिवस्तुति प्रारम्भ ।

टेर ॥ भोलानाथअमलीम्हाराशंकरअमली ॥ बगियामेंभँगियाबुवायरखली ॥ काईबाडकाशी जीसाकाईजीपराग ॥ कांईबाडहरकीपीडीकांई जीकैलाश ॥ भोला० ॥ १ ॥ काशीजीमेंकेसर बोऊंचंदनपराग ॥ हरकीपैडीविजयाबोऊंधतुरो कैलास ॥ भोला० ॥ २ ॥ कांईमाँगेनाहियो

जीकाँईजीगणेश ॥ कांईमांगेभोलाशंभूयोगिया केभेस ॥ भोला० ॥ ३ ॥ दूर्वामाँगेनादियोजी मोदकगणेश ॥ विजयामांगेभोलोशंभूयोगिया केभेश॥भोला० ॥ ४ ॥ घोटघोटनादियोजीछाण तगणेश ॥ भरभरप्यालादेवेगौरा पीवैंभोलेनाथ॥ भोला० ॥ ५ ॥ आकडाकी रोटीपोऊंधत्तूराको साग ॥ विजयाकीतरकारीछिमकूँजीसेंभोला नाथ ॥ भोला० ॥ ६॥भूखोमांगेअन्नधन्नराजामां गेरूप ॥ कुष्ठीमांगेनिर्मलकायाबांझमांगेपूत ॥ भोला०॥ ७ ॥ भूखादेताअन्नधन्नराजादेतारूप॥ कुष्टीदेतानिर्मलकायाबांझेदेतापूत ॥ भोला० ॥ ॥ ८ ॥ नाचनाचनांदियोजीनाचजीगणेश ॥ नाचम्हारोभोलाशंभूयोगियाकेभेश ॥ भोला० ॥९॥घोटतगणेशबाबोछाण भैरूंनाथ ॥ भरभर प्यालापीवोम्हाराशंभूभोलानाथ ॥ भोलानाथ अमलीम्हाराशंकरअमली ॥ ब० ॥ १० ॥

इति शिवस्तुति संपूर्ण ।

अथ श्रीधरकृतकुण्डलिया ।

मूसाबिल्लीसोंकहै, सुनमंजारीबात ॥ डरतीरहियो बापडी, नहिंतोमारूंलात।नहिंतोमारूंलातहाथप गहोसीलूली॥वहतेरादिनगयाभरोसेभटकेमूली॥ कहश्रीधरकबिरायहुवोइकडंक्याघूसो ॥ समयब ड़ोबलवानकहैबिल्लीसोंमूसो ॥१ ॥छाली बोली सिंहसोंसुनहोवनकेराव ॥ सिंहयोगस्यालाभखै कीजैकौनउपाव ॥ कीजैकोनउपावतेजसतपुरुषा नाहीं । पूजनलगेअपूजपूजकहुँदेखेनाहीं ॥ कह श्रीधरकबिरायकालकरख्यालख्योल्याली ॥ सम यबड़ोबलवानसिंहसोबोलीछाली ॥ २ ॥ जोरू खाविंदसोंकहै, घूंसासोंघमकाय॥गुपचुपघरमेंघु सरहो,घीसोंरोटीखाय ॥ घीसोंरोटीखायरहोतुम मेरेपीछे ॥ मैंपौढूँगीसेजपरोतुमपौरीनीचे ॥ कह श्रीधरकबिरायजणेसुबसूरतछोरू ॥ समयबड़ोब

छवांनलईखाविंदसोंजोरू ॥३॥ दोहा ॥ श्रीधर सांचीबातसों, जोकोइराखतहेत ॥ समयपाय कैनीपजे, ज्योंकिसानकोखेत ॥ ॥ ४ ॥ कुँडलि या ॥ मानेलोचनयुगसबै, जानतहैनरनार ॥ त्रय लोचनविद्याकही, ताकीकरौविचार ॥ ताकीक रौविचार बालपनविद्यासीखो ॥ मानुषदेहअमो लबोलविद्याकोनीको ॥ श्रीधरकविताकहैसभामें आदरआनें ॥ जाकेविद्याकंठताहिकोराजामानै ॥ ५ ॥ राजासीखै नीतिको परजाकेहितकाज ॥ मंत्रीसीखेमित्रता, मानैमोटाराज ॥ मानैमोटारा जकाजविद्यासोंपावे ॥ हुंडीलिखेअपारसाहपद विद्यालावे ॥ श्रीधरकविताकहैसंपदामिलसी ताजा ॥ विद्यापढोसुजानमानसन्मानैराजा ॥ ॥ जानैपौरुषआपके, नहींबापकोकाम ॥ बलि बंधनकेकारणे, वामनपायोनाम। वामनपायोना मरामनिःक्षत्रीकीनी ॥ रघुबररावणमारभक्तको

लंकादीनी।श्रीधरकविताकहैगुणीसँगआदरआनै। करैकृष्णकोयादपिताकोकोइनजानै॥७॥पांचौकथापढ़ाइये, पंचाख्यानविचार॥ राजनीतिजाको कही, हितउपदेशअपार ॥ हितउपदेशअपार बाकपुनिकंठाकीनी ॥सुखपावैंसंतानसभामेंबात नवीनी ॥ श्रीधरकविताकहै पढ़ै सोई नरसांचो॥ चतुरकरै सब काज पढ़ै जो नीती पांचो ॥ ८ ॥ जामें मित्र मिलापहै' मित्रलाभ सोजान ॥ तामेंछूटैमित्रता, सुहृदभेदसोमान ॥ सुहृदभेद सोमानतीसरीविग्रहजानो ॥ युद्धकरावनरीतिपरस्परश्रद्धामानों ॥ श्रीधरकविताकहैसंधिचौथो मिलिजानौ ॥ पांचौलब्धप्रनाशमिलैफिरपाछी भानौ ॥ ९ ॥ दोहा ॥ श्रीधरशोभाजगतकी, विद्यानीतिविशेष ॥ स्वारथपरमारथसबै, विद्या विनयविवेक ॥ १० ॥

इति श्रीधरकृतकुण्डलियासमाप्त ॥

राधाजूकी प्रथममिलन लीला ।

कवित्त-खरक निकास श्याम सामुहें निहारत अचानकचखत चकचौंधीसीचमकिकै । गोरीसी ठगोरीसी निपट बैस भोरी भोरी कीरतिकुँवारि कोरि आवति ठमकिकै ॥ पागि गये प्रेमकी पग निहगचारि होत लागिगये मन दौरि दोऊके झमकिकै॥जानिकै पुरानी प्रीति नेह नयो मानि परजानको चहत चित चाहु यों चमकिकै ॥ दोहा-बतराने दोउ परसपर, अपनेहीं चित चाय। आवो मिलि सँग खेलिहैं, यों कहि भयो बिदाय

ब्रह्माजीकी स्तुति ।

कवित्त-मायनको गायनको चायनसों सुख देके बरसवितायो इहि मायन जबै हरी।तब सुधि कीन्ही विधिसुधि बुधि हीनी जानि मतिहि मलीन मानि दीनता हिये धरी॥ शोक उर छायो

निज लोक तजि धायो बालवत्स संग लायो ब्रज आयो रज आचरी। जोरी करढोरि शिर को टिक निहोरि करि बकशो किशोर कहि खोरि मैं करी खरी।

भजन कीर्त्तन।

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई। दशरथ सुत रामचन्द्र नंदके कन्हाई ॥ टेक ॥ रसनारस नाम लेत संतनको दरश देत विहँसत मुखचन्द्र मंद सुन्दर सुखदाई ॥ १ ॥ दशनदमक चतुरचा लखेन बैन दृग विशाल भृकुटी मनो अनल पाइ नासिका सुहाई ॥ २ ॥ केशरको तिलक भाल मानो रवि प्रातकाल श्रवण कुण्डल झलमलात रतिपति छबि छाई ॥ मोतिनकी गले माल तारा गण करविहार मानोगिरि शिखरपैंड सुरसरि चलिआई ॥ ४ ॥ सांवर तिरभंगअंग काछनिकर

कसि निषंग मानो मयाको छांः आपु बनि आई ॥५॥ सुर नर मुनि सकल दुः शिव विरंचि करत सेव कीरति ब्रह्माण्ड खंड तिहु लोक गाई ॥ ६ ॥ सखासहित सरयुतीर बैठे रघुवंश वीर हरषि निरखि तुलसिदास चरणन रजपाई ॥७॥

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी बारामासी ।
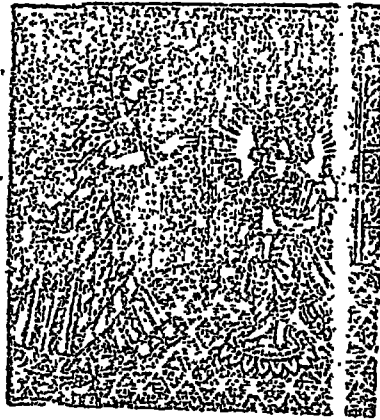
चैत्रअयोध्याजनमेरीराम ॥ चन्दनसोंलिपवा बेरीधाम ॥ गजमोतियनकोचौकपुराय ॥ सोने

फेकलशहियेमरवाय ॥ घरेघटमंदिर ॥ फलबेहुक
नारीबैरीनिवनबालकमोरे ॥ वैशाखमासकरुपी
पमलागि ॥ चलतपवनमानोबरसतआगि ॥ जै
सेजलबिनुतलफतमीन ॥ सोगतिहमरीकैकयीने
कीन ॥ दियेदुखदारुण ॥पठये० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ
मासलुअलागतअंग ॥ रामलषणऔरसीतासंग ॥
रामचन्द्रपदकमलसमान ॥ परचतधरतीऔर
असमान ॥ चलैंमगकैसे ॥ पठये० ॥ ३ ॥ आषा
ढ़मासघनगर्जतघोर ॥ रटतपपीहाकुहकतमोर ॥
ठाढ़ीकौशल्याअवधपुरधाम ॥ भीजतह्वैहैंलषण
सियराम ॥ खडेतरुवरतर ॥ पठये० ॥४॥ साव
नमेंसरसानेरीनीर ॥ कैसेधरैंकौशल्याधीर॥छोटी
छोटीबूँदनबरसतनीर ॥ भीजतह्वैहैंसियारघुवी
रुमकझड़लागी ॥ पठये० ॥ ५ ॥ भादौंमेंबरषै
नीरअपार ॥ घरअपनेसबहीसंसार ॥ गुंजतगुं
जिलझिरतभुजंग ॥ रामलषणऔरसीतासंग ॥

रैनिअँधियारी ॥ पठये० ॥ ६ ॥ लागोरीसखी मासकुँवार॥धरमकरतसबहीसंसार ॥ जोघरहोते लषणसियराम ॥विप्रजिमावतीदेतीमैंदान॥थाल भरमोती॥पठये०॥७॥लागोरीसखीकार्तिकमास। उठतकलेजेमेंदुखकीफांस ॥ घरघरदीपकजोवत नारि। मेरीअयोध्यापरीअँधियारि॥करीकैकेयी॥ पठये० ॥ ८ ॥ अगहनमेंसखिकरतशृंगार ॥ कपड़ासिमातीमैंसोनेकेतार ॥ पटपीतांबरकुल यकमान ॥ शिरमेंचीरजरदसीपान ॥ गले वैजंती॥ पठये०॥९॥ लागोरीसखीपूषजोमास ॥ रैनिभई जैसेखांडेकीधार ॥कुशआसनकैसे पौढेंगे राम ॥ कैसेकरैंवनमेंविश्राम ॥ भोजनभजरीके ॥ पठये० ॥ १० ॥ माहमासऋतुफूलेवसंत ॥ कैसेजियोंरी विनाभगवंत ॥ मेरीअयोध्याकेशिर केमौर ॥ ठाढेभरतजीढोरतचौंर ॥ वसंत करोरी ॥ पठये० ॥ ११ ॥ फागुनरंगरच्योसब कोय ॥ चंदनअतरसुगंधिततोय ॥ ठाढेभरतजी

छोरैंअबीर ॥ कापैछिड़कौंबिनारघुबीर ॥ कैकैयी करोरी ॥ पठये० ॥ १२ ॥ जोगावैयहबारहमास सोपावैबैकुंठनिवास॥कहतभवानीअवधपुरधाम॥ बनसेआयेलछणसियराम ॥ मिलेकैकेयीसों ॥ पठयेतुमना० ॥ १३ ॥

इति श्रीरामचन्द्रजीकीबारामासीसंपूर्ण ॥

अथ भरतजीकी बारामासी ।

श्री॥चैत्रपीछिलेपाखरामनौमीकोजन्मलियो॥

अवधपुरीसुखधामसखिनमिलिमंगलचारकियो। खबरिजबदशरथनेपाई ॥ दियेदानगजवाजिगाइ दिनथोरेकीव्याई ॥ सभासबप्रफुलितह्वैआई ॥ कर्मलेखनहिंमिटैकरोकोइलाखनचतुराई ॥ १ ॥ लागतहीवैशाखकैकेयीबावरिकारिडारी ॥ धिक जीवनधिक्कारभईजबतुमसीमहतारी ॥ दुखतैंने नगरकोदीनो ॥ तीनलोककेनाथरामतैंने बन बासीकीनो ॥ क्रूरमतिकैसीबनिआई ॥ कर्म लेखनहिंमिटै० ॥२॥ ज्येष्ठपंचमिलिकहीभरतको गादीबैठारौ ॥ भरतधरतकाननपरहाथनाथसोंहि गरदनक्योंमारौ ॥ सरैनहिंइनबातनकाजा ॥ तीन लोककेनाथरामवेअयोध्याकेराजा ॥ बातयह सबकेमनभाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटै० ॥ ३ ॥ आषाढ़आशाराममिलनकीमनमेंलागिरही॥राम कोनवनहमैंबतावौभरतजुबातकही ॥ नगरकेनर अरुसबनारी ॥ रथढोलागजवाजिभीरभइभरत

संगत्यारी ॥ नदीजैसेसागरकूंधाई ॥ कर्मलेख नहिंमिटै० ॥४॥ सावनशृंगबेरपुरपहुँचेभीरसईभा री॥भीलनकटकजोरिदललीनेलड़नेकोत्यारी ॥ भरतसेपूछिकैरारिकरो॥ रामलषणसियकाजतीर गंगाकेजूझमरो ॥ खबरयहभरतहुनेपाई ॥ कर्म ले० ॥ भादौंभरतभीलसेभेंटेभक्तजानिमनमें ॥ कंदमूलफलतोरिभीलनेभेंटकरीवनमें ॥ भीलजब अगुवाकरिलीनो ॥ भरद्वाजप्रयागआनिकेदरशन देदीनो ॥ प्रयागकीदुनियासबधाई ॥ कर्म० ॥ ॥ ६ ॥ कुवाँरकरीमहमानीमुनीनेपूंछीकुश लाता ॥ दोउकरजोरेदेतिपरिक्रमाकौशल्या माता ॥ आजमेरोजीवनसफलभयो ॥ इतनीबात सुनीमुनिनेजबआशिर्वाददियो ॥ भरतकीमाता समुझाई॥ कर्म० ॥७॥ कार्तिककूचप्रयागसेकीनो चित्रकूटआये ॥ वल्कलवचीरशिरशटाजूटसिय रामलषणपाये ॥ भरतजबचरणनजायपरे ॥

भरतउठायरामउरलायेनयननीरभरे ॥ भरत तुमभाईसुखदाई ॥ कर्म० ॥ अगहनवारंवारभरत कोरघुवरसमुझावैं ॥ भरतउलटिघरजाहुराज्यतुम करौअयोध्यामें॥लोगसबहींसुखपावैंगे ॥ चौदह वर्षबीतिजावैंगीजबहमहूंआवैंगे ॥ भरतकोऐसे समुझाई ॥कर्मरेखनहिंमिटै० ॥ ९ ॥ पूसमास सियरामलषणकेउरिगईभीरघनी ॥ जनकवशिष्ठ गुरूसमुझावैंकहैंअपनीअपनी॥विनतीबहुतभाँति कीनी॥रामआपश्रीचरणखडाऊंभरतहिंदैदीनी ॥ उलटघरजाउभरतभाई॥कर्म०॥१०॥माहमहीना भानिरामनेसुखपायोमनमें ॥जनकजनकपुरकोप हुँचायोभरतअयोध्यामें॥खडाऊँगादीधरिदीनी। रामचन्द्रतेकठिनतपस्याभरतहुनेकीनी॥ बडाई याहीसेंपाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटै० ॥ ११ ॥ फागुनफेरहरीसीताजबरावणवशकीनो ॥ रावण मारोरामराज्यजुविभीषणकोदीनो ॥ जीतिकै

अवधपुरीआये । शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक दरशनकोधाये ॥ रामकूँगादीठहराई ॥ कर्म लेखनहिंमिटैकरैकोइलाखनचतुराई ॥ १२ ॥ नवैसाललोंदकीभादौंअगहनगहनपरचो ॥ वांसबरेलीबैलालदासने रामनामउचरचो ॥ भरतकीयहबारामासी ॥ गावैंसुनैपरमपदपावैंकटैयमकीफांसी ॥ वेदसिलिऐसेहीगाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटैकरैकोइलाखनचतुराई ॥ १३ ॥

इति श्रीभरतजीकीबारहमासी संपूर्ण।

अथ वेणीमाधवजीकी बारहमासी।

कार्तिककिलोलकरैंसबसखियाराधाविचारकरैं मनमेरे ॥ माधौपियाकोआनिमिलावोनाहींतो प्राणतजौंछिनमेरे ॥ हमकोछांडिचलेवेनीमाधो राधाशोचकरैंमनमेरे ॥ १ ॥ अगहनगेंदबनाय सांवरेजायखेलैंतटयमुनाकेरे ॥ खेलतगेंदगिरोय

भुनामेंकालीनागनाथ्योछिनमेरे ॥हमको०॥ २॥
पूसमासहमसेछलकीनो आपचलेसैंयांमधुवनकूं।
तुमनँदलालजनमकेकपटी हमसोंकपटकियोमन
में ॥ हम० ॥ ३ ॥ माहमासपियाजाडोलगतहै
नींदनआवे मेरेनयननकूं ॥ हमकोयोगिनिकी
नीमाधोजीघरघरअलखजगावनकूँ ॥ ह०॥४॥
फागुनरंगबनायसांवरेजायखेलेसँगकुबिजाके ॥
फेंटगुलालहाथपिचकारीमारतहैंतकि २ घूँघटमें
ह० ॥ ५ ॥ चैतमासफूलेवनटेसूऊधोआयेसमुझा
वनको ॥ सुमरनहाथगलेमृगछालाअंगविभूतिल
गावनको ॥ ह० ॥ ६ ॥ मासवैशाखबैसमेरीबारी
आपनआयेसइयांमधुवनमें ॥ ऋतुग्रीषमअरु
बिरहसतावेविरहकीहूकलगीतनमें ॥ ह० ॥ ७ ॥
ज्येष्ठमें ज्वालाझुकेतनमेरेऊधोकहियोघरआवन
की । एकतोअकेली दूजे विरहसतावत आयगई

ऋतुबरषाकी ॥ ह० ॥ ८ ॥ लागेअषाढ़उमडि आयेबदराबिजलीचमकेमेरेआंगनमें ॥ चौंकिचौं किचहुँओरनिहारोंजैसेमीनफिरैजलमें ॥ ह० ॥ ॥ ९ ॥ सावनस्वामीहमसेछलकीन्होप्रीतिकरी जायकुबिजासे ॥ अहोनँदलालप्राणकेसेराद्द नहींआये श्यामवृंदावनमें॥ ह० ॥ १० ॥ भादौंभ वननींदनहिंआवैमोरवाबोलेयाहीमधुवनमें ॥ को यलहैमैंवनवनढूँढूँसूखेतालवृन्दावनके ॥ ११ ॥ बारहमासनिर्मलभयेचन्दा गोरीसोवैअपनेअंगन में ॥ सूरदासतबआनमिलेहरिसुखीभईराधासन में ॥ हमकोछांडचलेवेनीमाधौराधाशोककरैसन मेरे ॥ १२ ॥

इति वेणीमाधवजीकी बारहमासी संपूर्णम् ॥

श्रीकृष्णायनमः ।

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बारहमासी ।

प्रथममहीनाआषाढ़जोलागावर्षाऋतुआई ॥ प्रीतसहमरेश्यामसलोनेपातीभिजवाई ॥ कहोवे कैसेनहिंआये ॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीनेबिलमाये ॥ डालगएजादूकीफांसी ॥ श्रीराधागोपी त्यागकरीघरवारीकुबिजासी ॥ १ ॥ सावनमेंमन भावनहमतौदामनसोंलागी ॥ जबतोहमसोंप्रीति बढ़ीहरिअबकाहेत्यागी ॥ सुनौतुमऊधोमेरीसों ॥ छाजशरमकिगईप्रीतिजबकीनीचेरीसों ॥ नहीं

मोहिंआवतिहेहांसी ॥ श्रीरा० ॥ २ ॥ भादौंरैनि अँधियारीबोलेपीतमकीप्यारी ॥ अञ्जनआवैनींद नआवेसंकटअतिभारी ॥ मिटावेसंकटक्योंऊधो॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानतिहीसूधो ॥मारि गयेविरहकीगांसी ॥ श्रीरा० ॥ ॥ ३ ॥ लागत क्वारक्नागतआयेसबकोइधर्मकरै ॥ मैंभीधर्मक रौंगीजबहींप्रीतमनजरपरै ॥ मिलावैहैकोइ ऐसा ॥ लैअक्रगयोमथुराकोकारेयेरीकैसा ॥ कुब्जाकीनेअभिमानी ॥ श्रीरा० ॥ ४ ॥ कार्तिक कौतुक कियो कृष्णने इम सबको हजानी ॥ आखरजातअहीरश्यामकेकुब्जा मनमानी ॥ कंसकीहैआखिरचेरी ॥याहीतेदिनरै नआँखमेरीफरकतहैडेरी ॥ लगीमेरेजियकोचोरा सी ॥श्रीरा० ॥ ५ ॥ अगहनमेंमनचमकनलगा साधकुकतिहैछाती ॥ ऊधवहाथसँदेशाभेजावाँचो

रीपाती ॥ लिखौकुछतुमभीबालमकूं ॥ जोनमि
लोगेवेगिजियतनहिंपावोगेहमकूं ॥ हमारेजिय
केसुखराशी ॥ श्रीरा० ॥ ६ ॥ पूषमासमेंचलेगये
मेरेप्रीतमसेप्यारे ॥ काननलागेदूतकरीहमनयन
सेन्यारेहमैंयहमदनसतावतहै॥जियकेजारनकाज
सँदेशो ऊधोलावतहै ॥ खबरतुमलीजोअवि
नाशी ॥ श्रीरा० ॥ ७ ॥ माहमाहकेडाहपिया
तुमछोडीहमजानी ॥ रोवतिउठतिकराहिबातसब
ऊधौनेजानी॥ज्ञानकीबातेंदरशाई ॥ कृष्णहिदेहुँ
मिलायलायसबगोपीसमुझाई ॥ झूठसबहीकेमन
भासी ॥ श्रीरा० ॥ ८ ॥ फागुनफीकोलगेरैनिदि
नहोयरहीविसमें ॥पातीबाँचतक्षेमसखीयकयोंबो
लीरिसमें ॥ लगेअबसाहकरनचोरी ॥ हमरेजिय
तकान्हकितबांदीसँगखेलेंहोरी ॥ खबरमेरी
लीजैकेलाशी ॥ श्रीरा० ॥ ९ ॥ चैतचितामें

जरौंबरौं मैं गिरती कुइयाँमें ॥ कहियो सदन गोपालसंगकुबिजाकूंलेआमें ॥ कछू इनसौं तनको डरना ॥ हमगोपी दरशनकी प्यासी औरनहींकरना ॥ खबरमेरीलीजैब्रजवासी ॥ श्रीरा० ॥ १० ॥ लागतहीवैशाखसाखसबहीकेघरआई ॥ ऊधोजीनेजायकृष्णसोंऐसेसमुझाई ॥ पैजतुमहक्नाहकरोपी ॥ हाडमाँसगलिगयेबावरी ह्वैगईसबगोपी ॥ लेहिंगीकरवटह्नकासी ॥श्रीरा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठमासमेंमिलेकृष्णजबराधागोपीसे ॥ ब्रजवासिनआनंदभयोछूटेसबबाधासे ॥कृष्णकीयहबारहमासी॥ पढ़ैसुनैवैकुण्ठसिधारेछूटैयमकीफांसी॥ साँचयहमेरेमनमासी॥श्रीरा०॥१२॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रकी बारहमासी संपूर्ण ॥

श्रीरामचन्द्राय नमः ।
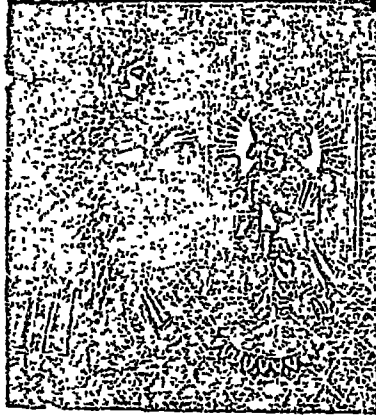
अथ कौशल्याजीकी बारहमासी ।

कार्तिककूचप्रयागसेकीनोकौशल्याशोचकरैंम
नमेरे ॥ रामलषणसियावनकूंसिधारेदशरथप्राण
तजेघरमेरे ॥ दरशनदेवोमेरेप्राणपियारेतुमबिन
कोईनहींऔरहमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलोजब
प्यारेदरदहोतमोरेतनमेरे ॥ चलतचलतजबपैयां
पिरानेकोईनतुम्हारौबाबनमेरे ॥ दर० ॥२ ॥ पूष
भरतजबचलेलेनकोसौतिनदाहभयोमनमेरे।मैंजा

नीरघुवरघरआयेहैं फूलीनसाऊँमैनयननसेरे॥दर
शन० ॥३॥ माहैमासभरतफिरआयेहूकउठीमेरे
उरमेरे॥ तलफतिफिरौंअयोध्यामाहींजैसेमीनफि
रैजलसेरे॥ दरशन० ॥ ४॥ फागुनफिरवैठेवन
माहींसीताहररखुनाजबमेंरे ॥ रामलषणअबढूंढ़
तहोंयगेवैदेहीकोकाननमेरे॥ दरशन० ॥५॥चै
तमेंचिंताकरैंभरतजीकैसेराज्यकरूंअबमैंरे। विन
रघुवरमेरोजीवननाहींमैंभीप्राणजौंछिनमेरे॥दर०
॥ ६॥ मासवैशाखभरतनहींमानोशोचभयोसब
नगरीमें रे॥ रामलषणप्रभुसीयसमेताध्यानधरौ
सनगिजवरमेरे॥ दरश०॥७॥ जेठमिलापभयो
सुग्रीवावालीप्राणहतेशरसे रे॥ वालीमारिशै
लफिरछायेताराविकलभईमन मेरे॥ दर० ॥८॥
लागो आषाढ़घुमड़रहेबदराशोचभयोअबमोमन
मैं रे॥ विनमोरेलालबागसबसूनेशोकपड़ोसबन
गरीमेंरे॥ दर० ॥९॥ सावनघनगरजतचहुँओ

तरायलक्षणसोरेपर्वतपैरे॥ तिनसियसंगशोन्दउर होयहैमेरेहूआणपरेउनमें रे॥ दुर०॥ १०॥ भादोंसेवंदरसवधायेपूरवपश्चिमदक्षिणमेंरे॥ कूद समुद्रहनुमान्लिपारेसीताखबरदईछिनमें रे॥ दुर०॥ ११॥ द्वारत्रिकूटलंकजवजारीरावणप्राण वसे उनमें रे॥ रावणमारिरामघरआयेआनँद वधाईसोगृहमें रे॥ दुर०॥ १२॥ देवीसिंह सियारघुवरकोध्यानधरैघरबाहरमें रे॥ तुम विनस्वामी कोईनहीं मेरापांयधरोअबमेरेशिर पैरे॥ दुर०॥ १३॥

इति श्रीकौशल्याजीकी बारहमासी संपूर्ण।

अथ जुगलकिशोरजीकीबारहमासी।

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ अषाढआशाकरोजु पूरणकरोकृष्णफेरी॥ कालीघटाघुमड़िचढ़िछाई पवनचलैसीरी॥ बिजलीचमकेहियशालरजधीर जनहिंधरती॥ बिनानीरजैसेमीनतलफैड्ढुखिया

दुखभरती॥१॥सावनसमझपरीमनमेरेआवैंगेबल
मा॥ सादीकरौपियाघरआवैंआईऋतुबामा॥ यो
बनखोलधरौंउनआगेअन्तरनहिंरखना ॥ सादी
करौंपियाघरआयेवेरसकीबतियां॥ २॥ भादौं
गहरगँभीरपियानहिंआयेरीमाई ॥ सूनीसेजतड
फरहिकामिनिविरहविथाछाई ॥ जलथलनीर
भरचोनदियनमेंचातकमरैप्यासे ॥ अपनेसुखके
लोगबहुतहैंकुटुंबसासुससुरे॥ ३ ॥ क्वाँरकरार
कियेसखियनसेनहिंआयेबलमा ॥ मैंनिरभागी
त्यागिपियापरदेशगयेरीमा॥ परदेशिनकाबुरासा
मलासुनिफाटैछाती॥ ४ ॥ वर्षागईशरदऋतुआ
ईनिर्मलभयेचन्दा ॥ कार्त्तिकसुन्दरखिलीचांद
नीडरपैजीमेरा ॥ शीतसमेरेबनेलहारियाऔछीचं
पकली ॥ अबकेबिछुडेरामिलावैंज्योंबरसेमो
ती॥ ५ ॥ मृगशिरभाग्यभरीनखशिखसोंशीश
फूलटीका ॥ काहिसखीरीपहिरिदिखाऊँपियवि

नरदरफीका ॥ ६ ॥ पूसपियापरदेशगयेकछुखब
रनहींपाई ॥ पंडितपूछोंऔरज्योतिषीकहांवसे
साँई॥महादेवपूजावलपाऊँमहादेवदेवा ॥ शंभुस
हायकरोनहमारी पूरीलच्छविचारी ॥ ७ ॥ माह
मासभोगीऋतुआईजोकाहूपैबनआवे ॥ तोसक
तकियासोउनिहालीपीवाकंठलगावे ॥ ८ ॥ शर
दीगईनर्समऋतुआईभइवसन्तकीत्यारी ॥ लालगु
लालफेटमेंबांध्योरंगभरीहैझारी ॥ फागुनफागसु
हागनखेलैंपियाभिजोवैंप्यारी ॥ कहाकरोंकछुवश
नहिंमेरोउफसुनआंसूजारी ॥ ९ ॥ चैतैचिंताल
गीजियामेंफूलोवनराई ॥ सुन्दरफूलखिलेमधुवन
मेंमैंएकलिसुरझाई ॥ १० ॥ सखैशाखलालभ
येकेसूश्यामवरणगोरी ॥ मोहिपियानेकछुनहिंकी
नोसोमोहवततोरी ॥ ११ ॥ जेठमासमेंधूपपड़ेहै
लगैकठिनभारी ॥ ऐसेमेंकोइ गैलचलेगाक्यों

हकरूंगहरी ॥ १२ ॥ जगन्नाथकीबारहमासीगा
वैयुगलकिशोरी ॥ सीखैसुनैपरमपदपावैऔरक
टैयमडोरी ॥ १३ ॥

इति श्रीयुगलकिशोरजीकी बारहमासी संपूर्ण ।

अथ गोपीबलदाऊजीकी बारहमासी ।

॥ श्रीः ॥ जीबलवीरगयेजबतेहरिआपनआयेन
पातीपठाई ॥ छलबलकीन्होहरिबहुतकहमसों
जाय बसेहैंसमुद्रतटमाहीं ॥ जपतपनेमकियेहरि
सोंहमसाधन्हायहरीबरपाये ॥ १ ॥ फागुनफागखे
लैंहरिहमसों कीन्हीप्रीतिकुबजासनमानी ॥ मामा
कंसमधुपुरीमासधारिदुष्टनकोप्रभुमारिगिराई ॥
॥ २ ॥ चैत्ररुक्मिणीपत्रलिखिभेजोदेखतपत्रकु
ण्डिनपुरजाई ॥ रुक्मिणिप्रियअतिलागीहरीकूं
प्रेमप्रीतिकछुकहीनजाई ॥ ३ ॥ मणिकेकाजगयेबे
शाखमोंजाम्बवंतसोंकीन्हलड़ाई ॥ जाम्बवतीभेंट

करीहरिकेतबसबसंकोचदीनमिटाई॥४॥ज्येष्ठमा
सप्रभुगयेश्रुतदेवकेविप्रभयेमनकोहरपाई ॥बहुला
श्वनामराजसुखदीन्हींभक्तनकेघरबजतबधाई ५॥
आषाढ़कामिनीसुखबहुदीनों आठोपहरत्रियाक
रैंसेवकाई ॥ गर्जतबादलचमकतबिजलीदादुर
शोरकरैंअधिकाई ॥ ६ ॥ श्रावणबूँदबरसतरुम
झुमसत्यभामासँगरहेलुभाई ॥ झूलतरंगहिंडोला
मोहनप्रेमतियनकेकहियनजाई ॥ ७ ॥ भादौंको
यलबोलतबनमेंपीवपीवपपिहारटलाई ॥ उन्नत
कामसतावतनिशिदिन हरिबिनजियकैसेसम
झाई ॥ ८ ॥ क्वाँरअगस्त्यजलसोखलियोहैपंथ
चलेजोमनुजसुखपाई ॥ पौंडककोवासुदेवसिधारे
काशिपुरीक्षणमाहिंजराई ॥ ९ ॥ कार्तिकदीपउजरैं
सबसखियाँघरघरआनँदबजतबधाई ॥ सोलह
सहस्रतियासँग रमतेएकसौआठ प्रभुके मन

थाई॥१०॥अगहनतिलकअनिरुद्धकोदीं हौसोंप आपअपनीप्रभुताई ॥ राजपाटसबहींसुखदीन्हों आनँदमंगलहर्षबधाई ॥ ११ ॥ पूषहरीहमसोंजद भेंटेकुरुक्षेत्रकोग्रहणनहाई ॥ बारबारमनहर्ष भयोअतिकिंकरप्रभुगुणकरतबड़ाई ॥ १२ ॥

इति किंकरप्रभुकृतगोपीवलदाऊजीकीबारहमासीसंपूर्ण ।

कुबरीसंगविहारवर्णनबारहमासी ।

श्रीगणेशायनमः॥टेर॥कृष्णअकेलेगयेद्वारकाछाँड़गयेसंबब्रजबाला॥कुबजादासीकंसरायकीमोहनपरजादूडाला॥आषाढ़आशाकरूंजितुम्हारीनारीअकेलीकुंजनमें॥हमकूंछाँड़िबसेजायकुबजासंगमाधोवनमें॥ दासीसेतीप्रीतिलगाईमोहलियावेरिनछिनमें॥ सौतहमारीजन्मकीवैरिनबिलमायाहरिनयननमें ॥पतियांलिखतीसतलबगरजीकैसेलिखूंदेगयेटाला ॥कुबजा०॥१॥ सावनआवनक

हगयेसजनहमसेमोहनवचनकिया ॥ मैंखड़ीदेख
तीराहसखीरीअजहुँनआयेकृष्णपिया ॥ तीजन
कोत्यवहारनगरमेंसबसखियांशृंगारकिया।काज
लटीकीदियेशीशपरबस्तरओढ़ेनयानया॥ श्याम
बिनामेरीसेजअलूनीबागनमेंझूलाडाला॥कुब०॥
२॥ भादौंमहिनेगणेशचौथहैसबसखियाँगणपति
पूजैं॥धूपदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचढैंलपटैंगुंजैं ॥ हाथ
जोड़करखड़ीजीराधिकानाथअरजमैंकहूंतुजे ॥
श्यामहमारामिलायदेवो बिनमोहनकछुनासूजै॥
इतनाकारजसारोगजानन ऋद्धिसिद्धिकेकरणेवा
ले ॥ कुब० ॥ ३॥ आसोजमहीनेदेवीअंबिकारा
धापूजैंअपनीगरज ॥ हाथजोड़करकहूंजिविन
तीमातामोरीसुनोअरज ॥ पियागयेपरदेशद्वारका
पिवकारणहुईपीलीजरद ॥ पीवपीवकरतीरैनदि
नयेतोमेरेबड़ादरद॥इतनाकारजसारोजीअंबिका

भेंटचढ़ाऊंछत्तरमाला ॥ कुब० ॥ ॥ ४ ॥ कार्तिकउत्तमबड़ामासहैसबसखियांकार्तिकन्हावें ।
बडेसबेरेउठकरहरिमंदिरहरियशगावें ॥ धुलैमहल अरुघरघरमंदिरआजदिवालीदरशावें ॥ पूजैंलक्ष्मीनारीनरपतिव्रतासबशिरनावें ॥ श्यामबिना मेरीसेजअलूनी औरजगतमेंउजियाला ॥ कुब० ॥ ५ ॥ मगशिरमेंमोहनघरनाहीं सोडगिंदवाभरवाती ॥ मैंतेरेवास्तेरेसमीपलँगबिछूनाकरवाती॥
आपबिगरमैंसोऊंजीअकेलीसूनीसेजफटैछाती ॥
दिलअपनेकूंशोचकैलाखजतनकरसमझाती॥ डालगलेमेंफांसिगयेब्रजवासिबतावोहमकोलाला ॥
कुब० ॥ ६ ॥ पौषरोष मैंकरूंजिकृष्णपरइसऋतुमें आयानाहीं ॥ सारीठंढकीनींद नहीं आवेमुझसे जमाहीं ॥ जाडानेमोयबहुतसतायारेकामनेडस खाई॥मैंझुरझुरपिंजरहुईआयचेहरेपरस्याईछाई ॥
ज्यूंज्यूंयादमोयआवैहृदयमेंत्योंत्योंबदनपड़ैकाला

कुब०॥७॥ माहमहीनेवसंतपंचमीजोघरहोतामेरा कंत।सबसखियनमेंखेलतीखूबमचातीआजवसंत मैंखेलनकोकैसेजाऊँनहींमिलेरीमुझकोकंत॥दिल अपनेमेंशोचकरबैठरहीमैआपनिचंत॥चैननहींदि नरैनसाँवरादरशनद्योमुरलीवाला ॥ कुब०॥८॥ फागुनमें मोहन घरनाहीं फागपियाबिन लागी अगन॥ गोराबदनमें बुझतीनाहीं आयकरो कोइ कोडजतन ॥ संगकीसहेलीबनिअलबेली होरी खेलेसंगसजन ॥ श्यामहमारा जायकर आप लगाइ कुबजासेलगन ॥ फागुन आगलगीजी बदन बिच तनके बीच उठी ज्वाला ॥ कुब० ॥ ९ ॥ चैत्रमहीना लग्यो सखीरी सब सखियांपूजे गणिगोर ॥ उनका बालम ल्यावसीहरीहरीदूबजीगुलातोर॥ मैंभीपूजूंभाइग वरजावेगिमिलावोमोहनचितचोर ॥ गयेद्वारका प्रीतिकरकुबजासोंहोगयेकठोर ॥ इतनोकारज

करोजिगवरजा नहिंतो हाथलेऊं माला ॥ कुब० ॥
॥ १० ॥ लग्यामासवैशाखग्यारवांग्रीष्मऋतु
आईहेली ॥ विनाश्यामकेवस्त्रसबत्यागगलेडालूं
सेली ॥ कितोबारवांमासबीचआवैंगेकृष्णमेरी
जोअली ॥ करकैयोगिनकाभेषजायढूँढूंगीकृष्ण
कूंगलीगली ॥ यहीनेममैंलियाजीवबिचराखोपत
मुरलीवाला ॥ कुब० ११ ॥ ज्येष्ठमासमेंपड़ैधूप
लूलागैंअंगमेराजीबले ॥ बेगिपधारोआयसाँवरा
लपटावोमोयआयगले ॥ बीतेबारामासआगयो
अधिकमासआगेज्योंभले ॥ लागे जो फरकने
अंगसबभुजानेत्रसुखामचले ॥ यहीशकुनपर
मिलैंकृष्णबांटूज्योंबधाईसबब्रजबाला ॥कुब०॥
॥ १२ ॥ अधिकमहीनेकृष्णपधारे राधेकूंदिया
दरशन ॥ कसअंगियादीजोटूटकर खुशीहुई
मनमेंपरशन ॥ श्यामपधारेआजसखीरीसबब्रज

होरहीहै धनधन ॥ बटैबधाईहोरहीखुशवक्तीसब हीकेमन ॥ प्रेमसागरमेंअमृतबरसैतनुकीतृषा मिटीज्वाला ॥ कुब० ॥ १३ ॥

इति श्रीकृष्णकुवरीसंगविहारवर्णन बारहमासीसमाप्त ।

अथ राधाजीकी बारहमासी ।

सावन विना गिरिधारी सूनीहै सेज अटारी ॥ सावनमें सब साँवरी, झूलत पियके संग ॥ हमरो

तौ नँदलाल विन, जरोंजात सब अंग ॥ भादौं
भवन ना आवे, नित रैनि विरहा सतावे ॥ भादौं
मैं मुहि कंतबिन घर अँगना न सुहात॥जैसे माखी
शहदकी. कर मलि मलि पछितात ॥ क्वारकमल
जल फूले, केहि देश विदेशी भूले ॥ क्वारमास मो
सब कमल, रहतहैं जलबिच फूल ॥ हमरे तो नंद
लाल बिन, उठै कलेजे शूल ॥ कार्त्तिक अधिक
दुःखदायी, उन बिन कछू न सुहाई ॥ कार्त्तिक
प्यारे कृष्णजी, केलि करैं चहुँ ओर । हमरो तो
बिन श्यामके भयो जात है भोर ॥ अगहन पड़न
लागो शीता, अजहूँ न घर आये मीता ॥
अगहनमों बिनश्यामके, रोमरोमभहरात । सुधि
आये छाती फटे, पाती लिखी न जात ॥ पूसै
पिया जो न ऐहैं, जीवत हमैं न पैहैं । पूस दुख
कासों कहौं, मोसो कहो न जाय॥उन बिन कोऊ
ऐसखी,नाहीं देत दिखाय॥ माहे न जग बिच चैन,

हमैं बिथा दिन रैन ॥ माहमासमें ऐ सखी, मरी जात बिन पीव ॥ जैसे खाल लोहार की, सांस लेइ बिन जीव ॥ फागुन फाग सब खेलैं, अबीर गुलाल रंगमेलैं ॥ फागुनमें यह शोचहै, हरिहैं केहिके संग ॥ हमरो तो यह शोचमें, सूखि गयो सब अंग ॥ ऋतुचैत सकल वनफूले, केहि देश सजनवां भूले ॥ चैतमासमों फूल सब, रहे सखीरी फूलि ॥ हमरो तो नँदलाल अब, रहो कहांहै भूलि ॥ वैशाखसाख क्या उसकी, जानी न बिथा मेरे जिवकी ॥ वैशाखमासकी थी खबर, अजहुँ न आये श्याम ॥ साखगई मोहिं श्याम बिन, नेक नहीं आराम ॥ जेठेतपनतन जारी, खन नीचे खन ज्ञात अटारी ॥ जेठ तपन मोरी ऐसखी, जारे देत है देह ॥ पिव सुखमें अस हम जरैं, ऐसो होत सनेह ॥ माहअषाढ जबलागा, परदेशी देशको

भागा ॥ आषाढ मास मों ऐ सखी, पिवनहिं आयेतीर। उनबिन दोनों नैनसे, रक्त बहै जिमि नीर ॥ लौंदमोहन सूरत आये, दुःख सब तनुके बिसराये ॥ लौंदमासमें आइके, कन्त लियो लपटाय ॥ तनुके दुःख सारेहरे, दियो सकल सुख आय ॥ १२ ॥ इति ॥

ललितासखीकी बारहमासी।

कौन उपाव करौं मोरी आली, श्याम भये कुबरी वशजाई ॥ चैत मास मोहिं मदन सतावै, वैशाख मास बहुतै दुखपावै, ज्येष्ठ मास तनुतपै घामज्यों, अंगचीर मोहिं एको न सुहाई ॥ आषाढमास घन घेरि आये बदरा, सावन मास बहै पुरवाई॥भादौं अगम पंथ नहिं सूझै, जलसे भरि गईं ताल तलाई॥क्वाँरमास घर श्याम न आये, कार्तिक दिपना अकाश बराई ॥ अगहन अग्रसनेह श्याम

बश, को पतिया हमारी लेजाई ॥ पूषमास मोहिं शीत सतावत, माघ विना पिय जाड न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलब केकरे सँग, विना श्याम अरुबिनु बलराई ॥ १२ ॥ इति ॥

बालमुकुंदकृत बारहमासी ।

शुरू आषाढ ऐ प्यारे ॥ छवैं बँगले जगत सारे, भरे आकाश घन कारे ॥ अजहुँ आया न निमोंई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई ॥ १ ॥ हुवा सावन शुरू जबसे ॥ जले दूना जिगर तबसे ॥ न पाया वो किसी ढबसे, बयस योंहीं सभीखोई॥ मिलावे मेरेदिलवर से, है ऐसा जक्तमें कोई ॥ २ ॥ ये भादों ने दिखाया रंग, करैं बिरहिनसों दादुर जंग ॥ जो होती प्राणप्रीत मसंग ॥ न डरपाता मुझे कोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ३ ॥ महीना क्वाँरका आया ॥ पिया

ने नेह बिसराया ॥ करे अब सौत मन भाया ॥ जलनतोहै मुझे सोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ॥ ४ ॥ महीना कार्तिकके आली ॥ घुजै घरघर में दीवाली ॥ हमें ये ऋतु गई खाली ॥ योंहिं हर रातभर रोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ५ ॥ कहांहैआय मिल मीता ॥ अरे मृगशिर तलक बीता॥ न छोड़े तव बिरह जीता ॥जलाकरक्या नफा होई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ६ ॥ महीनें पूषओ साजन ॥ बहुत ढूँढ़ा मैं बन जोगन ॥ न पाया पर तेरा दरशन ॥ मिलो अभिलाषहै योई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥७॥ आयफिर माहने घेरा ॥ न प्रीतमका हुवा फेरा ॥ लिया तरसाय बहुतेरा ॥ दिखा अब आय सुखलोई ॥ मिलावेमेरेदिलवरसे॥८॥मस्त फागुनमहीनाहै॥ ध्यानतें कुछ न कीना है ॥ उन्हींका सत्यजीना है ॥ जो सोवैं मिल जने दोई ॥ मिलावे मेरे दिल

बरसे ॥ ९ ॥ चैत चिंता हुई भारी ॥ न आये प्राण आधारी ॥ रहीरोती बिरहमारी । कवन अबदुःख असहोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ॥ १० ॥ लगा वैशाख ऐप्यारे ॥ विरहलूने जिगर जारे ॥ खबरले प्राण आधारे । प्रीत क्यों चित्त सेधोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे० ॥ ११ ॥ जेठ में मिलगया दिलदार ॥ सलूनो पायता उजियार ॥ सजनसँग सब करूँ त्योहार ॥ कथन नहिं बालकीगोई ॥ मिलावे मेरे दिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई ॥ १२ ॥

इति श्रीबालमुकुन्दकृतबारहमासीसम्पूर्ण ॥

अथ विरहिनीकी बारहमासी ।

महीना आषाढका आया । विरहका जल जगतछाया ॥ चलत पगछाड जिगरखाया । चमके बिजुली डरपै काया ॥ दोहा ॥ पवन शरद

तनु लगतही,उठै करेजे हुक ॥ कूक करै कोयल जभी, करेजिगरके टूक ॥ सेजहे खांडेकी धारे। तुझ विनाओ दिलवर प्यारे ॥ १ ॥ हुवा जब सावनका आवन ॥ हिंडोले मिल झूलैं कामन ॥ गावती मलारमनभामन।बरसता मेह दमकै दाम न ॥ दोहा॥ मैं बौरी देखूँखडी,थमैं नैन नहिं नीर॥ सावनमें क्योंबिछुड़के, दुखदीना बे पीर ॥ हुवा क्या भला दई मारे ॥ तुझ० ॥ २ ॥ महीना भादोंका बरजै ॥ घटाकालीशिरपर गरजै॥ देख अंधेर हिया लरजै। कामतनु चढ़ दौडा करजै॥ ॥दोहा॥ मरा पपीहा ना मरै, करै मेरे ढिग पीय॥ सुनत ताहिकी पीयपी, निकसत मेरो जीय॥ डरूँमैं लख बादर कारे ॥ तुझ० ॥ ३ ॥ महीना असौजका लागा। पियानेनेह सभी त्यागा॥कहो जाकर यहीकागा । तजाक्यों नेह अनुरागा ॥ दोहा ॥ हाय दई कैसी भई, डूबमरूँ कित

जाय ॥ खबर न उस दिलदारकी, कोऊ आयसु नाय ॥ मरी इसही गमके मारे ॥ तुझ० ॥ ४ ॥ लागा कार्तिक अति सुन्दर। होत उजियार सभी मंदर॥ताश गंजीफा और चौसर।खेलते नर नारी घर घर ॥ दोहा ॥ पूजतहैं श्रीलक्ष्मी, निज२ प्रीतम संग ॥ मुझ विरहनके हृदयमें, देखत उठत तरंग ॥ थके मेरे पौरुष सारे ॥ तुझ० ॥५॥ महीना आय गया अगहन। न पाया पर तेरा दरशन ॥ रहम खाकर आ मिल साजन ॥ करूँ वारी तुझपर तन मन ॥ दोहा ॥ बहुतेरा सम झात हौं, मनुवां मानतनाहिं ॥ बार२ येही कहै, चल प्यारेके पाहिं ॥ सभी समझायके हारे ॥ तुझ० ॥६॥पूषमें पड़ताहै पाला। बदन सगरा होवै काला ॥ खिले हैं नरगिस गुल्लाला ॥ हुई लख तुम बिन बेहाला ॥ दोहा ॥ पवन बहै सुख अति सरस, शीतल मन्द सुगंध ॥ हैचितचोर

कठोर हिय, तुझबिन कहँ आनंद ॥ जरा तो ध्यान इधरलारे ॥ तुझ० ७ ॥ महीना पूसरे आयासाह। बहुतमैं देखीतेरीराह ॥ हमैंयहऋतु खालीगइआह। तुझबिनाकैसे निर्वाह। दोहा ॥ फूलखिलेहरचमनमें, तरहरकेगुल ॥ भौंरे फूलों पर फिरैं, फिरते हैं बुलबुल ॥ तेरे बिन कांटेहैं सारे ॥ तुझ० ॥ ८ ॥ महीना फागुन का रंग गीर ॥ सभीरंगरँगें चोलियां चीर ॥ उड़ै रंगऔर गुलाब अबीर। हरतरफहै मस्तोंकीभीर ॥ दोहा ॥ देख २ ये ऋतु मेरे दिलते निकलै हाय ॥ तुझ बिन हेजानी जिगर, यों ऋतु खाली जाय ॥ मरीहरतरहबिनासारे ॥तुझ०॥९॥ चैतमें चित न मानै धीर। पड़ै गरमी ज्यों मारै तीर ॥ खिले टसूदे दिलकू चीर ॥ इन दिनों सुधि भूले बेपीर ॥दोहा॥ अरीचमेलीबावरी, कहा रिझावे मोय ॥ जो प्रीतम होतोनिकट, तौउ बतातीतोय ॥ पर

कहूँक्याहूँलाचारे॥ तुझ०॥ १०॥ लगावैशाख तपन परती। जलै अस्मान औ धरती॥ मैं तुझ बिन सेजपै जरती। रातदिनहै गमकी भरती॥ दोहा॥ सबनरनारी हँसतहैं, देखर समढंग। कोइकहै बौरी भई, कोईकहै पीभंग॥ सहूँनिशि दिन तपनि सारे॥ तुझ०॥ ११॥ जेठ जब लागा गर्म्मी पड़ी। बदनमें लुवे लवे है कडी॥ भलाकबआवैगीवोघड़ी॥ गले मिल तेरे खुशी होबडी॥ दोहा॥ अरे बावरे कागरे, कहा सुनावे कांय॥ मोरे भाग लिखो विरह, साजन मिलनो नांय॥ हायमें गये मासबारे॥ तुझ०॥१२॥ लौंदमें मिले गुरू घासी। कही सुन्दर बारहमासी॥ कथनकी बालमुकन्द आसी॥ है ठाकुरद्वारेका बासी॥ दोहा॥ ले आज्ञा गुरु देवकी, पूरण विश्वे बीस॥ चैत्र शुक्क तिथि अष्टमी, संवतसैं तालीस॥ सदा पडते हैं पोबारे॥ तुझ०॥ १३॥

इति बारहमासीसंग्रह संपूर्ण।

भांगके गुण।

कवित्त-मिरचमसालासंकफकासनीमिलायभांग खायेतेअनेकरोगअंगकेउबारती। जारतीजलन्धर भगन्दरकठोदरऔ बवासीरसन्निपातबावनवि डारती॥ कविशिवरामदादखाजको खराबकरि छींकछईछंजननसूरकोनिकारती। पीनसप्रमेहवी सबावनतरहकेरो कमर दरदको गरद करिडारती

ब्रह्मचारीकेलक्षण।

कवित्त-सहजवैराग्यकरैवासनाकोत्यागकरै इन्द्रिनविरागकरै आतमाविहारीहै। कर्मनिस कर्मकरैवेदविधिधर्मकरै मनमें न भर्मकरै द्विविधा नरधारीहै। सनातनज्ञानकरै परनारीआनकरै चैतन्यको ध्यानधरै याहीसुखकारीहै। अक्षरअ नन्यब्रह्मविधिकोविचारकरैऐसोब्रह्मचारकरै सोई ब्रह्मचारीहै॥ १॥

परमेश्वरसे क्षमा मागँने।

राम राम राम राम रामहीकाहूँ गुलाम सेवा आठ याम पर पर पलको न होती॥ राम राम सीता राम राम राम सीताराम रोम रोममें रमें हमेस इच्छा होती॥ धरा धर धरन भरन जग जगन्नाथ मेरे हू अनाथ पै जु दयादृष्टि होती॥ सीतापति राम राम सीतापति राम राम कृष्ण बिहारी मेरी कुदशा न होती॥

नामकरन लीला।

क०–आयेमुनि गरग पठाये वसुदेव भाये कारण करन नाम करन सोहायो है॥ स्वागत सुनाइ सनमानि नमनाय श्याम रामहीं बोलाइ ऋषि पाँय शिर नायो है॥ जनम बचाइ गुण गण गिनवाय मोह मापके न माय मन आनँद बढायो है॥ ब्रजकी लुगाइन बुलाय चित्त चाइन बजाय जाय दुहुँनको नाम धरवायो है॥

अथ गणेशस्तुतिप्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः ॥ छन्द॥ प्रथमसुमुखइकरदन कपिलगजकर्णसुखदायक ॥ लंबोदरपुनिविकट विघ्ननाशनजुविनायक ॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्ष शिरचंद्रगजानन॥ द्वादशनामप्रभातनित्यसुमिरो निजआनन ॥ विद्यारंभविवाहमेंगृहप्रवेशगमनेस दा।शुभश्रीगणपतिरटतचरनिरवीचनसंकट छिदा।

इति गणेशस्तुति समाप्त।

अथ बजरंगचालीसी प्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ बुद्धिहीनतनु जानिकै, सुमिरोंतनयसमीर ॥ बुधिविद्याबलदेहु मोहिं, संपतिसहितशरीर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जय हनुमानज्ञानगुणसागर । जयकपीशतिहुँलोक उजागर ॥ रामदूतअतुलितबलधामा । अंजनि पुत्रपवनसुतनामा ॥ महावीरविक्रमबजरंगी ॥

कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवर्णविराज सुवेशा। कुंडलकाननकुंचितकेशा॥ हाथवज्रअरु ध्वजाविराजे। कांधेमूँजजनेऊछाजे॥ शंकरसुवन केशरीनन्दन। तेजप्रतापमहाजगवंदन ॥ विद्या वानगुणीअतिचातुर। भक्तकाजकरबेकोआतुर॥ प्रभुचरित्रसुनिबेकोरसिया ॥ रामलषणसीतामन बसिया ॥ सूक्ष्मरूपधरिसियपहँआयो। बडोरूप धरिलंकजरायो॥ भीमरूपधरिअसुरसँहाऱ्यो ॥ श्रीरघुनाथकेकाजसँवाऱ्यो ॥ आनिसजीवनि लषणजिवाये। रामचंद्रतबकंठलगाये॥ रघुवर कीन्हींबहुतबडाई। अहोतातभारतसमभाई॥ सहसवदनतुम्हरेगुणगावैं। असकह्निरघुपतिकंठ लगावैं ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा। नारद शारदसहितअहीशा॥ यमकुबेरदिशिपालजहाँते। कविकोविदकहिसकहिंकहाँते ॥ तुमउपकार सुग्रीवहिकीन्हा। राममिलायराज्यपददीन्हा॥

तुमरोमंत्रविभीषणमाना ॥ लंकेश्वरभयेसबजग जाना ॥ जुगसहस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहि मधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं । जलधिलाँघिगेअचरजनाहीं ॥ दुर्लभकाजजगत मेंजेते । सुमिरतसिद्धिहोहिंसबतेते ॥ रामदुवारे तुमरखवारे । विनुआज्ञानहोइपैठारे ॥ सब सुखलहैतुम्हारीशरना । तुमरक्षककाहूकोडरना ॥ आपनतेज सँभारो आपै ॥ तीनोंलोकहाँकते काँपै ॥ भूतपिशाचनिकटनहिंआवै । महावीर जबनामसुनावै ॥ नाशै रोग हरै तनुपीरा । भजै निरंतर हनुमतवीरा ॥ संकटतेहनुमान छोडावै ॥ मनवचकर्मध्यानजोलावै ॥ सब पररामराजशिरताजा । ताकेकामहेतुसोछाजा ॥ औरमनोरथजोकोइलावै । तनमनवांछितफल सोपावै ॥ चारिउजुगपरतापतुम्हारो । हैपर सिद्धजगतउजियारो ॥ रामपियारेशंभुदुलारे ॥

साधुसंतकेतुमरखवारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिके दाता। असवरदीन्हजानकीमाता ॥ रामरसायन तुम्हरेपासा । सादरतुमरघुपतिकेदासा ॥ तुम्हरे भजनरामकोभावै । जन्मजन्मकोदुखविसरावै ॥ अंतकालरघुपतिपुरजाई । जहाँजन्महरिभक्त कहाई ॥ औरदेवताचित्तनधरई । हनुमत सेइ सकल सुख करई ॥ संकटहरै मिटै सब पीरा ॥ जोसुमिरैहनुमतबलवीरा॥जैजैजैहनुमान गुसाँई ॥ कृपाकरहुगुरुदेवकिनाँई॥यहशतवारपढै जोकोई।छूटैबंदिमहासुखहोई।जोकोइपढैबजरंगच लीसा॥होइसिद्धसाखीगौरीशा ॥ तुलसीदाससदा हरिचेरा । कीजैदासहृदयमहँडेरा ॥ ॥दोहा॥पव नतनयसंकटहरण, मंगलमूरति रूप ॥ रामलषण सीतासहित,वसहुहृदयसुरभूप ॥ इतिश्रीतुलसी दासकृत बजरंगचालीसीसंपूर्ण ॥

अथ महादेवलीला प्रारम्भ ।

मैंयोगीयशगायारेबाबामैंयोगीयशगाया॥तेरेसुत
केदरशनकारणमैंकाशीसेधाया॥पारब्रह्मपूरणपुरु
षोत्तमसकललोकजामाया ॥ अलखनिरंजनदेख
नकारणसकललोकफिरआया॥धनिधनितेरोभा
ग्ययशोदाजिनऐसासुतजाय॥गुणनबडेछोटेमत
भूलोअलखरूपधरआया॥ जोभावैसोलीजेरावर
करोआपनीदाया॥देहुअशीशमेरेबालककोअवि
चलबाढ़ैकाया ॥नामैंलेहौंपाटपटम्बरनामैंकंचन
माया ॥ मुखदेखूंतेरेबालककोयहमेरेगुरुनेलखा
या॥ करजोरेविनवैनँदरानीसुनयोगिनकेराया ।
कालापीलागौररूपहैबाघम्बरओढ़ाया ॥ कहुँडा
कनकीदृष्टिलगेगीबालकजातदिठाया ॥ जाकीदृ
ष्टिसकलजगउपजैसोक्योंजातदिठाया ॥ तीन
लोककासाहबमेरा तेरे भवनछिपाया ॥

रागबिलावल।

दिलदारमेरासामलायारदरशदिखाजा ॥टेक॥
तेरेबिनदेखेकलनापडतहैटुकमुखडादिखलाजा॥
जानकीदासभयेउदास निकसतनाहीं पापी श्वास।
मोरमुकुटपीताम्बरधारीमेरेनयनोंमेंसमाजा॥१॥
नंदद्वारइकयोगीआयोशृंगीनादबजायो ॥ शीश
जटाशशिवदनसोहायोअरुणनयनछबिछायो ॥
रोवतखीझतकृष्णसाँवरो रहतनहीं दुलरायो ॥
लियोउठायगोदनँदरानीद्वारेजायदिखायो॥६॥

वार्तिक।

अरी ललता, विशाखा, चंपकलता, रंगदेवियो नेक देखियो तो सही मेरे लालाको कहाहो गयो। कि ऐसो रोये खीझेहै, हंबे वीर लालाको कहा होगयोहै, अरीबीर। वो जोयोगी आयोथो वाहिने कछुक टोनो करगयोहै, हंबेवीर। वाकोटे रले इंबेवीर आऊंहूं-

चलरे योगी नंदभवनमें यशुमति माय बुलावें ॥ मटकत मटकतशंभू आवैं मनमें मोदबढ़ावें॥सात बेर पैकरमा करके राइ नून कर लीनो ॥ हाथफे र लालाके ऊपर कछुक मंत्र पढ़ दीनो ॥ व्यथा हुई सब दूर वदनकी किलक उठे नँदलाला ॥ खुशीहुई नँदजूकी रानी दीन्ही मोतिन माला ॥ रहुरेयोगी नंदभवनमें दाया हमपर कीजे ॥ जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दरशन दीजे ॥

वार्तिक ।

अरी यशोदा ! नेक लालाको लैयो तो सही दर शन करलेओं, फेर कैलासको जाऊंगो, कृष्ण लालको लाई यशोदा करअंचल मुख छाया।कर पसारचरणनरजलीनोशृंगीनादबजाया ॥ अल खअलखकरपाँयछुयेहैंहँसिबालककिलकाया । पांचबेरपरिकर्माकरके अतिआनन्दबढ़ाया॥हरि

कीलीलाहरमनअटक्योचितनहिंचलतचलाया। अलखब्रह्मांडकोटिकेनायकनंदघरहिंप्रगटाया॥ इन्द्रचन्द्रसूरजसनकादिकशारदपारनपाया॥ला गिश्रवणमंत्रदीनसुनाईहँसिबालकमुसकाया॥कौ नदेशकेयोगीहौतुमकौननामधरवाया॥ कहाँवा सयहकहतयशोदासुनयोगिनकेराया॥तुमहींब्रह्मा तुमहींविष्णूतुमहींईशकहाया॥ तुमविश्वंभरतुमज गपालकतुमहींकरतसहाया॥चिरजीवीसुतमहारि तिहारोहौंयोगीसुखपायो॥ सूरदासरमिचल्योरा वरोशंकरनामबतायो॥ इति॥

अथ श्रीराममल्लुलीला।

श्रीलक्ष्मणोविजयते॥ छन्दत्रिभंगी॥ सुतनृप दशरथकेअतिसमरथवीरसुरथकेधुरधारी॥ रघुनं दनबांकेछबिबलछाकेअनुजहुजाकेव्रतधारी॥ल क्ष्मणपदवंदनभरतअनंदनशत्रुनिकंदनशत्रुहने॥

कछनी शुभकाछेवीरसुवाछेरुचिरुचिआछेबनेठनैं ॥ १ ॥ जबदंडैकाढ़ैंआनँदबाढैमनोअषाढ़ैघनदरसैं ॥ बैठकीकरहिंजब चित्तहरहिंतब रंगधरहिंजब करपरसैं ॥ वंदीगुणगावैंउमंगबढ़ावैंगायसुनावैंवीररसैं ॥ लखिरमणविहारीछबिसुखकारी प्रेमसुवारीनितबरसैं ॥ २ ॥ खेलैंचकडंडैंकरैंघमंडैंनिजभुजदंडैहँसिहेरैं ॥ पुनिलेजमफेरैंभुजन्हतरेरैंहर्षितझेरैंभटभेरैं ॥ लैमुद्गरभावैंनालउठावैंतालबजावैं निजभुजकी ॥ रमणेशजुविधिहरकोटिकरतिवर वारौंछबिपरसाजुजकी॥ ३ ॥लखिदांवझपट्टैंझपटिलपट्टैंलपटिडपट्टैंदाँउलहैं ॥ लैभूमिपटक्कैंपटकिझटक्कैंझटकसटक्कैंफेरिगहैं ॥ दांवनकेठट्ठावीरसुभट्टा करैंसपट्टाछबिछावैं ॥ सिलिहत्थमहत्थागुत्थमगुत्थामत्थेमत्थाचपटावैं ॥ ४ ॥ इहिभांतिअगारे सुखदअपारेनिरखदहारेसुखपावैं ॥ मैंवरणोंकहँलौंजिह्विमहिजहँलौं प्रभुगुणतहँलौंतेगावैं ॥ सुद

मल्लसुलीलाअतिप्रियशीलारंगरंगीलाखेलजहाँ॥
खेलतअसुरारी अवधविहारी रमणविहारीलखत
तहाँ ॥ ९ ॥ इति श्रीकविरमणविहारीकृतरामम
ल्ललीला समाप्त ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीकीजन्मपत्रीप्रारम्भ ।

नंदजूसेरेमनआनंदभयोमैंसुनिमथुरासेआयो ॥
लगनसाधिज्योतिषकोगिनकेचाहततुम्हैंसुनायो
नंद० ॥ १ ॥ संवतसोमनामशुभभादौंकृष्णपक्ष
सोनामधरयोहै॥अरुअष्टमीबुधवाररोहिणीहर्षण
योगपरयोहै ॥ नंद० ॥ २ ॥ वृश्चिकलग्नउच्चके
उडुपतितनको अतिशुभकारी ॥ दलचतुरंगचढ़ें
मोहनकेहोंगेरसिकविहारी ॥ नंद० ॥ ३ ॥ चौथे

शनिकन्याकेदिनपतिमहिमंडलयहजीतैं ॥ करै विनाशकंसमातुलकोनिश्चय कुछदिनबीतैं ॥ नन्द० ॥ ४ ॥ पंचमबुधकन्याकोसोहैपुत्रबहैनाहिं कोई ॥ सुखमेंशुक्रतुलाकेसंयुतशत्रुबचैनहिंकोई॥ नन्द० ॥ ५ ॥ ऊंचनीचयुवतीबहुभोगेंसप्तमराहु परचोहै ॥ भाग्यभवनमेंमकरमहीश्वरईश्वरसबहि भरचोहै ॥ नंद० ॥ ६ ॥ श्यामवर्णमेंकेतुलक्षमें मनचीतेवेकरिहैं ॥ बालापनकेलक्षणइनकेचोरीमें चितधरिहैं ॥ नन्द० ॥ ७ ॥ नवविधुवसैलाभमें इनकेमीनबृहस्पतिकेरी ॥ पृथ्वीभारउतारनहारे मानिलेहुमतिमेरी ॥ नन्द० ॥ ८ ॥ यहसुनिनंद महरिआनंदेपूजिगर्गपहिराये ॥ अशनबसनगज बाजिसबीधनभूभंडारलुटाये ॥ नन्द० ॥ ९ ॥ बंदीजनयशगावतपावतसंतनकेमनभायो ॥ ब्रज जन्मेश्रीकृष्णमहोत्सवसूरविमलयशगायो ॥ नंद सुमेरेमनआनंदभयो मैं सुनिमथुरासेआयो१०॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रजीजन्मपत्रिका समाप्त ।
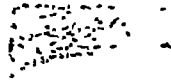
प्रभाती ।

जागिये कृपानिधान जानराय रामचन्द्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे ॥ राजिव लोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे ॥ मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खगनिकर मुखर मधु कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे ॥ मनो वेद बंदीजन सूतवृन्द मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ विक सत कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्याग कंज न्यारे ॥ मनो मन विराग पाय सकलशोक गृह विहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल

जागे अतिशयदयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंब टारे ॥ तुलसिदास अतिअनंद देखके सुखा रविंद छूटे भ्रमफंद परसमंद द्वंद्व भारे ॥

इति प्रभाती समाप्त।

अथ गंगालहरी।
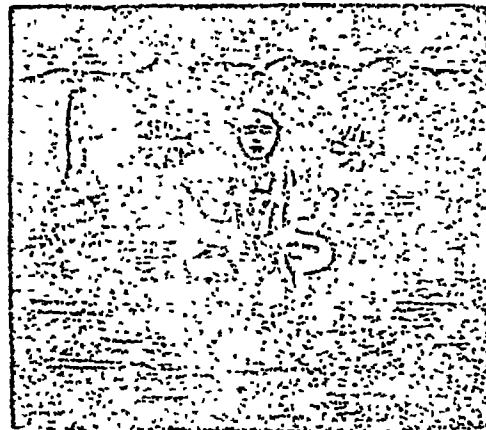
ख्याल—सागरकि गिनी जाँय लहर गिने जायँ तारे ॥ नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ षट शास्त्र गिनेजाँय गिने जायँ नर नारी ॥ दशदिशा

गिनीजाँयं सृष्टिगिनीजायसारी ॥ सिद्धसाधुगिनें
जाँय गिने जाँय आचारी ॥ राजा रानी गिने
जाँय सकल सरकारी॥गिने जाँय शाह शाहानी
गिने हलकारे ॥ नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजीके
तारे ॥ गिने जाँय नदी नद सिंधु गिने जाँय
नाले॥गिने जाँय श्वेतरंग लाल गिने जाँय काले॥
दरखत डाली जाँय गिनीगिनेजाँय डाले॥छत्तीस
रागिनीराग सकल गिनडाले॥गिनते गिनते कई
हजार सायर हारे॥ नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके
तारे ॥ खग चरिंद जाते गिने गिने जाँय
चातुर॥हरजात गिनी जाय नगर गिने जाँय घर
घर ॥ कागज स्याही जाय गिनी गिने जाँय
अक्षर॥सादर गिने जाँय गिने जाँय सागर सर ॥
क्या जाने गंगने कितने शठ निस्तारे ॥
नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ दिन रात
गिने जाँय गिने जाँय तिथि घड़ी ॥ गायत्री

गिनी जाय गिनी छन्दकी लड़ी ॥ शायर कायर जाँय गिने गिने जाँय कड़ी ॥ जंगम खेड़ा गिने जाँय गिनी जाँय जड़ी ॥ यह सत्य २ छंद काशी गिरि ललकारे ॥ नहिं जाँय गिने श्रीगंगा जीकेतारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिरयाद करना ।

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥लाखों पापी पृथ्वीपै रोज मरतेहैं॥ क्या कहों मैं वो यक क्षण भरमें तरते हैं॥मेरे भयसे भी जरा नहीं डरतेहैं ॥ गंगाके गण उनकी रक्षा करतेहैं ॥ विन भजन किये होता उनका निस्तारा ॥ गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥ हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई॥भंगी धोबी हड़फोड़ या होवे नाई॥

गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई ॥ फिर अंतसमयमें उसने मुक्ती पाई॥दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ जो मेरे दूत पापियोंको जायँ पकड़ने ॥ तौ गंगाके गण आवें उनसेलड़ने ॥ वो देख देख दूतोंको लगे अकडने ॥ और मारे बाण तनुबीच लगे वो गड़ने ॥ मैं लड़लड़के कईलाख लड़ाई हारा॥गंगाने बंदकरदिया नरकाकाद्वारा॥गंगासे सौ योजन पर एक नगरथा ॥ उस नगरमें इक पापीका ऊंचाघर था ॥ वहपाप कर्म कर करता रोज गुजरथा ॥ मरगया तो उसपर पडा एक कुत्तर था ॥ गंगाका धोया उसीने उसको तारा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले॥गंगाकी महिमा कहांलों कोई खोले ॥ इस नेबसे दर्शन श्रीगंगाके लो ले॥बैकुंठमें वह फिर झूले सदा हिंडोले॥

कुछ वशनहिं मेरा चले नचले तुम्हारा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधारिहैं ॥ तब वह पापी फिर कौन विधी कर तारिहैं ॥ उसकालमें जो कोइ पाप कर्म कर मरिहैं ॥ वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरिहैं ॥ यमराजजी अब थोडे दिन करो गुजारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ यह सुनी बात यमराजने घर फिर आये ॥ कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये ॥ मनमारके यह गंगाको बचन सुनाये ॥ अबतौ तुम्हरे थोडे दिन रह नेपाये॥ कहैंबनारसी कुछ यमका चला न चारा॥ गंगानें बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ इति ॥

अथ गर्भचिंतामणि प्रारम्भ ।

क्योंजन्मगँमावोरद्योरामरघुराई ॥ मानुषतनवा [illegible]नहिं पाई ॥ टेर ॥ नरनारीकेसंयोग

गर्भमेंजायो ॥ मलमूत्रमांसकोपिंडहोयहैरायो ॥ पगऊपरतलसेंशीशरहोलटकायो ॥ दुखगर्भवास कोदेखबहुतघबरायो ॥ पड़तेहीपिंडमेंजीवतनिक सुधिआई ॥ मानुषतन० ॥ १ ॥ अग्निजठरजहँ तपेपवननहिंआवे ॥ रहैजीवकैदमेंजराचैननहिं पावे ॥ करतासोंवारंवारअरजगुजरावे ॥ इसफंद सेबाहरजोकोइभांतिकरावे ॥ मैंजपूँतुझीकोआठ पहरचितलाई ॥ मानुषदेहवारंवारसहजनहिं पाई ॥ २ ॥ जबनिकसगर्भसूँमोहजालमेंआयो ॥ सबभूल्योकौलकरारराममबिसरायो ॥ माबापदेख सुतआनन्दकरेउछायो ॥ पंडितगुरुदेखैंदशाबहुत धनपायो॥ घरबजैनौबतांबटरहीनेगबधाई ॥ ॥ मानुषतन० ॥ ३ ॥ बालककुछस्यानोभयो खेलनेजावे ॥ नितनाचफंदमेंरहैसुर्तिनहिंल्यावे ॥ माबापलाडली सुरतदेखहरषावे ॥ व्याहनको सुन्दरयोगकर्हीबनजावे ॥ तिरियाफंदीनोडार

लेवैल्याई॥ मा०॥४॥बालकपनबीतोतरुणाईआ
राई॥नहिंभजनभावतेचित्तरहैमस्ताई ॥ तिरिया
सँगनिशिदिनरहैगलेलिपटाई॥ भयोगबापदीसी
मांयजवानीछाई।तिरियाफन्दमेंहोयअंधकरैचित
चाई ॥ मानुषतन० ॥ ५ ॥ नितअतरफुलेलसुगं
धअरगजाल्यावे॥ करउबटनमरदनअंगसुगँधल
गावे ॥ पचरंगीचीराबांधछैलबनजावे ॥ परति
रियातकतोनिजघरनीबिसरावे॥ धृकयोबनजिन
नेरामनामबिसराई॥ मानुषतन० ॥ ६ ॥ बालक
पनज्वानीबीतबुढ़ापाघेरा ॥ सबछुटेजगतकेस्वाद
मोहमदफेरा॥मुखकाननाकपगहाथथकेयकबेरा।
परवशहोकेपैकालआगयानेरा॥ दिनरहेविकल
तारातोनींदनहिंआई॥ मानुषतनवारंवार०॥७॥
देहछीजछीजरहगईहाडकीटट्टी ॥ मुखनयनझरे
दिनरैनभईदुरघट्टी ॥ सबघरकेमिलयोंकहैंमिले
कबमिट्टी॥ बेटानहिं मानतझुकमकरमकीपट्टी॥

घरकीनारीभीगारीदेवतराई ॥ मानुषतन०॥८॥ तनछीनमलिनमुखबिकलभयोअतिचारी ॥ मरनेसेतौहूडरेलगेजोंकारी ॥ यमदूतखडेचहुँओर भयंकरभारी॥मुसकोंसेलीनाबांधमूसलनमारी॥ लैखींचजीवकोचलेजहाँयमराई ॥ मानुषतन० ॥ ॥ ९ ॥ यमराजकोपकरकहीदुष्टलेआवो ॥ लोह खैंचगर्मकरदेहउसकीचिपकावो ॥ मुद्गरकीमारो मारजेरबंदल्यावो । अँतितोरभयंकरनरममाहिंछि टकावो ॥ जीवजंतुनरककेचूंटचूंटतनुखाई ॥मानु षतन० ॥ १० ॥ रहैजीवनरकमेंदुखीकहींनहिं जावै ॥ करणीकेभोगभोगकहापछावै ॥ फिरभु गतनरककोचौरासीमें आवै।देहदेहमेंभटकेजीवको टिदुखपावै ॥ यहिभांतिदुर्दशाप्राणीकीहोजाई ॥ मानुषतन० ॥ ११ ॥ हरिविमुखनकीयहदशा होतदोजखमें॥जैलालरटोनितरामनामहरदममें॥

गुरुपुरुषोत्तमकरयादगर्भप्रणघटमें ॥ फिरआय आगमनफंदतेराचटपटमें ॥ हैतारकमंत्रयहीवेद श्रुतिगाई। मानुषतनवारंवारसहजनहिंपाई ॥

इति गर्भचिन्तामणिसमाप्त।

रेखता बालमुकुन्दकृत।

जुबांसे हरघड़ी ऊधो वही प्रीतम निकलताहै॥ कहो जाकर मिलै [illegible] नहीं तो दम निकलता है ॥१॥ किया क्या जुल्म यह हमपर कहा करतेथे क्या हमसे ॥ वफादार इस जहाँ अन्दर मसलहै कम निकलताहै ॥ २ ॥ अरस्तूँ और अफलातूँ दवा करकरके सबहारे ॥ न हरगिजजख्मका मेरे कहीं मरहमनिकलताहै ॥ ३ ॥ कहो जाकर जरा ऊधोये बालक रामकी अर्जी॥मिलो इकबार फिर वर्ना जिगर बेगम निकलताहै ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीगणपतिजीकीआरती ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणपतिकीसेवामंगल मेवासेवासेसबविघ्नटरैं ॥ तीनलोकतेतीस देवताद्वारखड़ेसबअर्जकरैं ॥ टेर ॥ ऋधिसिधि दक्षिणबामविराजैंअरुआनंदसोंचमरकरैं ॥ धूप दीपऔलियाआरतीभक्तखड़्याजयकारकरैं ॥ गणप० ॥ १ ॥ गुडकेमोदकभोगलगतहैंमूष

कवाहनचढासैरें ॥ सौम्यरूपसेयेगणपतिकी विघ्नभाजज्यादूरपरैं ॥ गणप० ॥२॥ भादोंमास औरशुक्लचतुर्थीदिनदोपाराधूरपरैं ॥ लियोजन्म गणपतिप्रभुजीसुनिदुर्गामनआनंदसैरें॥ग०॥३॥ अद्भुतबाजाबज्याइंद्रकादेववधूजहँ गान करैं ॥ श्रीशंकरकेआनँदउपज्योनामसुन्यासबविघ्नटरैं॥ ॥ ग०॥ ४॥ आनिविधाताबैठेआसनइंद्रअप्सरा निरतकरैं ॥ देखवेदब्रह्माजीजाकोविघ्नविनाशक नामधरैं॥ ग० ॥ ५॥ एकदंतगजवदनविनायक त्रिनयनरूपअनूपधरैं ॥ पगथंभासाउदरपुष्टहैं देखचंद्रमाहास्यकरैं ॥ गणप० ॥ ६ ॥ दे शरापश्रीचंद्रदेवको कलाहीन ततकालकरैं ॥ चौदालोकमेंफिरैंगणपतीतीनभुवनमेंराज्यकरैं ॥ गण० ॥७॥ उठप्रभातजबकरेध्यानकोइताकेका र्जसर्वसरैं ॥ पूजाकालेगावआरतीताकेशिरयश

छत्रफिरैं ॥ गण० ॥ ८ ॥ गणपतिकीपूजापेला करणीकामसबीनिर्विघ्नसरैं ॥ श्रीपरतापगणपती जीकीहाथजोड़करस्तुतिकरैं ॥ गणपतिकीसेवा मंगलसेवा० ॥ ९ ॥

इति श्रीगणपतिजीकीआरतीसमाप्त ।

अथ लक्ष्मीरमणकी आरती ।

जयलक्ष्मीरमणाश्रीजयलक्ष्मीरमणाशरणागत जनशरणेगोवर्द्धनधरणा ॥ टेर ॥ जयजययमुना तटनिकटितप्रगटितपटुवेसा ॥ अटपटगोपीकुच तटपटहरनटभेसा ॥ जय० ॥ १ ॥ जयमुरलीरवत रलीकृतगोपीलीले ॥ तुवभक्तीमेंभवतुब्रजललना मीले ॥ जय० ॥ २ ॥ जयजयभगवन्भगवन् कंसारे ॥ पतितंपतितंकृपयातारेसंसारे ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥ जयजयगोपीप्रतिपालकबंधो ॥ कीमात्रा तूसशक्तकृष्णकृपासिंधो ॥ ज० ॥ ४ ॥ जयजयभक्त

जनप्रतिपालकचिरंजीवोजिष्णो ॥ मामुद्धर दीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ जय० ॥ ५ ॥ जयजय कृष्णास्वामीनिजपदरसगामें ॥ कुरुकरुणांकुर करुणादाससखारामें ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥

इति लक्ष्मीरमणाकी आरती समाप्त ।

अथ श्रीकृष्णजीकी आरती ।

आरतियुगलकिशोरकीकीजे॥राधेतनमनधन न्योछावरकीजे ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा॥ ताहिनिरखिमेरोमनलोभा॥आ०॥१॥गौरश्याम मुखनिरखतरीजे ॥ प्रभुकोस्वरूपनयनभरिपीजे॥ आरति० ॥ २ ॥ कंचनथालकपूरकीबाती ॥ हरि आयेनिर्मलभईछाती ॥ आ० ॥ ३ ॥ फूलनकी सेजफूलनगलमाला॥ रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला ॥ आर० ॥ ४ ॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै ॥ नटव रभेषदेखमनमोहै ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओढ्यानीलपीत

पटसारी ॥ कुंजबिहारी गिरिवरधारी ॥ आरती० ॥ ६ ॥ श्रीपुरुषोत्तमगिरिवरधारी ॥ आरति करतिसकलब्रजनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ नँदनंदन वृषभानुकिशोरी। परमानँदस्वामीअविचलजोरी॥ आरतियुगलकिशोरकीकीजे ॥ तन० ॥ ८ ॥

इति श्रीकृष्णजीकी आरती समाप्त ।

अथ त्रिगुणआरती शिवजीकी।

जयशिवओंकाराहरजैशिवओंकारा ॥ ब्रह्मा विष्णुसदाशिवअर्द्धंगीधारा ॥ टेर ॥ एकाननचतुराननपंचाननराजै ॥ हंसाननगरुडासनवृषभासन साजै ॥ जैशि० ॥ १ ॥ दोयभुजचारचतुर्भुजदशभुजतेसोहै ॥ तीनोंरूपनिरखतात्रिभुवनजन मोहै ॥ जैशि० ॥ २ ॥ अक्षमालवनमालरुंडमालाधारी ॥ चंदनमृगमदचंदाभालेशुभकारी ॥ जैशि० ॥ ३ ॥

श्वेतांबरपीतांबरबाघंबरअंगे ॥ सनकादिकप्रभुता दिकभूतादिकसंगे ॥ जैशि० ॥ ४ ॥ करमध्येकमं डलुचक्रत्रिशूलधरता॥ जगकर्ताजगभर्ताजगसंहारकर्ता ॥ जैशिव० ॥ ५ ॥ ब्रह्माविष्णुसदाशिवजानतअविवेका ॥ प्रणवअक्षरनुमध्येयेतीनोएका॥ जैशिव० ॥६॥ त्रिगुणस्वामीजीकीआरतीजोकोईगावै ॥ भणतशिवानन्दस्वामीमनवांछितपावै॥ जैशिव० ॥ ७ ॥ इतित्रिगुणआरतीशिवजीकी समाप्त ॥

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी।

जैअंबेगौरी मैया जै मंगलमूर्त्ती मैया जै आनन्दकरणी ॥तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्मा शिवरी ॥ टेर ॥ मांगसिंदूरविराजतटीकोमृगमद को ॥ उज्ज्वलसेदोउनैनाचन्द्रवदननीको ॥ जै अंबे० ॥ १ ॥ कनकसमानकलेवररक्तांबरराजै ॥

रक्तपुष्पगलमालाकंठनपरसाजै ॥ जैअंबे० ॥ २॥ केहरिवाहनराजतखड्गखप्परधारी ॥ सुरनरमुनिजनसेवततिनकेदुखहारी ॥ जैअंबे० ॥ ३ ॥ काननकुण्डलशोभितनासाग्रेमोती ॥ कोटिकचन्द्रदिवाकरसमराजतज्योती॥जैअंबे०॥४॥शुम्भनिशुम्भविडारेमहिषासुरघाती ॥ धूम्रविलोचननैनानिशिदिनमदमाती ॥ जैअंबे० ॥ ५ ॥ चौंसठयोगनीगावतनृत्यकरतभैरूं ॥ बाजततालमृदंगाऔरबाजतडमरू॥ जैअंबे० ॥६॥ भुजाचारअतिशोभितखड्गखप्परधारी ॥ मनवांछितफलपावतसेवतनरनारी ॥ जैअंबे०॥७॥ कंचनथालविराजतअगरकपुरबाती ॥ श्रीमालकेतुमेंराजतकोटिरतनज्योती ॥ जैअंबे० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ याअंबेकीआरती, जोकोइनरगावै ॥ भणतशिवानँदस्वामी, सुखसंपतिपावै ॥

इति श्रीदुर्गाजीकीआरती समाप्त ।

अथ आरती श्रीलक्ष्मीजीकी प्रारंभ ।
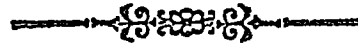
जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकूं निशिदिनसेवत हरविष्णूधाता ॥ टेर ॥ ब्रह्माणी रुद्राणी कमलातुहिहैजगमाता ॥ सूर्य चन्द्रमाध्या वतनारदऋषिगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ दुर्गारूपनिरं जनिसुखसंपतिदाता ॥ जोकोइतुमकूंध्यावतऋधि सिधिधनपाता ॥ जयल० ॥ २ ॥ तूहीहैपाताल बसंतीतूहीहैशुभदाता ॥ कर्मप्रभावप्रकाशकजग निधिसेत्राता ॥ जयल० ॥ ३ ॥ जिसघरथारो बासोजाहिमेंगुणआता ॥ करनसकैसोइकरलेमन नहिंधडकाता ॥ जयल० ॥ ४ ॥ तुमविनयज्ञन होवेवस्त्रनहोयराता ॥ खानपानकोविभवतुमैबिन कुणदाता ॥ जयल० ॥ ५ ॥ शुभगुणसुंदरयुक्ता क्षीरनिधीजाता ॥ रत्नचतुर्दशतोकूंकोइभीनहिं पाता ॥ जयल० ॥ ६ ॥ याआरतीलक्ष्मीजीकीजो

कोइनरगाता॥उरअनंदअतिउमँगैपापउतरजाता॥ जयल०॥ ७॥ स्थिरचरजगतबचावैकर्मप्रेरल्याता॥ रामप्रतापमैयाकीशुभदृष्टीचाता॥ जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता॥ तुमकोनिशिदिनसेवतहरविष्णूधाता॥ ८॥

इति श्रीलक्ष्मीजीकीआरतीसमाप्त।

अथसत्यनारायणजीकीआरतीप्रारंभ।

जयलक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा॥ सत्यनारायणस्वामी जनपातकहरणा॥ जय०॥ टेर॥ रत्नजडितसिंहासनअद्भुतछबिराजे॥ नारदकरतनिराजनघंटाध्वनिबाजे॥ जयल०॥ १॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विजकूंदरशदिया॥ बुड्ढोब्राह्मणबनकेकंचनमहलकिया॥ जय०॥ २॥ दुर्बलभीलकठारोजिनपरक्रपाकरी॥ चंद्रचूडयकराआजिनकीविपतिहरी॥ जय०॥ ३॥ वैश्य

मनोरथपायोश्रद्धातजदीनी ॥ सोफलभोग्यो प्रभुजीफेरस्तुतिकीनी ॥ जय० ॥ ४ ॥ भाव भक्तिकेकारणछिनछिनरूपधरचा ॥ श्रद्धाधारण कीनीजिनकाकाजसरचा ॥ जय० ॥ ५ ॥ ग्वाल बालसँगराजावनमें भक्तिकरी ॥ मनवांछितफल दीनोंदीनदयालुहरी ॥ जय० ॥ ६ ॥ चढतप्रसाद सवायोकदलीफलमेवा ॥ धूपदीपतुलसीसेराजी सतदेवा ॥ जय० ॥ ७ ॥ श्रीसत्यनारायणजीकी जोआरतीगावे ॥ भणतमनसुखसंपतिमनवांछित पावे ॥ जय० ॥ ८ ॥

इति श्रीसत्यनारायणजीकीआरतीसमाप्त ।

अथ पार्वतीदेवीकीआरतीप्रारंभ ।

जयपार्वतीमाताजयपार्वतीमाता ॥ ब्रह्मसनातनदेवीशुभफलकीदाता ॥ टेर ॥ अलिकुलपद्म निवासीनिजसेवकत्राता ॥जगजीवनजगदंबाहरि

हरगुणगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ सिंहजवाहनसाजे कुंडरहसाथा ॥ देववधूजहँगावतनिरतकरततत था ॥जयपा० ॥ २ ॥ सतयुगरूपशीलअतिसुंदर नामसतीकहाता ॥ हेमाचलघरजनमीसखियंन संगराता ॥ जयपा० ॥ ३ ॥ शुंभनिशुम्भबिडारेहे माचलस्थाता ॥ सहसभुजातनुधरकेचक्रलिया हाता ॥ जयपा० ॥४॥ सृष्टिरूपतुहिजननीशिव संगरंगराता॥ नंदीभृंगीवीनवहीपरचामदमाता॥ जयपा० ॥ ५ ॥ देवरअरजकरतहममनचितकूं लाता ॥ गावतदेदेतालीमनमेंरंगछाता ॥ जयपा० ॥ ६ ॥ श्रीपरतापआरतीमैयाकीजो कोइनर गाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहतासुखसंपति पाता ॥ जयपा० ॥ ७ ॥

इति पार्वतीजीकीआरतीसमाप्त ॥

अथ आरतीजानकीनाथजीकी।

जयजानकीनाथाजयश्रीरघुनाथा ॥ दोउ करजोड़ेविनऊंप्रभुमेरीसुनबाता ॥ टेर ॥ तुमरघु नाथहमारेप्राणपितामाता ॥ तुमहोसजनसंगाती भक्तिमुक्तिदाता ॥ जय० ॥ १ ॥ चौरासीप्रभु फंदछुटावोमेटोयमयाता ॥ निशिदिनप्रभुमोय राखोअपनेसंगसाथा ॥ जय० ॥ २ ॥ सीताराम लक्ष्मणभरतशत्रुहनसंगचारोभैया ॥ जगमगज्यो तिविराजतशोभाअतिलहिया ॥ जय० ॥ ३ ॥ हनुमतनादबजावतनेवरटिमकाता ॥ सुवरणथाल आरतीकरतकौशल्यामाता ॥ जय० ॥ ४ ॥ कीट मुकुटकरधनुषविराजतशोभाअतिभारी ॥ मनीरा मदरशनकीआशापलपलबलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥

इति [illegible] ॥

अथ आरती लक्ष्मणबालाजीकी।

जयबोलोसाचोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवो नंदलालाकी ॥टेर॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत ॥ जगमगज्योतिदिवालाकी ॥ ज०॥ १ ॥ त्रिपदी मेंसीतारामजीविराजैं ॥ चौकीहनुमतबालाकी॥ ॥ ज० ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपविराजो ॥ चौकीहनुमतबालाकी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जय विजयदोडपौंरियाविराजैं ॥ गरीधूसनगाराकी ॥ ज० ॥४॥ बालाजीकेरथपरकनकासिंहासन ॥ कलंगीबनीहीरालालाकी ॥ ज० ॥ ५ ॥ बृह स्पतिवारजरीकोजामे ॥ रूपरमौजदुशालाकी॥ ज० ॥ ६ ॥ शुक्रवारदूधकोन्हावण ॥ मौजबनी मोहनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देशदेशकेयात्री आवें ॥ मारपड़ैमृगछालाकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ आशानंदगरीबतुम्हारो ॥ पतिराखोवोकंठीमाला की ॥ज०॥९॥जयबोलोसाचोलक्ष्मणबालाकी॥

जनप्रतिपालकचिरंजीवोजिष्णो ॥ मामुद्धर दीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ जय० ॥ ५ ॥ जयजय कृष्णस्वामीनिजपदरसगामें ॥ कुरुकरुणांकुरु करुणांदाससखारामें ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥

इति लक्ष्मीरमणाकी आरती समाप्त।

अथ श्रीकृष्णजीकी आरती।

आरतियुगलकिशोरकीकीजे॥राधेतनमनधन न्योछावरकीजे ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा॥ ताहिनिरखिमेरोमनलोभा॥आ०॥१॥गौरश्याम मुखनिरखतरीजे ॥ प्रभुकोस्वरूपनयनभरिपीजे॥ आरति० ॥ २ ॥ कंचनथालकपूरकोबाती ॥ हरि आयेनिर्मलभईछाती ॥ आ० ॥ ३ ॥ फूलनकी सेजफूलनगलमाला॥ रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला ॥ आर० ॥ ४ ॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै ॥ नटव रवेषदेखमनमोहै ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओढ्यानीलपीत

कपुरायो॥राजजनकघरमंगलगायो ॥आ०॥४॥ कंचनथारकपूरकीबाती ॥ सुरनरमुनिहरिकेआये बराती ॥आ०५॥ राजादशरथऔरजनकवैदेही॥ भरतशत्रुहनपरमसनेही ॥ आ० ॥ ६ ॥ धनिध निरामलक्ष्मणदोउभाई । धनिदशरथकौशल्या माई ॥ आ० ॥ ७ ॥ मिथिलापुरमेंबजतबधाई॥ दास मुरारिकी आरतिगाई ॥ आ० ॥ ८ ॥

इति रामचन्द्रजीकीआरतीसमाप्त।

अथ शिवजीकी आरती प्रारम्भ ।

शीशगंगअर्द्धंगपार्वतीसदाविराजतकैलासी ॥ नंदीभृंगीनृत्यकरतहैंगुणभक्तनशिवकीदासी॥१॥ शीतलमंदसुगंधपवनबहैबैठेहैंशिवअविनासी ॥ करतगानगंधर्व सप्तसुररागरागनीअतिगासी॥२॥ यक्षरक्षभैरवजहँडोलतबोलतहैंवनकेवासी ॥ को यलशब्दसुनावतसुंदरभँवरकरतहैंगुंजासी॥ ३ ॥

कल्पद्रुमअरुपारिजाततरुलागरहेहैंलक्षासी । काम
धेनुकोटिकजहँडोलतकरतफिरतहैंभिक्षासी ॥४॥
सूर्यकांतसमपर्वतशोभित चंद्रकांतअवमीवासी॥
छहोऋतूनितफलतरहतहैंपुष्पचढ़तहैंवर्षासी॥५॥
देवमुनिजनकीभीड़पड़तहैं निगम रहतजोनित
गासी॥ब्रह्माविष्णुजाकोध्यानधरतहैंकछु शिवहम
कोफरमासी॥६॥ ऋद्धिसिद्धिकेदाताशंकरसदाअ
नंदितसुखरासी ॥ जिनकोसुमिरनसेवाकरताहूट
जायथमकीफांसी॥७॥ त्रिशूलधरजीकोध्याननि
रंतरमनलगायकरजोगासी॥दूरकरोविपताशिवत
नुकीजन्मजन्मशिवपदपासी॥८॥ कैलासीकाशी
केवासीअविनाशीमेरीसुधलीज्यो ॥ सेवकजान
सदाचरणनकोअपनोजानदरशदीज्यो ॥ ९ ॥
तुमतोप्रभुजीसदासयानेअवगुणमेरेसब ढकियो॥
सबअपराध क्षमाकर शंकरकिंकरकी विनती
सुणियो॥१०॥ इति शिवजीकी आरतीसमाप्त ॥

अथ पुनः आरतीशिवजीकी।

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुवशरणं ॥
नमामिशंकरभवानिशंकरहरहरशंकरतुवशरणं ॥
टेरदशभुजमंडनपंचवदनशिवत्रिनयनशोभितशि
वसुखदा ॥ जटाजूटशिरमुकुटविराजैश्रवणेकुँडल
अतिरमणं ॥ जैजैहे० ॥१॥ ललाटचमकत रजनी
नायकपन्नगभूषणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुशगणप
तिशोभाडमरूबाजतध्वनिमधुरा ॥ जैजै० ॥२॥
भस्मविलेपनसर्वांगेशिवनन्दीवाहनअतिरमणा॥
वामांगेगिरिजाहैविराजत घंटानादिकधुनिमधुरा
॥ जैजै० ॥ ३ ॥ गजचर्मांबरबाघंबरहरकपाल
मालगंगेशा ॥ पंचवदनपरगणपतिशोभापृष्ठेगि
रिपतिज्वालेशा ॥ जैजैहे०॥ ४ ॥ सिद्धेश्वरममले
श्वरशंकरकपिलेश्वरश्रीकोटेशा ॥ कपिलासंगम
निर्मलजलहैकोटितीरथेभयहरणा॥जैजैहे०॥५॥
नर्मदकावेरीजलसंगमम ध्येशोभितगिरिशिखरा॥

इंद्रादिकपतिसुरपति सेवितरंभाआदिकध्वनिरासु
रा॥जैजैहे०॥६॥मंगलमूर्तिप्रणवाष्टकशिवअद्भुत
शोभामृडभवनं ॥ सनकादिकमुनिकरते स्तोत्रं
मनवांछितशिवभयहरणं ॥ जैजैहे० ॥ ७ ॥ प्रण
वाष्टकपदध्यायजनेश्वररचयतिविमलंपदवाहं ॥
तवकृपयात्रिगुणात्मा शिवजीपतितनपावनभयह
रणं ॥ जैजैहे०॥ इति शिवजीकीआरतीसमाप्त ॥

अथ पुनः आरती शिवजीकी ।

दर्शनदेवोसदाशिवशंभूभक्तवत्सलतेरानामहवे॥
मस्तकतेरेचन्द्रविराजैशीशमध्यमेंगंगाहवे॥ टेर ॥
नाथहाथलियेडमरु बजावेभुजंगहृदयपरसाजहवे
तीनकोटिसवालक्षहजारेगणतेरेसन्मुखनाचहवे॥
दर्श०॥१॥ हाथत्रिशूललियाभोलेशंभूवामांगगव
रीसाजहवे॥ भस्मरमावतअंगतूसारेगलेरुंडमा
लाराजहवे॥द० ॥ २ ॥ कोडत्रिबंकेकोढअंगलवे
काहुकेवसनउघारेहवे ॥ काहुकेकेशमनेअतिपीरे

रक्तरंगकोडकालेइवे ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ आसन
तेराकैलासविराजतलहरीलीगंगाजहवे॥भांगधतू
रेसदारहैखातातलबाघंबरसाजहवे ॥ दर्शन० ॥
॥४॥ नारदइंद्रदेवसबदानवआरतीतेरोगावहवे॥
असीहिमानुषगावसुनेजेमनवांछितफलपावहवे॥
॥ दर्शन० ॥ ५ ॥ रूपकहैकरजोरसदाशिवमोरे
मनोरथकीजेहवे ॥ गुरुचरणोंमेंप्रीतिरहोनितवच
नसफलमेराकीजेहवे ॥ ६ ॥ दर्शनदेवोस० ॥
इति श्रीशिवजीकी आ० स० ॥

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी।

मंगलकीसेवासुनमेरीदेवाहाथजोड़तेरेद्वारखड़े।
पानसुपारीध्वजाखोपरा लेज्वालातेरेभेंटधरे ॥
सुणजगदंबेकरनविलंबेसंतनकाभंडारभरे ॥ संत
नप्रतिपालीसदाखुस्यालीजैकालीकल्याणकरे ॥

टेर ॥ शुद्धिविधातातूजगमातामेराकारजसिद्धकरै ॥ चरणकमलकालियाआसराशरणतुम्हारीआन परे॥ जबजबभीड़पड़ेभक्तनपरतबतबआयसहाय करे॥संतन०॥१॥ बारबारतैंसबजगमोह्योतरुणी रूपअनूपधरे ॥ माताहोकरपुत्रखिलावेकहींभार ज्याभोगकरे ॥ संतन० ॥ २ ॥ संतनसुखदाई सदासहाईसंतखड़ेजयकारकरे ॥ ब्रह्माविष्णु महेशसहसफण लियेभेंटतेरेद्वारखड़े ॥ अटल सिंहासनबैठीमाताशिरसोनेकाछत्रफिरे॥संत० ॥ ३॥ वारशनिश्चरकुंकुमवरणोजबलुंकडपरहुकुमक रे॥खड्गखप्रतिरशूलहाथलियारक्तबीजकूंभस्मकरे शुंभनिशुंभकुक्षणमेंमारामहिषासुरकूं पकडदला ॥ संतन० ॥ ४ ॥आदितवारआदकोबीराजनअ पनेकोकष्टहरे ॥ कोपहोयकरदानोमारेचंडमुंडसब चूरकरे ॥ जबतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंकटदूर करे ॥ संत० ॥ ५॥ सौम्यस्वभावधरयोमेरीमाता

जनकी अरजकबूलकरे ॥ सिंहपीठपरचढीभवानी अटलभवनमेंराज्यकरे ॥ दर्शनपावेंमंगलगावें सिद्धसाधतेरेभेंटधरे ॥ सं० ॥ ६ ॥ ब्रह्मावेदपढैंतेरेद्वारेशिवशंकरजीध्यानधरे ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरैंआरतीचमरकुबेरढुलायरहे ॥ जयजननीजयमातुभवानीअटलभवनमेंराज्यकरे॥संतन०॥७॥

इति श्रीदुर्गाजीकीआरती समाप्त ।

अथ पुनः आरतीदुर्गाजीकीप्रारंभ ।

सुनमेरीदेवीपर्वतवासिनितेरापारनपाया॥टेर॥ पानसुपारीध्वजानारियल लेतेरीभेंटचढाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ सुवाचोलातेरेअंगबिराजे ॥ केसरतिलकलगाया ॥ सुन० ॥ २ ॥ ब्रह्मावेदपढैंतेरे द्वारे शंकरध्यानलगाया ॥ सुन० ॥ ३ ॥ नंगेपगतेरेअकबरआया ॥ सोनेकाछत्रचढाया ॥ सुन० ॥ ॥ ४ ॥ ऊँचऊँचपर्वतबन्योदिवालो ॥

नीचेशहरबसाया॥ सुन० ॥५॥ कलियुगद्वापर त्रेतामध्ये॥ कलियुगराजसवाया॥ सुन०॥ ॥ ६ ॥ धूपदीप नैवेद्यआरती॥ मोहनभोगल गाया॥ सुन० ॥ ७ ॥ धानूभगतमैयातेराशुण गावे॥ मनवांछितफलपाया॥ सुन० ॥ ८ ॥

इति श्रीआरतीदुर्गाजीकीसमाप्त।

अथ बजरङ्गबालाकी आरती।

जाकेबलसेगिरिवरकंपे॥ देवपिशाचनिकटन हिंझंपे॥ आरतीकीजेहनुमानललाकी॥दुष्टदल नरघुनाथकलाकी॥ टेर॥ लंकासेकोटसमुद्रसी खाई॥ जातपवनसुतबारनलाई॥ १॥आर०॥ देबीड़ारघुनाथपठाये॥लंकाजारिसियासुधिल्या ये॥आर०॥२॥ जगमगज्जोतिअवधपुरराजा। घंटातालपखाउजबाजा॥ आर०॥ ३॥ शक्ती बाणलगोलक्ष्मणको॥ आनसजीवनलषणजि

गये ॥ आर० ॥४॥ पैठपतालतोड़यमकातर॥ अहिरावणकीभुजाउखाड़े॥आ०॥ ५ ॥ आरति कीजेजैसीतैसी॥ध्रुवप्रह्लादविभीषणजैसी ॥आर० ॥६॥ सुरनरमुनिजनआरतिउतारें ॥ जैजैजैकपि राजउचारें॥ आ०॥७॥ कंचनथालकपूरसुहाई ॥ आरति करतअंजनीमाई ॥ आर० ॥ ८ ॥ बाँई भुजासेअसुरसँहारे ॥ दहनीभुजअसुरसंतउबारे ॥ आर० ॥ ९ ॥ लंकप्रजारअसुरसबमारे ॥ राजा रामजीकेकारजसारे ॥ आर० ॥ १० ॥ अंजनि पुत्रमहाबलदायक ॥ देवसंतकेसदासहायक ॥ आर०॥११॥ लंकविध्वंसनसियारघुराई॥तुलसि दासकपिआरतीगाई ॥ १२ ॥ आर० ॥ जोहनु मानजीकीआरतिगावै ॥ बस बैकुंठ बहुरिनहिं आवै॥इति आरतिहनुमानजीकी समाप्त ॥१३॥

अथ आरतीजगन्नाथजीकी ।

आरतीश्रीजगन्नाथमंगलकारी ॥ परसतच रणारविन्दआपदाहरी ॥ निरखतमुखारविंदआपदा हरी॥कंचनमन धूपध्यानज्योतिजगमगी ॥ अग्नि कुण्डलघिरतपावपावसाथरी ॥ आर० ॥ १ ॥ भुवनद्वारेठाढेरोहिणीखड़ी॥ मार्कंडेश्वेतगंगाआन कभरी ॥ आर०॥ २॥ गरुड़खंबसिंहपौरियानाछ ड़ी॥यात्राकीभीड़बहुतबेतकीघड़ी ॥आर०॥३॥ सुरनरमुनिद्वारेठाढ़ेब्रह्मावेदउचरी ॥धन्यधन्यसूर श्यामआजकीघड़ी ॥ आर० ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ आरतीशिवजीकी ।

कैलाशीकाशीकेवासीअविनाशीमेरीसुधिलीजे॥ सेवकशरणसदाचरणनकोअपनोजानिकृपा कीजे अभयदानदीजेप्रभुमोरेसकलसृष्टिकेहितकारी ॥ भोलेनाथप्रभुभक्तनिरंजनभवभंजन भवशुभकारी

दीनदयालुकृपालकालरिपु अलखनिरंजनशिव
योगी ॥ मंगलरूपअनूपछवीलेअखिलभुवन
केतुमभोगी ॥ वांवोअंगरंगरसभीनोउमावदन
कीछविन्यारी ॥ भोलेनाथ० ॥ १ ॥ असुरनिकं
दनसबदुखभंजनवेदबखानेजगजाने ॥ रुंडमाल
गलव्यालभालशशिनीलकंठलियामनमाने ॥
गंगाधरत्रिशूलधरविषधरबाघंवरधरगिरिधारी ॥
भोले० ॥२॥ योभवसागरअतिअगाधहैपारउतर
कैसेसूजे ॥ यामेंग्राहमगरबहुकच्छपयोमारगकैसे
सूजे ॥ नामतुम्हारोनौकानिर्मलतुमकेवटशिवअ
धिकारी॥भोलेना०॥३॥ मैंजानूँतुमनिपटसयाने
अवगुणमेरेसबढकियो॥सबअपराधक्षमाकरशंक
रकिंकरकीविनतीसुनियो॥तुमतोजगकेकल्पतरु
होमैंहोंप्राणीसंसारी ॥ भोलेना०॥४॥ कामक्रोध
लोभमहाअपरबलइनसेमेरोबसनाहीं ॥लोभमोहयों
ठगनहिंकाँइआनहितनहिंत्रहताहीं ॥ कृपापूर्ण

नितलगीरहतहैताऊपरत्रूष्णाभारी॥ भोलेना० ॥
॥ ५ ॥ तुमहीशिवजीकर्त्ताहर्त्तातुमहीजगकेरख
वारे ॥ तुमहींगगनमगनपुनिपृथिवीपर्वतपुत्रीके
प्यारे ॥ तुमहींपवनहुताशनशिवजीतुमहींदिन
करशशिहारे ॥ भोलेना० ॥६॥पशुपतिअजरअ
मरअमरेश्वर योगेश्वरशिवगोस्वामी ॥ वृषभारूढ
गूढगुरुगिरिपतिगिरिजावल्लभनिष्कामी ॥ शोभा
सागररूपउजागरगावतहैंसबनरनारी ॥ भोले०॥
॥ ७ ॥ महादेवदेवनकेअधिपतिफणिपतिभूषण
अतिसाजे ॥ दीप्तिललाटलालदोउलोचनजि
नकेडरताडुलभाजे ॥ परमपुनीतपुनीतपुरातन
महिमात्रिभुवनविस्तारी ॥ भोलेना० ॥ ८ ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशशेषमुनिनारदआदिकरतसेवा ॥
जिनकीइच्छापूरणकीन्हीनाथसनातनहरदेवा ॥
भक्तिमुक्तिकेदाताशंकरसदानिरंतरसुखराशी ॥
भोलेना० ॥ ९ ॥ सुनिकाहसुमहेशजुं मि

सेंतुनेजेनितगावैं ॥ अष्टसिद्धिनौनिधिसुखसंप तिस्वामिभक्तिसुखीपावैं ॥ श्रीअहिभूषणप्रसन्न होमकरकृपाकरोशिवत्रिपुरारी॥भोलेना०॥१०॥

अथ आरतीबजरंगबालाकी।

आरती कीजे हनुमानजी ललाकी ॥ दुष्ट दलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेक ॥ जाके बलसे गिरिवर कांपे॥रोग दोष जाके निकट न झांके॥ ॥१॥अंजनी पुत्र महाबलदाई॥संतनकेप्रभु सदा सहाई ॥२॥ दे बीरा रघुनाथ पठाये ॥ लंका जारि सिया सुधि लाये ॥ ३ ॥ लंका ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई ॥ जातपवनसुत बार न लाई ॥ ४ ॥ लंका जारि असुर सब मारे ॥ सीता रामजीके काजसँवारे ॥ ५ ॥ लक्ष्मण मुरछिपरे धरणीसें ॥ आनि सजीवनि प्राण उबारे ॥ ६ ॥ पैठि पताल तोरि जमकातर॥अहिरावणके भुजाउखारे ॥७॥

बायें भुजा सब असुर सँहारे ॥ दहिने भुजा सब संत उबारे ॥ ८ ॥ सुर नर मुनि जन आरति उतारें ॥ जै जै जै हनुमानजी उचारें ॥ ९ ॥ कंचनथार कपूरकी बाती ॥ आरति करति अंजनी माई ॥ १० ॥ जो हनुमानजीकी आरती गावें ॥ बसि बैकुंठ अमर पद पावें ॥ ११ ॥ लंकविध्वंस किये रघुराई ॥ तुलसीदास स्वामी आरतिगाई ॥ १२ ॥

अथ आरती रामचन्द्रजीकी ।

आरती कीजे राजा रामचंद्रजीकी ॥ हरि हरि दुष्ट दलन सीतापतिजीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरति पुष्पकीमाला ॥ कालीनागनाथ लाये गोपाला ॥ ॥ १ ॥ दुसरी आरती देवकिनंदन ॥ भक्तउधारन कंसनिकंदन ॥ २ ॥ तिसरी आरती त्रिभुवन मोहे । रत्नसिंहासन सीतारामको सोहे ॥ ३ ॥ चौथी आरति चहुंयुग पूजा । देवनिरंजन स्वामी

और न दूजा ॥ ४ ॥ पंचमी आरति रामजीको भावे। रामजीको यश नामदेवजी गावे ॥ ५ ॥

पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी।

सखी आरती करी रसप्रेमभरी ॥ सिया रघुवरजीको शृंगारकरी ॥ टेक ॥ मणिमय थार सखिन करराजें बाती रवि शशिद्युति निदरी ॥ १॥ बाजतहैं भेरी निसान दुंदुभी शंख झांझ करताल धरी ॥ २॥ नाचत गानकरतहैं सखि थेइथेइ सुमन लाल मणि होत झरी ॥ ३ ॥ रामचरण सिय राम रूप लखि आनँद उर रससिंधु भरी ॥ ४ ॥

आरती श्रीवेङ्कटेशजीकी।

श्रीमच्छेषशैलवासं ॥ नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ व्रातःस्वपदपद्मदासं ॥ नीरदभव्यदिव्यभासं ॥ नी० ॥ बिभ्राणंसततरविप्रतिभटं ॥ हरिखचित चामीकरमुकुटं ॥ भृंगप्रभकुटिलालकजालं ॥

केसरसृगमदतिलकितभालं ॥ भ्रूविभ्रमकृतमन्मथ
कार्मुकजयनं ॥ इंदीवरदलविशालनयनं ॥ तिलकु
सुमप्रतिमोत्तमनासं ॥ बिंबविडंबकृताधरवासं ॥
स्निग्धामलतलगंडमंडलं ॥ कर्णयुगार्पितमकर
कुंडलम् ॥ शारदचंद्रमनोहरवदनं ॥ कुंदसुन्दरमणि
करदनं ॥ स्वजनानुग्रहशुचिमंदहासं ॥ नीराजये
श्रीनिवासं ॥ १ ॥ कंबुकंठमतिपीनस्कंधं ॥ हग
गोचरजत्रुस्थलबंधं ॥ चंदनचर्चितविशालबाहुं ।
अभयवरारिदराद्युधबाहुं ॥ धृतकनकांगदकटक
तोड्डरं । विदलितहरिकणभमनखरं ॥ श्रीवत्सश्री
हृदयकपाटं ॥ विद्युत्प्रभरचित्रितशाटं ॥ उरःपीठ
लुठद्बुलतरहारं ॥ त्रिवलिबंधुरितगुंदिलजठरं ॥
पारिजातनवकुसुमनोमालं ॥ नाभिजातचतुरानन
बालं ॥ कटितटसुघटितपीतपटन्यासं ॥ नीराजये०
॥ २ ॥ सौरभलुब्ध्यद्भ्रमरकदंबं ॥ मणिमेखल
धारितनितंबं ॥ [illegible] ॥ [illegible]

जानुमतिपेशलजंघं ॥ वलयकलितघनकनक तोडरं ॥ मंजुमंजुसिंजाननूपुरं ॥ मृदुलपार्ष्णिसर जांगुलितरणं॥दुस्तरतरभवसागरतरणं ॥ विलस न्नखमणिपूर्णचंद्रिकं॥निरस्तवनितानादितंद्रिकं॥ श्रीभूदेवीकरसरवीजितं । नारदशुकसनकादिपूजि तम् ॥ पंतविठ्ठलन्यासगणन्यासं ॥ नीराजयेश्री निवासम् ॥ ३ ॥

अथ रघुनाथजीकी आरती।

आज बनी छबि भारी श्रीराघवजीकी ॥टेक ॥ सहित जानकी रत्नसिंहासन राजत अवध बिहारी ॥ १ ॥ रविशशि कोटि देखि छबि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी ॥ वदन मयंक ताप त्रयमोचन मंद हासरसन्यारी ॥ २ ॥ बांये अंग जानकीजी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी । गोरी श्याम सुन्दर तनुसोहै चंद्रवदन उजियारी ॥३॥ रत्नजटित आभूषण सोहैं मोतिनकी छवि

न्यारी ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल औ वनमाल सोहा री ॥ ४ ॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर करगहि साराँगधारी ॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदननिहारी ॥ ॥ ५ ॥ मुनिजन चरणसरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुरसखी मिलिकरत आरती सज कंचनकीथारी ॥ ६ ॥ रामसेवक जय ध्वनि उचरत गावत पुरनर नारी ॥ मातु कौशिलाकरैआरती तुलसिदास बलिहारी ॥७॥

इति आरतीसंग्रह समाप्त ।

वनदैहों ॥ २ ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनि हौं रसना और न गैहौं ॥ रोकिहौंनयनविलोकत औरहि शीश ईशपद नैहों ॥३॥ नातो नेह राम से कारि सब नातो नेह निबैहों ॥ यह छरभार ताहिको तुलसी जगतको दास कहैहों॥४॥इति॥

राग गौरी।

अयोध्या राजत भूमिकन की ॥ टेक ॥ रंग भूमि राजतरघुनन्दन संगलिये सुता जनककी ॥ रविशशि कोटि उदित हम देखे जोडी बनीहै जन ककी ॥१॥रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सम्मुखहैं हनुमानबलीकी ॥ मातुकौशिला करत आरती जय जयश्रीरघुवरकी ॥ २ ॥ ठुमकि ठुमकि महलनमें विहरत झुमक झुमक नूपुरकी ॥ कृपानिवाज कहांलगि वरणों महिमा अवध नगरकी ॥ ३ ॥

रागगौरी।

बोलत मधुरी बानी रघुवर बो० ॥ टेक ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल छवि नहिं जात बखानी हम सरयू जल भरन जात रही बीच राम रुक सानी ॥ १ ॥ बाण कमानभृकुटिके लोचन मारत तकि तकि तानी ॥ घूँघुट मेरो छूटगयोहै लाज छोड़ि मुसकानी॥२॥अमरनारिनरमिले अवधके ये सब फिरत हैं सानी ॥ लोग कुटुँब अब मोहिं नहिं भावे दशरथसुत रससानी ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन दशरथ राजदुलारी ॥ राम सखी कौशलपुर जीवन रघुवर हाथ बिकानी ॥ ४ ॥

अथ देवीअष्टकप्रारम्भ।

ना कछु मन्त्रन यन्त्र ना अहै सु प्रार्थना ॥
ध्यान ज्ञान यज्ञ जाप साधना नहीं बना ॥

ना अहै सुशक्ति भक्ति ना तुम्हार आपना॥नाहि मातु अम्बमोंहि नाहिं और कामना ॥ १ ॥ नाविधी न अर्थ धर्म ज्ञानना सुवासना ॥ हों अशक्य कीन नाहिं मातु तौ उपासना ॥ सर्व पूज्यपाय पद्मराखती कृपाघना ॥ होतमा कुपुत्र अम्बकापिना सुनी कुमा ॥ २ ॥ अम्ब मा जगत्र बीच पुत्रऽनेक आपके ॥ मैं न काजकारि देव पुत्र माय बापके ॥ त्याग मोर नाहिं युक्त मातुयौं कथैंजना ॥ होत मा कुपुत्र अम्बकापिना सुनी कुमा ॥ ३ ॥ कामता न कीन जासु शक्ति भुक्ति पाइ हौं॥द्रव्यमादियाकछूघमण्ड जासुलाइ हौं ॥ लाज होत शोचि आप जो दयाकारी मना ॥ होतमा कुपुत्र अम्बकापिना सुनी कुमा ॥ ४ ॥ भस्म तो चिता कुलेप लेपते सदा रहैं ॥ विष्खको अहार हार सर्पको गले गहैं ॥ भूत प्रेत साथ विश्व राज जो जटा गहैं ॥ आपके पती अयेजगत्रके

पती अहैं ॥ ५ ॥ ज्ञानना मृगाक्षि भोग मोहिना सुहावता ॥ मोक्षना चहूँ न वित्त चित्तको सुभावता ॥ प्रार्थना यही भवानि शम्भुरानि जप्यते ॥ बीति जाहु जन्मसोर हे महेशि शप्पते ॥ ६ ॥ दुःखके भये करौं अराधना महेश्वरी ॥ नागनौ शठत्व जो सिवातयान हैं खरी ॥ बालभूखपाइके करै पुकार मातुमा ॥ होतमा कुपुत्र अन्न जापिना सुनी कुमा ॥ ७ ॥ अन्न क्या विचित्र अम्ब जो करौ कृपा घनी ॥ जो करै अनेक दोष बालना तजैजनी ॥ पातकी कुपुत्र दोष आशुही छमै सुमा।होतमा कुपुत्र अन्नजापिना सुनी कुमा॥ ॥ ८ देखि देवि अप्पराध भंजनं स्तनं महत् ॥ कीन्ह अष्टपद्य देवि प्रार्थना भरीलसत् ॥ जो पढ़ै सुनै सुभक्ति मुक्ति सो लहै बृहत् ॥ सों बिचारिकै कृपा बिहारि नम्रह्वै कहत् ॥ ९ ॥

इति देवीअष्टकसमाप्तम्।

अथ रुद्राष्टकप्रारम्भः ।

॥ छन्दभुजंगप्रयात ॥ नमामीशमीशाननिर्वा
णरूपम् ॥ विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम् ॥
निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहम् ॥ चिदाकाशमा
काशवासंभजेहम् ॥ १ ॥ निराकारमोंकारमूलं
तुरीयम् ॥ गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम् ॥
करालं महा कालकालंकृपालुम् ॥ गुणागार
संसारपारंनतोहम् ॥ २ ॥ तुषाराद्रिसंकाश
गौरंगभीरम् ॥ मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा ॥ लसद्भालबा
लेंदुकंठे भुजंगा ॥ ३ ॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंवि
शालम्॥प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुम् ॥ मृगाधीश
चर्माम्बरंमुंडमालम् ॥ प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि
॥ ४ ॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशम् ॥ अखंडंअजं
भानुकोटिप्रकाशम् ॥ त्रिशूलारिनिर्मूलनंशूल

पाणि ॥ भजेहंभवानीपतिंभावगम्यम् ॥ ५ ॥ कलातीतकल्याणकल्पांतकारिम् ॥ सदासज्जना नंदृदाताप्रुरारिम् ॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारिम् प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारिम् ॥ ६ ॥ नयावदुमा नाथपादारविंदम्॥ भजंतीहलोकेपरंवानराणाम्॥ नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशम् ॥ प्रसीदप्रभो सर्व भूताधिवासम् ॥ ७ ॥ नजानामियोगंजपंनैवपू जाम् ॥ नतोऽहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यम् ॥ जरा जन्मदुःखौघतातप्यमानम् ॥ प्रभोपाहिआपन्न मामीशशंभो ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तं विप्रेणहरतुष्टये ॥ येपठंतिनरोभक्त्यातेषांशंभुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

इतिरुद्राष्टकंसमाप्तम् ॥

पेटरत्न-रोलाछन्द ।

तोले पांच सोंठ अजमोदा तोला तीन मँगावे।
अजवायन दो तोला लैकै त्योंलानमक रलावे ॥

तोलाचार पीपली कूटे हरडैं पन्द्रा तोला ॥ कूट छान चूर्ण जो फाँके कटे पेटका गोला ॥ उदरामय गुडगुड अरु पीडा विडको तुर्त घटावे॥कृष्ण विहारी नित जो खावे निर्मलकायापावे ॥इति॥

भरणीदिक्शूलनिवारण।

रविकोपान सोमकोदर्पन, मंगलको गुड़ करिये अर्पन ॥ बुद्धैंधनियां, बेफैजीर। शुक्रकहै मोहिं दहीको पीर ॥ कहत शनैश्चर अदरख पावों। सुख सम्पति निरोगघरलावों ॥ नामाने भरणी दिक्शूल ॥ कहैं व्यास सब चकनाचूर ॥ इति ॥

स्तुति दयालु देवीजीकी—छंद

जय जय दयालुदेवी माता जयजयदयालुदेवी माता ॥ अष्टसिद्धि नवनिधिकी दाता अखिल लोकविख्याता ॥ जग भरनी मन आनँद करनी

हरनी विपति वरूथानी ॥ मध्य भूमि शुचिठाम बदरका ग्राम विलासिनि महरानी ॥ उत्तरदिशा बसै बहुवस्तीअंत अनंदीहैं माता॥अष्टसिद्धि नव निधिकी दाताअखिल लोक विख्याता ॥ १ ॥ पासहि स्वच्छसरोवर शोभित बनी बाग छबि आलीहै ॥ बनाशिवाला महादेवका रक्षा आप सम्हाली है ॥पूरबपुरनिर्म्मल बस्तीहै कान्यकुब्जबालाके शुक्ल ॥ पूजाकरते माता तुमरीतेहते पूजत हैं सब शुक्ल ॥ जगजननीश्रीमातुकालिका राजतपुरपूरबख्याता।अष्टसिद्धिनवनिधिकीदाता अखिल लोक विख्याता ॥२॥ जगतवंद आनंद कंद रघुनंद धाम अति स्वच्छ बना । पूजत हित नर नारि सुचित चित लहत मनोरथ चित्त ठना॥ कृष्णचंद्र आनंदकंद बलभद्र सुभद्राईश्वररूप।पर मपवित्र पुरातन प्रतिमा श्याम अङ्ग नहीं जगत्त

रूप । वंशीधरके दर्शनकरते करतें सुख हैं अधि
काता । अष्टसिद्धि नवनिधिके दाता अखिल
लोक विख्याता ॥ ३ ॥ जह्नुसुता गंगाकी धारा
बहती दक्षिण द्वारेहै॥भक्तवंतकी कौन कहै अघ
मोंको भी उद्धारे है॥विमलतड़ाग बाग सेवाला
हैं हरदेव देव प्रतिपाल । कृष्णविहारीशुक्लपर
कृपाकरते आप दयाल ॥ पश्चिम सुदर्शनी जग
जननी इकलेही करती त्राता ॥अष्टसिद्धि नवनि
धिकी दाताअखिल लोक विख्याता॥४॥इति॥

हिंडोललीला ।

सघन वन झूलैं दोउ सुकुमार ॥ टेक ॥ हिय
हरषत छबि निरख परस्पर छिनछिन बाढ़त
प्यार ॥ कबहुँ मुदित मन तान लेत मिल होत
सखी बलिहार ॥ नारायण द्रुम बेलि सुहावनि
हरौ कियौशृंगार ॥

होरीलीला।

डगर मोरी छाँडो श्याम बिच जाओगे नयन
नमें ॥ भूल जाओगो सब चतुराई लाला सांकी
सैननमें ॥ जो तेरे मनमें होरी खेलनकी तो खेल
ल कुंजनमें ॥ चोवाचंदन और अर्गजा छिरकूं
फागुनमें ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि
लागीहै तन मनमें ॥

अथ श्रीयुगलविहारलावनी प्रारम्भ।

आधिरातकेविषे कृष्ण राधकेभवनको जातेभये॥
करसरोजसे जाय द्वारके पट कपाट खटकातेभये
॥टेर॥ चौंक उठी वृषभानुनंदिनी कौन मेरे द्वारे
आया ॥ नाम बतावोआयकर मुझकूंनींदसे जा
गाया ॥ परस्थानमें बसे आन तुम जरा न मन घा
सतलाया॥फिरो दिवानादिवाना हो किसीका
भरमाया ॥ मधुर वचन सुनके राधेके श्रीकृष्ण
समझातेभये ॥ कर० ॥ १ ॥ माधो भ्रमहैमेरा

जगतमें तेरे पास आयाहूं अली॥कहै राधिका शरद्में ऋतुवसंत नाहिं लाग भली ॥ ऋतुवसंत नाहिं जान प्रिया मैं चक्रीहूं तू जान अली ॥ चक्रीहोतो यहांसे सरको कुलालकी तुम पूछो गली ॥ धरणीधर कहतेहैं मुझको वेद नीतिमें गाते भये ॥ कर० ॥ २ ॥ जानगई तुम शेषनागहो सहस्रशीश तनकेकारा ॥ शेषनहींमैं प्रियाहूं सर्पनको मारनहारा ॥ शेषनहीं तो गरुड़ होगया विनताकी करो प्रतिपाला ॥ प्रियाहरिहुँ मेराहैसारे जगतमें उजियाला॥सूर्य होयकर स्वर्ग छाड़के मेरे भवन क्यूं आतेभये ॥ कर० ॥ ३ ॥ कृष्णकृष्णको कृष्णचन्द्रने तीन बेर उच्चार किया॥उठिरा धिका हियेपट खोल गलेका हार किया ॥ सूलचंद्रपे कृपाकरो री जिसने ये बीहार किया ॥भक्त जनोंका हरीने छिनमें बेड़ा पार किया ॥ तुर्राके सुनके जवाब कलँगीके होस उडजाते भये ॥क० ॥४॥

इति श्रीयुगलविहारलावनीसमाप्त ।

अथ मनिहारिनलीला-लावनी ।

श्रीकृष्णनन्दजीकेनन्दननेधरावेषमनिहारनका।
आपहरीजहँगयेतहांपरबहुतझुंडब्रजनारिनका ॥
॥ टेर ॥ पहरजनानावेषहरीनेरचिरचिकेश्रृंगार
करो॥ हँसुलीऔरहमेलगलेबिचझलझलझलकत
पनाहरो॥ठटगुजरातीसजाघांघरा ओढनदक्षिणी
चीरखरो॥रविशशिकोटिबदनकीशोभाऐसाहरिने
रूपधरो ॥ कुचाबनायकेआटीचोली औरकुरता
फुलक्यारिनका ॥ आप० ॥ १ ॥ श्रीकृष्णजी
फिरैंपूँछतेकोइचुरियापहनोगीखरी ॥ कालीपीली
जरदजंगालीसुरखसोसन्याऔरहरी ॥ एकसखी
यूँबढकरबोलीअरीआवतूमनिहारी ॥ चुडिया
मोतीचूरकडाबन्दल्याईतोपहनाज्यारी ॥ मुख
मांगेलेवोदामहमैंकूंझुठाबतारीमोलभारिनका ॥
आप० ॥ २ ॥ श्रीकृष्णपहरानेलागेपहरैराधास
हेलनी ॥ करछूतेतनुमारछिपैनहिंलखगइराधाप

हेलनी ॥राधासुखमुसकायकहैफेरपूछोरीसखियां अकेलनी ॥ फिरीजायचौफेरकृष्णकेजितनीथीं सबनवेलनी ॥ हरलीयाइनमानकियाअपमान सखीसबसारिनका ॥ आप० ॥ ३ ॥ अनेकछल बलकियेकृष्णनेसबसखियांछलनेखातर ॥ कहां लगकोईसिफतकरैंगेतुमकन्नगिरिकहतेचातुर ॥ लछमनब्राह्मणधर्माकहतेबैठोसायरमतहोआतुर । जसूलालकेचंगकेऊपरनिरतकरै परवायातुर ॥ लहैगुणीजैरामभारतीचंगपरतुरां तारलका ॥ आप० ॥ ४ ॥ इतिमनिहारिनलीलासमाप्त ॥

पावस विरहिनी।

कवित्त–आयो पुनि पावस अमावस निशा भो दिन छिन बिन प्यारे केहि भांतिन बिताय हौं ।किरचै करेजाहूकी कोकिलैं करनलागीं मोर शोर सुनि किमि चित्त ठहरायहौं । बेदरदी बैरी

बद बदरा बढ़ेई छुरे नितप्रति तासों प्राण कैसेकै बचायहौं। परत न एको पल बिन कृष्णप्यारी हाय काके गरे लागि तपनि मिटायहौं ॥ १८ ॥

विरहिनी विलाप ।

केधों वहि देशमें घुमडिघन घेरे नाहिं केधों वहि देश दामिनीहू नाहिं दमके ॥ केधों वहि देशमें न बरसत बारिदहूँ रामपरताप केधों झिंझिहू न झमके। केधों वहिदेशमें न बहति बयारकहूँ मन्द मन्द शीतल सुगंध भरी रमके । केधों वहि देशमें पपीहराहू पीउ पीउ टेर देहै पीउको चितावे ना उधमके ॥ १ ॥ इति ॥

पुरुषोपकारार्थ पशुबुद्धि ।

जयकरी छन्द ।

सिंह, बकुल, कुक्कुट, अरु काग । श्वान गर्दभी बुद्धिविभाग ॥ क्रमशः गुण इनके लेलेहु ॥ गुणमा

ही अवगुण तजिदेहु ॥ यकगुणहै उत्तम वनराज॥
सब विधि सारत आपन काज ॥ प्रबल शत्रुपर
मारत धावा ॥ करन योगपर विलँब न लावा ॥
बकुला में उत्तम गुण एक ॥ सीखहु सज्जन तजि
अविवेक ॥ सबइन्द्रिनकर संयम करो ॥ देश
कालबल हृदये धरो ॥ बकुल समान काजको
साधो॥मीन मिलनहितचुप्पी बाँधो॥कुक्कुट चारि
बात शिरताजा॥ उचित समयजागतरणगाजा॥
बन्धुन भाग देत सुख पावै।आप आक्रमण करि२
खावै ॥ कागासे सीखहु गुण पंच ॥ छिपकर
मैथुन संग्रह रंच ॥ सावधान निशि वासर रहै ॥
पर विश्वास क्षणक नहिं चहै ॥ कूकुर षटगुण
माहिं प्रधाना ॥ स्वामिभक्त शूरता निदाना ॥
भोजन शक्ति अधिक तनु माहीं ॥ स्वल्पहु मिलि
संतुष्ट रहाहीं ॥ गाढ़ीनिद्रा झटपट जागत । मूत्र
पुरीष मलिनस्थलत्यागत ॥ तीनि बात लईअस्ते

लेहु ॥ अतिश्रमपरसी बोझ सनेहु ॥ शीत उष्ण पर दृष्टि न राखत ॥ अति संतुष्ट बिचर वन राजत ॥ दोहा—कृष्णबिहारी शुक्ककह, येगुण तीस प्रधान ॥ येहीनिश्चय उरधरे, सो विजयी जगजान ॥ इति ॥

चौमासा ।

विजयी छन्द लावनी ।

सखिआयो मास चौमास दहै नित छाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ लागो हैमास अषाढ़ घटा घन छाई ॥बिजुली चमके चहुँओर जिया डरपाई ॥ सखि ऐसे निठुरको जरा दर्द ना आई ॥ लव दिलसे दिया उतार सुरति बिसराई ॥ निशिदिन ताकों मैं राह रहीन जाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती। सावनमें सखी न सजन हमारा आया॥नाजानों

किस सवतिनने है बिलमाया ॥ शिरपरमेरे त्यो हार सनूनो आया। सखि सबके पिय घर आये बलम कहँ छाया ॥ सब सखी खुशी और ऐशमें सावन गाती। गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ भादोंमें बरसता नीर पीर तनु भारी। बिन पिया दुःख हुआ न जाय सम्हारी॥ तकते निर्मोही राह हुआ जी आरी।सुन पपिहाके बैन नैन जलजारी ॥ जो होत पतामालूम बांह गहि लाती। गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती॥ सखि क्वार कन्तने आय दरश मोहिं दीन्हा। जो लगाहिज्रमें तीर पीर हरि लीन्हा ॥ भरके मोतियन का थार निछावर कीन्हा। नरपति तन मन धन वारि उसीपर दीन्हा॥कह कृष्णबिहारी शुक्ल करी मन भाती। गयो जबसे पिया परदेश लिखी ना पाती ॥ इति ॥

वियोगमें संयोग ।

स०—बालम लाल विदेशगये दुखऐसी जरी हम काम कराकैं ॥ जो चुरियां कर आवत नाहिंरी ते चुरियां गईं ठौर फराकैं ॥ आलमलाल विदूरत बालमबोलतही पियद्वार धराकैं ॥ कंचुकीमेंकुचयों हुलसे कि गये बन्द टूटि तड़ाक तड़ाकैं ॥ १ ॥ इति

गंगानाममहिमा ।

प०—जो जन गंगा गंगा कहै । जनम जनमके कोटिदुष्कृत सब क्षणही माँझ दहै ॥ अस्नान करत सो मन वांछित फल तत्क्षण तुरत लहै ॥ ब्रजपतिकी प्यारी संगमते बहु सुख देनचहै ॥ १ ॥

सखी बनविहार ।

क०—यमुना तट कुंजन बीच रहीं सखियां सब फूलोंकी कलियां ॥ एक गावत ताल बजावत

हैं करतीं मिलके रंगकी रलियां ॥ मृगनैनीसु
आयअनेक जुरीं छवि छाय रहीं ब्रजकी गलियां॥
हरिचंद तहां मनमोहनजू सखि यावन आय
लख्यो अलियां ॥ इति ॥

जलविहारलीला ।

कवित्त ॥ सोरहसहस ब्रजवास श्याम श्यामा
रस रास बिलसाने रससाने अरसाने हैं ॥ अति
श्रम मानि आनि यमुना नहाने शत शशि शोभा
हानि पंच बाण मान भाने हैं॥छरिके मिलि छेम
हीं छबीले जल छलकनि इलकनि कलकि लल
कि मोदमाने हैं ॥ कंचनके कंज पुंज मानो अलि
रंजनको अंजलिनमंजुमकरंदवरसाने हैं ॥ इति ॥

वनविहारलीला ।

धारि नारि वेष पिय प्यारी जात मारगमैंछाँडिके
भवनकुंज सदन सिधाये हैं ॥ आवत [illegible]

साछुहेतें चन्द्रावलीको यों पंथहि बचाइके कराय नहरायेहैं ॥ पायके लखाव आव चतुर सयानी सखी दांव लेन चित्तमें विचारि आंख पाये हैं ॥ को है नोखी नारि देख्यो घूँघुट उघारि दोउ भौंहन चलाय मुसकाय सकुचायेहैं ॥ इति ॥

लक्ष्मीनारायणकी ध्वनि।

भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण॥अखिल लोक पूरण विख्याता ॥ भक्त सुखद दनुजन कुलघाता ॥ विधि हर वंदित पर मप्रतापा ॥ करुणामय श्रीनारायण॥भज०॥जात अनेक अधम करुतारे तारन तरन कहत हैं सारे॥ कृष्ण विहारीशुक्ल प्रचारे त्राहित्राहि श्रीनारा यण ॥ भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण० ॥ इति ॥

अथ चंद्रप्रस्तावलीला।

श्रीः ॥ चौपाई ॥ शोभामेरेहारिपैसोहै । मैंबलि बलिपद्मतरकोमोहै ॥ मेरेश्याममनोहरजीवन ।

निहँसिश्यामलामेपयपीवन ॥ ठाढीअजिरयशो
दारानी॥गोदीलयेश्यामसुखदानी॥उदयभयोश
शिशरदसुहावन ॥ लगीतातकोमातदिखावन॥दे
खहुश्यामचंद्रयहआवत ॥ अतिशीतलहगतापन
शावत॥ चितैरहेहरिइकटकताही ॥ करतेनिकटबु
लावतवाही ॥ मैयावहमीठोकैखारो॥ देखतलगत
मोहिंअतिप्यारो ॥ देहिमँगायनिकटमैंलैहौं ॥ ला
गीभूखचंद्रमैंखैहौं ॥ देहिवेगमैंबहुतभुखानो ॥ माँ
गतहीमाँगतबिरुझानो ॥ यशुमतिहँसतिकरति
पछितायो ॥ काहेकोमैंचंददिखायो ॥ रोवतहैंहरि
विनहितेजाने॥अबधोंकैसेकारेकैमाने॥विविधभाँ
तिकरिहारिहिभुलावै ॥ आनबतावैआनदिखावै॥
दोहा ॥ कहतियशोदाकौनविधि, समझाऊंअब
कान्ह॥भूलिदिखायो चंद्रमैं,ताहिकहतहरिखान
॥ सोरठा ॥ अनहोनीक्योंहोय, तातसुनीयहबा
तकहुँ ॥ याहिखातनहिंकोय, चंद्रखिलौनाजग

तको ॥ चौपाई॥यहहैदेतनितमाखनमोको ॥ क्षण क्षणतातदेतसोतोको ॥ जोतुमश्यामचंद्रकोखैहो बहुरोफिरमाखनकहँपैहो ॥ देखतरहौखिलौनाचं दा॥आरिनकीजैबालगोविंदा ॥ मधुमेवापकवान्न मिठाई ॥ जोभावेसोलेहुकन्हाई ॥ पालागौंहठअ धिकनकीजे॥ मैंबलिरिसहीरिसतनुछीजे ॥ खसि खसिकान्हपरतकनियाते ॥ देशशिकहतनंदरानि याते ॥ यशुमतिकहतिकहाधौंकीजे ॥ मांगत चंद्रकहांतेदीजे ॥ तबयशुमतिइकजलपुटलीनो । करमेंलैतेहिऊंचोकीनो ॥ ऐसेकारिश्यामहिंबहि कावैं॥आवचन्दतोहिलालबुलावै ॥ याहीमेंतू तनुधारिआवे ॥ तोहिंदेखिलालासुखपावे ॥ हाथलियेतोहिंखेलतरहिहै ॥ नेकनहींधरणीपर धरिहै॥जलपुटआनिधरणिपरराख्यो॥गहिआनों शशिजननीभाख्यो ॥ दोहा ॥ लेहिलालयह चन्द्रमैं, लीनोनिकटबुलाय ॥ रोवैयतनेके

लिये, तेरीश्यामबलाय॥ सोरठा॥ देखहुश्या
मनिहारि, याभाजनमेंनिकटशशि॥ करीहती
तुमआरि, जाकारणसुन्दरसुवन॥ चौपाई॥
ताहिदेखिहुलस्योअतिमनोहर॥ बारबारडारतदोउ
कर॥ चन्दापकरतजलकेमाहीं॥ आवतकछू
हाथमेंनाहीं॥ तबजलपुटकेनीचेदेखै॥ तहाँ
चन्द्रप्रतिबिंबनपेखै॥देखतहँसींसकलव्रजनारी॥
मगनबालछबिलखिमहतारी॥ तबहिंश्यामकछु
हँसिमुसकाने॥ बहुरोमातासोंबिरुझाने॥ ल्यों
गोरीमाचंदाल्योंगो॥ताहीअपनेहाथगहौंगो॥यह
तौकलमलातजलमाहीं॥ मेरेकरमेंआवतनाहीं॥
बाहरनिकटदेखियतवाही॥ कहैतोमैंगहिल्यावों
ताही॥ कहतियशोमतिसुनहुकन्हाई॥ तबमुख
लखिसकुचतडहुराई॥ तुमतेहिपकरनचहतगु
पाला॥ तातेशशिभजिगयोपताला॥ अबतुमते

जानहु अवशि, धनीवंत सो होहिं ॥ ४ ॥ कर मध्ये तिरशूल जो, परै भाग्यवश आय ॥ राज्य चिह्न यह प्रगट है, निश्चय राज्य कराय ॥ ५ ॥ अंकुश कुंडल चक्र जो, पाणिमध्य परिजांय ॥ निश्चय भोगै राज्य सुख, वचन अन्यथा नाहँ ॥ ॥ ६ ॥ गिरि कंकण नरखुंड सम, पाणि मध्य दर शाय ॥ राज्य मंत्रिकर चिह्न है, निश्चय सुख सर साय ॥७॥ सूर्य्य चन्द्र गज अश्व गृह, लता नेत्र त्र्यकोन ॥ एकहु लक्षण करपरै, सुखी होय नर तौन ॥८॥ (दोवैछंद) चक्र एक वाचाल द्वितिय गुणवंत कहावे । तीन चक्र व्यापार माहिं लक्ष्मी नर पावे ॥ चार चक्र निर्द्धनी पंचसर्वांग विलासा । छठा चक्र रस काम सप्त बहु सुखकी आशा ॥ अष्टचक्रतनुरोग नवम नृपती कहलावे। पूरे चक्र दशहस्त सिद्धपदवी सो पावे ॥ कृष्ण

बिहारी शुक्र कह्यो शिवने जो गाया । नरका दहि
ना हाथ नारि बायां बतलाया ॥

इति सामुद्रिकलक्षण ।

स्तुति मुंबादेवीजीकी ।

लावनी ।

जय जय जगदम्बे दे सुख अम्बे जयअम्बे बंबा
माई॥ आदिशक्ति उद्भव पालन लय करनि जानि
शरणै आई ॥ रक्तबीज महिषासुर मर्दिनि शुम्भ
दैत्यमारनिहारी॥महिरावणकोकिया निपाता गो
द्विज भक्तन हितकारी ॥ वरदायिनि वर वेद
बखानी सिंहवाहिनी जग गाई॥जयजय जगदम्बे
देसुख अम्बे जय अम्बे बंबामाई ॥ १ ॥ हिन्दुस्तान
दक्षिणी सीमा वारिधितट विश्रामलियो ॥ योजन
वेद बनाय बंबई अजब शहर आबाद कियो ॥
त्रेतामें जसरही अयोध्या और द्वारका द्वापरमें॥

कलियुग माहिं बंबई तैसी जाकी समतानहिं भूमें॥
सप्तद्वीपकी सम्पतिछाई ऋद्धि सिद्धिकीअधिकाई
जय जय जगदम्बे देसुख अम्बे जय बम्बे बंबामाई
॥ २ ॥ सुंदर धवल धाम नभचुंबत ध्वजपताक
शोभान्यारी। बीथी हाट बजार चौपथा पर
सपुष्ट पविकी ढारी॥ वन उपवन सब भाँति सुहा
वन मनभावन सुख सरसाई। गलिन २ बाजत
वर बाजा अतर अरगजा बू छाई॥ द्वीप द्वीपके
बसैं आदमी महिमा तीन लोक गाई॥ जय जय
जगदम्बे देसुख अम्बे जय बम्बे बंबामाई॥ ३॥
मैं भी बडी आशकर आया मुंबापुर माकी नगरी
रत्न तख्त शोभित जगमाता गमन करै नगरी
सगरी॥ भाव भक्ति रंचक नहिं जियमें पै हिय
की जाननहारी॥ करहु अनुग्रह अवशिदासपर
प्रणतारति मेरी बारी॥कृष्णबिहारी शुक्ल बदरका

वासी सेभी लवलाई ॥ जय जय जगदम्बे देसुख अम्बे जय बम्बे बंबामाई ॥ ४ ॥

इति स्तुति समाप्त ।

पूर्व दिशाकेसुख ।

पुरुषउवाच ॥ दोहा—रूपविशेषविशेषधन,भूमि सुहावनदेश॥जायकरौंयातेअबै, पूरवकोपरदेश ॥ ॥१॥ कवित्त ॥ ताफताखाफतासुसज्जरश्रीसाफ मखमलरूमकेसीपटनानासुखदाइये ॥ सरसकृपा णतरकसरुकमानबाण जरकसीचीराहीराजहाँजा इलाइये ॥ सुकविगुपालफुलवारी धामधामअंब श्रीफलकदंबपौंडापाननकोखाइये ॥ बडेहोतके शमिलैतंदुलअशेष प्यारीपूरबकेदेशमेंविशेषसुख पाइये ॥ १ ॥

पूर्वदिशाकेदुःख–स्त्रीउवाच–खंडन ।

सोरठा—लगैंचोरठगवाइ, पेटचलैपानी लगै॥ कोऊकबहुंनजाइ, पूरबकेपरदेशको॥१॥कवित्त॥

पानीलगिजात बहु फूलि जातगातपुनिपेटचलि
घातकछु खाइजात जबहूँ ॥ आहूकारिकारिकैसँ
भोगसुखकाजपशु पक्षीकारि राखैंनारिनरनकोअ
बहुँ ॥ ब्राह्मणवणिकमीनमांसमधुखाततेलहरदल
गायन्हातनारीनरसबहूँ ॥ फांसीदेकैहालमारि
डारै ठगजालयाते जैये न गुपालदिशिपूरवकी
कबहूँ ॥ १ ॥

दक्षिणदिशाकेसुख।

गुरुरुवाच ॥ दोहा–दयामानधनमानपुनि,
लोगबड़ेगुणमान ॥ यातेदक्षिणदेशको, करिये
सदापयान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ चीराचीरसालूसे
लासमलाबहारदारजरकसीकाम जहाँहोतनाना
भाँतिहैं ॥ सुकविगुपाललालरतनप्रवालमणि
माणिकविशालमोतीमहँगीसुजातिहैं ॥ मेवाऔ
सिठाईफलफूलमूलमूलगजतरुणी अनूपरूपझल

कतगातहैं ॥ देखैबनैबातसदाशोभासरसात प्यारीदक्षिणदिशाकेगुणकहेनहींजातहैं ॥ १ ॥

दक्षिणदिशाके दुःख-स्त्रीउवाच-खंडन।

दोहा—दक्षिणपियसुनिकानदे, दक्षिणदक्षिण जात ॥ लक्षणलक्षणगक्षिके, लक्षणहीलगिजात ॥१॥ कवित्त ॥ घोटूलोंउघारीनिरलज्जरहैंनारी मासमदिराअहारीद्विजहोइँअनाचारीहै ॥ सुक विसुपालप्याजलहसुनखातबहु लूटैंठगचोरप्रजा रहैनसुखारीहै॥लोगनिरहतभानिजेकोप्याहिबेटी देतरीतिबिपरीतिसबदेखतसेंन्यारीहै ॥ बढतअ गारीहोतिबड़ीबड़ीख्वारीदिशिदक्षिण मझारीजा तहोतदुःखभारीहै ॥

पश्चिमदिशाके सुख।

पुरुषउवाच ॥ दोहा—राखे दक्षिणते अबै, सोदिशिपश्चिमकात ॥ ताकेअबगुनिलीजिये,

प्यारीसुखअवदात ॥ कवित्त ॥ लोगदयावानति यसुंदरसुजानमीठी बोलनिनिदाननीरलगैनतहां कहूँ ॥ वृषभविशालऊंचेपुलकारवस्त्रविविध प्रकारनहैं सूतकेजहांकहूँ॥सुकविगुपालतातेतरल तुरंगमिलैमधुरसनीरभूखलगतिजहांकहूँ ॥ पार नहींलहूँजियशोचतहीरहूँप्यारी पश्चिमदिशाके सुखवरणिकहाकहूँ ॥ १ ॥

पश्चिमदशाकेदुःख स्त्रीउवाच-खण्डन।

दोहा-मरतरैनिदिनवारिविन, भटकिभटकि नरनारि ॥ करियेनहींपयानपिय, पश्चिमओरनि हारि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ धूरिनकेथलसावैंढोलके ढमक्केजलतरुविनथलतहाँशोभानहींपामेंहैं ॥ चा नररूनेहूँरसगोरसनफूलफल मोठबाजरीक्षेखाय दिवसवितामेंहैं॥रहतमलीनधर्मकर्मकारिहीनलोग पहरतपीनपटऊननकेजामें हैं॥ सुकविगुपालकछु कहतनआवेजातजेतेदुखहोतसदापश्चिमदिशामेंहैं

उत्तरदिशाकेसुख ।

पुरुषउवाच ॥ दोहा॥हरिद्वारतेकेपरशि, बदरी
नाथ केदार ॥ होतकृतारथजीवयह, उत्तरखंड
मझार ॥ १ ॥ कवित्त ॥ लाइचीलवंगदाखदा
डिमबदामसेवसालमअंगूरपिस्ताखैयैउठिभोरको
कस्तूरी केसरिजावित्रीजायफलदालचीनीदेवदा
रुकीसुगंधिचहुँवोरको ॥ सालओदुसालधुस्सा
नानापसमीनाओदि देखतरहतआछीतियनकी
ओरको ॥ कहतगुपालप्यारीसुनियेनिहोरमोपै
कह्योनहींजातसुखउत्तरकीओरको ॥ १ ॥

उत्तरदिशाकेदुःख–स्त्रीउवाच–खंडन ।

दोहा–सदाशीतभयभीतनर, व्याघ्रसिंहवृषघोर
कीजैनहींपयानपिय, उत्तरदिशिकीओर॥ १ ॥
कवित्त ॥ विकटपहारझारघनोसिंहस्यारनिरखा

इनहींहोतरथबहलकोजामेंहैं ॥ गिलटीरुगिछर अनेकरोगहोतजहाँचारहूवरणजीवहिंसकहरामेंहैं। सुकविशुपालसदाशीतभयभीतलोग बरफकेमारे छुरेरहतगुफामेंहैं ॥राहमेंनगामेंचल्योजातननिशा मेंयातेबहुदुखपावैंजातउत्तरदिशामेंहैं ॥ १ ॥

हुलासके सुख।

दोहा-बढ़ैज्योतिनैननसदा, चलैसाफसबश्वास॥
इतनेसुखनितहोतहैं, सूँघतजबैहुलास ॥ १ ॥

कवित्त ॥ साफरहैमगजसरेखमानआवैपास ज्योतिबढ़िजातिनैनहोतपरकासके ॥ सुकविशु पालकभूशीतनसतावे आइ जाको लेतदेतलोगरा जीरहैंपासके ॥ अमलनआवैकोईरोगनघटावैवा यढिगनहींआवेदामथोरेलगैंतासके ॥ रुकतन श्वासजातरहैकफखाँसएते होतहैंहुलास सदासूँघ तहुलासके ॥ १ ॥

लोभके लक्षण ।

दोहा–लोभहि उपजत क्रोधहै, द्वेष ईर्षा मान ।
मत्सर लम्पट तस्करी, लोभहिसेपहिचान ॥

प्रीतिवर्णन ।

प्रीतितो ऐसी कीजिये, जानिपरै कछुनायँ ।
ज्यों मेहदीके पातमें, लाली लखी न जायँ ।

मूर्खता ।

भुईंचामसों चामकटावैं भुइँपारि सँकरे सोवैं ।
कहैं घाघ ये तीनों भकुवा, उढ़रिजायँ फिरिरोवैं॥

नीति ।

मनुषजन्म है रूपजो, तीनि भाँतिको योग ।
द्रव्योपार्जन हरिभजन, अरु भामिनिकोभोग ॥

कलियुगवर्णन—कवित्त ।

मतिभईभ्रष्टपापछायगयोसृष्टिमांझघरतियछो
ड़िपरतियघरनेलगे ॥ धनवारोदेखिगुरुचेलाको

फरनलागेझगारैझगारैबापबेटालरनेलगे ॥ धन रोजगारकीघटाईभईजगमांझ विनाअन्ननरसबभू खेमरनेलगे ॥ कहतगुपालवरषै न मेघजालयाते कलिकीकुचालते अकालपरनेलगे॥ १॥ इति॥

गर्भिणीधर्म।

पुंसवन कर्म होने उपरान्त गर्भिणीकोऊंचे नीचे स्थानपर चढना, उतरना, भागकर चलना, नदी तैरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध निरसक्षार आदि खाना, मैथुनकराना, भार उठाना ये सर्व कर्म नहींकरना चाहिये किन्तुसावधानीसे रहै, जिस्से गर्भरक्षा होवे।

गर्भिणीप्रश्न।

यदि तुमसे गर्भिणी स्त्री प्रश्न करेतो उस स्त्रीके नामाक्षर ले उनमें घोडाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावे और

आठका भाग देवे जो सम अंक शेष रहें तो कन्या और विषम रहें तो पुत्र होगा ।

गृहस्थाश्रमके सुख ।

दोहा–चारिवर्ण आश्रमनमें, है सबको शिरमौर ।
गृहस्थाश्रमके सदृश, कोउ न जगमें और ॥

कवित्त–चारिहू वरण चारि आश्रको मूल यही, याहीते सकल अबादानी होति वस्ती है । वंशब ढ़वारि ब्याहसादी भोगराग सुख, रहत हैं यामें पुण्यदान जबर्दस्ती है ॥ सुकवि गुपाल याते जगतके जीमें जीव, सदा सबहीकी भयो करै परस्ती है । तनकी दुरुस्ती रहै धनहूँकी सुस्ती तोपै पृथिवीकेमाँझ सब ऊपारि गृहस्थी है ॥

गृहस्थीके दुःख ।

दोहा-कुटुम सुशील सुपूत सुत, अनगन धनप्रभु देह।करनी करतबकारि कछुक,तब गृहस्थ सुख लेह

कवित्त-राति दिनयामें केई खरच लगेई रहैं, आयो गयो व्याह गौन गमी औ बधाई है। विष यके भोग कर्म योगके वियोग योग, जिकिरि फिकिरि सारै आपनी पराई है॥ सुकवि गुपाल भावभजन बनैन वामें, परयोरहै सदा मोह जा लमें महाई है। करत कमाईतऊ रहै हायहाई याते, सबते सवाई दुःखदाई गृहस्थाई है॥

खेतीके सुख।

दो०-गाम इजारो छोड़िके, खेती करिहौं बाम।
सब जग जाके करनते, खातपियत निजधाम॥

कवित्त-साँझहू सबेरे दधिदूधके रहत सुख, लीयो करे स्वाद ये रसाल नई नई को। नित प्रति रहै सातौ पौनिपै हुकुम, सरकारमें रहत भलो बस्सा ठकुरईको। जीवै जगजाते जीवजंतु को कनूका मिलै, मिलै भली बात यह काम सर

ईको। कहत गुपाल बीस नहकी कमाई याते लखहीमें भलो पेशो यह किसनईको ॥

खेतीके दुःख।

दोहा—खेती करत किसानके, मोतेदुख सुनिलेउ॥
हरलेके पिय खेतमें, भूलि पाउँ मति देउ॥

कवित्त—कारी होति देह सहै शीत घाममेह नित, रहै लेह देह सुख नहीं खान पानको। बरहेमेंबारासखेव्योहरेकी आश, ईति भीतिते उदास गिनै माननईमानको। राजै देत पोता हर जोता सुख सोता नाहिं, खोता दिन योंहीं रहै लेश न सयानको। देहमें न चाम रहै हाथमें न दाम याते, कहत गुपाल काम कठिन किसानको॥

कालिका स्तोत्र।

छप्पै-एक रदन करि बदन सदन शुभ सुवनकपर्दन। शुभ्र भाल उरमाल लाल शृंगीपति नंद

न॥लम्बोदर भुजचार गात सिंदूर सुचर्चित।मनुज देव ऋषि वृद्धि सिद्धि परसिद्धि सु अर्चित । ईश्वरी प्रसादअष्टांगवत् द्वार परो:बिनवत चरण॥ शुहिंदेहुबुद्धि तम जड़ हरो द्वैमातुर अशरण शरण ॥कवित्त–बानी महारानी सानी दानी न जहानीबीच, ध्यावत पुरानी ज्ञानी ध्यानी चित लायके । उदित उदारता कहानी न बखानीजात रसना सिरानीशेषरहे शीश नायके ॥ हरविधि विष्णु कृष्ण जिष्णुहू लजायरहे, महिमा अपारपारभये नहीं गायके ॥ ईश्वरी अयान जान करौ मात बान कान, दीजे वरदान बान दाहिने हो आयके ॥

प्रभाती-जागौ श्रीआदि मातु दधिजा सकुचानी ॥ दधिसुत छबि क्षीणभई दधिसुत गण मोदभई दधिसुत धुनि छायरई चक्री हरषानी ॥

दधि सुत पै हो सवार दधि सुत फल हीयहार
दधिसुत पति खडे द्वार दधिसुत समबानी ॥ दधि
सुत रिपुहै तयार दधिसुत करलेवधार दधिसुत
जिनको अहार नाशो महरानी ॥ ईश्वरी गुणकरत
गान दधिसुत जिनको सुपान दधिजासुत सुभग
यान दम्पति सुखदानी ॥ जागौ श्रीआदि मातु
दधिजा सकुचानी ॥

जय जय जय मातुआद सेवहिं सुर असुर
पाद अष्ट सिद्धि दायक निजजन दयालका ॥
शीशस्वर्ग पदपताल श्याम गात सघन बाल चंद्र
भाल मुंडमाल पान जालका ॥ सोहै करवर
कृपाण चक्रवज्र धनुषबाण मारे खल तान तान
प्रणत पालका ॥ अनुचर ईश्वरी अनाथ ठाढो
दर जोर हाथ माँगै बर मुक्तिभक्ति अटल काल
का ॥ जय जय जय मातु आद सेवहिंसुर असुर
पाद अष्टसिद्धि दायक निज जन दयालका ॥

कुंडलिया ॥ कालीरूपकरालका, उर मुंडन कीमाल ॥ मेघवर्ण नग्नांगि पट्ठ, दश दिशि बाहु विशाल ॥ दशदिशि बाहु विशाल चन्द अवतंस त्रिलोचन ॥ तूलकेश मन भुक्ति सदा वरदा भय मोचन॥कह ईश्वरीप्रसाद मातु जनदीन दयाली॥ भक्ति भुक्ति वरदेव अटल जगदम्बा काली ॥

कवान ॥ अर्द्ध अंग नर आज अर्द्धअंग मृग राज नादमनोघनग्राज क्रोधवंतबिकराल ॥ बज्जें नख चट्टचट्ट बोलैं दंत कट्ट कट्ट फोरै मुंड भट्ट भट्ट बहै रुधिर पनाल॥नरसिंही रूपधार परगटि खंभफार हिरण्यकशिपु मार रक्षजन रक्षपाल ॥ विनयईश्वरीप्रसाद सुनि लीजै मातु आद इतौ दीजिये प्रसाद छूटै भ्रमभवजाल ॥ (शिखरणी केवल एक चौक) नमो जननी आद्या हरहु बहु बाधा सुखकरी ॥ नमो अम्बा काली जनन रक्ष

पाली अघहरी नमो भव अर्द्धंगी करन सत्संगी जागरी । नमो रामाश्यामा जपत ध्रुव नामा हर हरी ॥

दोहा-नमो नमो श्रीकालिका, नमो नमो महकाल ।
जयतिरूप अर्द्धांगिनी, जयजय गौरि कृपाल ॥

छन्दभु० ॥ चिता भस्मको लेपहै अंगदायें ॥ सजोउबटनो केशरी रंगवायें ॥ यहां कालमें वस्त्र छाला कुरंगा । वहाँशीशसोहै सुसारी सुरंगा ॥ इतै चर्णमें पद्मको चिह्न सज्जै । उतै पांवमें पैंजना शब्द बज्जै ॥

(गजल सूक्ष्म) ॥ दयाली दीन प्रणपाली महाकाली कृपाली है ॥ अभय बरदान तत्काली बहाली देनवाली है ॥ मनोहर गात छबि खुश्तर पयोधर रंग अतिकमतर । परावर द्युति छटा क्योंकर दमक आनन निरा

ली है॥ लसे हगपट स्रवे ओदक निलय मरघट लपट झरपट । सुभट भैरों कटक बंकट लिये सँग देत ताली है ॥ धिगत त्रयनैनमें ज्वालालसै करवालकरवाला। हिये त्रयदेव शिरमाला युगल कंकण बयाली है॥ धरे बलपुष्ट दशभारी किये शवपुश्त आधारी। भयानक घोर चिक्कारी लल लरसना निकाली है॥ कमरमें मेखलाश वकर सजेआयुध दशोंकरवर। खड़ी रणभूमिमें धक्कर भयंकर दुष्टशाली है ॥ जनहिं संकट निरखि कटपट झपट धावति तुरत शरपट। बजावत झुंड अरि फटफट पटापट देत तालीहै ॥

रसनिरूपण।

सुरहीके भार सूधे शबद सुकीरनके,
मंदिरन त्यागि करै अनत कहूँ न गौन।
द्विजदेव त्योंही मधुभारन अपारन सों,

छन्द श्रीरामचन्द्रजीके चरणवर्णन।

नेक झुकि झूमिरहे मोगरे मरुअ दौन ॥
खोलि इननैननि निहारौं तौनिहारौं कहा,
सुखमा अभूत छायरहि प्रति भौन भौन।
चाँदनीके भारन दिखात उनयो सो चंद,
गंदहीके भारन वहत मंद २ पौन ॥

बागवर्णन १

सवैया।

झूमें झुके तरु पुंज रसाल तमालन जालनपै द्युति साजे ॥ त्यों ललिते कचनारअनार प्रसूनन भार अपार जु राजे ॥ कोकिल कीर कपोतनके कुल बोलत सो मधुरी धुनि छाजे। श्रीमिथिलाधिपके बर बागमें बारहु मास बसंत विराजे ॥

श्रीरामचन्द्रजीके चरण वर्णन।

कवित्त।

मानस महेश मानसरके सरोज मञ्जु,
सेष मति शेषके सु आनँद धरन हैं।

कहै कवि ललित सजीवनि सुजन हीके,
नीके जगहीके चारु पोषण भरन हैं ॥
विपति विदारन सुतारन अहिल्या,सुख
कारन हमेश जौन आवत शरन हैं ।
दारिद दरन अघहरन बरन बर,
मङ्गल करण रामचन्द्रके चरन हैं ॥

श्रीजानकीजीके चरण वर्णन ।

कवित्त ।

भ्राजत सभामें भरे चारुता प्रभामें अति,
मञ्जु अरविन्दवत गति अधिकारीके ।
नीके सुरतीके सती भारती रतीके चित,
दान विरतीके सुमतीके व्रत धारीके ॥
लालजी कहत जगसेवित प्रशंसनीय,
नित्य सुखकर हर अवधविहारीके ।
चन्द दुति मंदकर सुरवृन्द सेवनीय,
अमल अमन्द पद जनकदुलारीके ॥

श्रीराम नाम वैभव।

सवैया।

यातन सुन्दर पाय अरे मन मूरख क्यों न भजै रघुराई। जासु सनेह किये गणिका गजगीध अजामिलने गति पाई॥ और अधीनकी कौन कथा जग जानै तरे सदनासे कसाई। नाम न भूलो छनौ मथुरा नरदेह धरेको यहै फल आई॥

श्रीरामचन्द्रजीका ब्याह बानक।

कवित्त।

रामचन्द्र वदन विलोकी ब्याह बानकमें,
मङ्गलीक औरई उछाह सरसत हैं।
दशरथ कौशिल्या सुमित्रा कैकयीके मन,
लछिराम औरई प्रकाश परसत हैं॥
विबुध वधूटी झारैं औरही सुमन हार,
औरही अदामें अमरेश दरशत हैं।

औरही खजाने खुले अवध नगर बर,
औरै भाँति हीरालाल मोती वरसतहैं ॥

श्रीरामचन्द्रजीका नेजा वर्णन।

कवित्त।

कौशल कुमारके शिकारमें अजब धूम,
वार पार फैलत अतङ्क भट भीर को।
लछिराम साजैं वे सहसि घन वन बीच,
मन्दर दरीन दुरैं परिहरि धीर को।
अरना वराह बाघ फारे अध फारे परे,
हरिन हजारे भरे गरद गँभीरको।
भेजा भाल रेजालों गिरत गज भूमें जब,
चलत मजेजदार नेजा रघुवीरको ॥

श्रीरामसेनापयान।

भारी भालु भीर वारी कारी कपिवीर वारी,
नन्दन समीर वारी सेना जितै जितै जात ॥
छूटे तरुतुंग औ उतङ्ग गिरि शृंग छूटे,

छूटे बड़े दुर्गम प्रवास गढ़के सँघात ॥
यार कहै कोटिन निसान संग फहरात,
चिक्करत बीरनके घहरात बज्रपात ।
हहलात हेम गिरि थिरा थम्भ थहरात,
दहलात दिग्गज कमठ लोल लहरात ॥

शब्दालङ्कारछेकावृत्तिअनुप्रास-आदिवर्णावृत्ति ।

कवित्त ।

चौंर चारु भूधर भरत क्षितिपाल छत्र,
शत्रुहन साजुहैं शरासन सुवेलेको ।
सुमन सुकण्ठ हनूमान हाथ मणि मञ्जु,
व्यजन विभीषण विलास बगरेलेको ।
रङ्गराज मैथिली महीप रामचन्द्र राजैं,
शासन सुमन्त लछिराम-लहरेलेको ।
परम प्रकाशन विलासन वलित सज्यो,
सुभग सिंहासन अवध अलवेलेको ॥

अन्तवर्णावृत्ति ।

कवित्त ।

वदन सदन गुनगन परमानै ज्ञानै,
सरसनि हँसनि सँवारो अवतारों मैं ।
लछिराम धूम धाम लोचन सकोचनसु,
भौंहनके सौंहन धनुष रुख टारों मैं ॥
मैथिली अमन्द रामचन्द्र यों सिंहासन,
विलासन बगर औध नगर निहारों मैं ।
सौज श्री मनोज कर भूपर अमङ्गलीक,
मङ्गलीक मौजपर जलधर वारों मैं ॥

वृत्त्यनुप्रास ।

कवित्त ।

पारस पुरन्दर परमहंस परवीन,
धरम धुरन्धर धनी त्यों धीर कल मैं ।
छलिराम ललित लहे जे लाज लाहन मैं,
बिरद विशाल बगरेले बांद हल मैं ॥

अवध अमर अमरावती अमन्द ओज ,
कामद कला है कमनीय करतल मैं,
मंगलीक मैथिली लों मोहिनीनमण्डल मैं,
राव रामचन्द्रसों न राजा रसातल मैं ॥

हेतु अलङ्कार ।

सवैया ।

श्री अवतारशिरोमणि यों विरदावलि वेद पुरान सुनी मैं। सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथा रही फैलि गुनी मैं ॥ कौल जवाहिरी सन्तनका कब लालकी चौकी की मोल चुनीमैं।रामजो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीब नेवाज दुनीमैं ॥

द्वितीय हेतु अलङ्कार ।

कवित ।

कौशल कलश चारु चौदहों भुवन पति,
भारत कलपतरु ऐसो कत पाऊँ मैं ।
मैथिलि लछन हनूमान अंगदादि सों हैं,

लछिराम दूजो क्यों सभासदगनाऊँ मैं।
असहन पीरके गँभीर ग्रह दोषन मैं,
वारन उवारन विरद गोहराऊँ मैं॥
दानी दीनबन्धु रावरे सों कौन रामचन्द्र,
जाके दरबार दौरि दरद सुनाऊँ मैं॥

विभावना अलंकार।

भूषण वसन वारे वलकल डारे अङ्ग,
रोम रोम अनुरूपे रूपके शङ्कर हैं।
जटाजूट शिखर त्रिपुण्ड दरिमित भाल,
परम प्रतापवान जगर मगर हैं।
दल दूब आसन सिंहासन सों भासमान,
लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं।
श्याम घन वरन अकेले आभरन भूमि,
परनकुटीमें ये कहांके कलाधर हैं॥

असङ्गति अलंकार।

कवित्त।

दिग्गज नगारे देव गरजत आपही तैं,

सगुन शची त्यों गौरी पूजन करति हैं।
लछिराम सातों द्वीप सुन्दरी सँवारैं केश,
असुरकी बामैं बन दावालों जरति हैं।
छीर भरे सागर सरित सरितान मौलि,
मन्द मधु मालती समीरही हरति हैं।
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतार हेत,
भाँवरे दिनेश की दिगङ्गना करति हैं॥

अधिक अलंकार।

कवित्त।

उन्नतपहार नदी नदन अपारन को,
धौलकरि बिरद बहाली बगरत है॥
लछिराम देव नर देव सन्त घन बन,
पावन परस सिरो आनन्द भरत है॥
बिरदबितानमें महीप रामचन्द्र दीप-
द्वीप कलाधरलों कुतूहल करत हैं।
फैल्यो छीर-सागर-तरङ्ग-सो तिहारो यश,
छोरसों दिगन्तनके छलक्यो परत है॥

अन्योन्यालंकार।

सवैया।

वे उनके धनुबान सँवारिके राखत साजुहैं मौज गँभीरके। वे लछिराम उमाहन में कलकोरैं निहारत छोरैं समीरके॥ वे उनके मुख हेरि भरैं गरे माल घने मुकताहल हीरके। भाग भरे सब लोग सराहत आनँद लक्खन श्रीरघुवीरके।

यथासंख्यालंकार

कवित्त।

मङ्गलीक चरन करन अधरन चढ़ी,
लालिमा गहर गुण कोमल बटोरके।
लछिराम जंघ भुजदंडन प्रचण्ड उर,
बिरचे कठोर सान अजब हिलोरके॥
भुजमूल भालचन्द्रवदन विलास हास,
परम प्रकाश शुभ्र रस वीर बोरके।

भौंहैं भङ्ग लोचन तिरीछे जुलफनवारे,
बार घुँघुरारे कारे लखन किशोरके ॥

परिसंख्याअलंकार ।

कवित्त ।

चन्दन वलित बेस बगर बिहद मौलि,
कुण्डलित शुण्ड रद मद के प्रचार में ।
बरन गनेश मणिमण्डित रतन झूल,
झूमिके चलत हैं मलिन्द झनकार में ॥
लछिराम रावरे मतङ्गन पै रामचन्द्र,
वै रही प्रभा जो गज रथके अगार मैं ।
विधि विकरार में न दिग्गज कुमार में,
न कज्जल पहार में न घन बन भार में,

सन्देहालंकार ।

कवित्त ।

बार मैं तिरीछी द्वैपलाके उतरति पार,
कैधों या फनाली पन्नगीको झलाझल है ।

लछिराम कैधौं भले बासर प्रणाली जोर,
जौहर जमाली पाली काल करतल है ॥
रावण समर में महीप रामचन्द्र कर,
कैधौं या कृपाण ज्वालामुखीकी सकल है।
असल कुमारी बडवानलप्रचण्ड कैधौं,
बारहो कलाके मारतण्डकी नकल है ॥

सम्भावना अलंकार ।

बरवै ।

रामचन्द्र-दल-महिमा, तब कहि जात ।
जो कहुँ शारद कोटिन, मुख जल जात ॥

लोकोक्ति अलंकार ।

बरवै ।

छोड़ि मानसर मञ्जुल, लघु सर जात ।
राजहंस तजि मोती, कांकर खात ॥ १ ॥

अमृतध्वनि ।

सजत चारु चतुरंगिनी रामचन्द्र भूपाल।

खलभल फैलत असुरपुर छुट्टत गढ़ विकराल ।
छुट्टत गढ़ विकरालहृश दिगपालहलक्कत ।
छुट्टत खलदलमालग्गज मतवालझुलक्कत ॥
झग्गस्सुवन समीर लखन गम्भीरग्गज्जत ।
भज्जत नवल निसानस्सुभट कृपानस्सज्जत ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीका नखशिख वर्णन ।

कवित्त ।

नखन पै नखत तरुणकञ्ज पायन पै,
रम्भखम्भ जानु पै मृगेन्द्रलोनी लंक पै ।
उदर पै पात कण्ठ पै कपोत रंगपाल,
चिबुक रसाल छटा दंतन दमंक पै ॥
पानि बिम्ब मुकुर कपोलन पै नासा कीर,
नैनन पै खञ्जन कमान भौंह बंक पै ।
भाल पै मयंक भाग कोटिमारतण्ड वारौं,
मुकुट छबानि झला झलकी झमंक पै ॥

श्रीकृष्णचन्द्रछबिवर्णन।

कवित्त।

नव घन वारि डारौं श्याम रंग अंगन पै,
वारौं छबि पुञ्ज मोर चन्द्रकी छटान पै।
नैनन पै कञ्ज खञ्ज मीन मृग वारिडारौं,
जगतलोनाई वारौं लाल अधरान पै॥
नासिका पै कीर अलि अवलि सुभौंहन पै।
वारौं अहिवृन्द केश वेष लहरान पै।
सातौ स्वर तीनिग्राम बाँसुरीकी तानन पै,
कोटिकाम वारिडारौं मृदु मुसक्यान पै॥

श्रीराधिकाजीका ध्यान।

सवैया।

भूषन सारे सँवारे जराऊ जिन्हैं लखि तारे लगैं अतिफीके। त्यों द्विजदेव जू आनन की छबि अंग सबै सरसाय शशीके॥
ताहू पै भानु प्रभा निदरे लसैं चञ्चल

कुंडल कानन नीके । सोहमई तम
क्यों न मिटै इमि ध्यानधरे बृषभानुललीके ॥

श्रीराधाकृष्ण सनेहवर्णन ।

सवैया ।

दोऊ दुहूँनको हेरत हैं मुख, दोऊ दुहून हरा
पहिरावैं । दोऊ दुहूँनको साजैं शृंगार, दुहूनपै दोऊ
सुगन्ध लगावैं ॥ यों अनुराग दुहूँ उमह्यो, लखि
श्याम दुहून पै आनँद आवैं । राधिका गोकुलचन्द
की रीति, प्रतीति औ प्रीति लखे बनि आवैं ॥

अधर वर्णन ।

दोहा ।

केसर दुतिया दुहुँन मिलि, एक रूप निज ठानि ॥
भोर सांझ गहि अरुणता, भये अधर तुव आनि ॥

रद्न वर्णन ।

सवैया ।

केते कहैं मुक्ताहलकी लरैं, कोऊ सुहीरकनी
अनुमानै । कोऊ कहैं कछु सोनेके बीज ये, चन्द्रिका

पूर किते परमाने ॥ ये लछिराम न मो मनमें गसें, शारद ध्या समता अनुमाने। शोधिके मार मनोहर, संत्र धरे अरविन्द अनारके दाने ॥

प्रेमतरंग।

कवित्त।

दूरी आइकाल्हि सबलोक-लाज त्यागि दोऊ
सीखें हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखानि दिन द्वैमें बात फैलि जैहे,
कहाँलों सयानी चन्द हाथन छिपाइबो॥
आजुहौं निहार्‍योवीर निपट कालिन्दितीर,
दोउन सों दोउनको मुख मुसक्याइबो।
दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेतहैं बलैयाँ उन्हें,
भूलिगई गैयाँ उन्हें गागरी उठाइबो ॥

उद्योग।

दोहा।

भरत पेट नट निरत कै, डरत न करत उपाय।
धरत बरतपर पायँ अरु, परत बरत लपिटाय ॥

पुरुषार्थ ।

दोहा ।

दुख सुख सब कहँ परत है, पौरुष तजहु न मीत ॥
मनके हारे हार है, मनके जीते जीत ॥

शिक्षा ।

कवित्त ।

याहि मतिजानौ है सहज कहै रघुनाथ,
अतिही कठिन रीति निपट कुढंगकी ।
याहिकरि काहूकाहूभांतिसों न कलपायो
कलपायो तन मन मति बहुरंगकी ॥
औरहू कहौं सो नेक कानदेके, सुनिलीजे,
प्रगट कही है बात वेदनके अंगकी ।
तब कहूँ प्रीतिकीजे पहिलेतें सीख लीजे,
बिछुरन मीनकी औ मिलन पतंगकी ॥

वसन्तविरहनी

कवित्त।

कुञ्जनमें खञ्जनकी चलनि बिलोकतही,
दृग अरविन्दनकी आभा दरसायजात।
देवकीनँदन करें फिरि नहिं भूलै मोहिं,
माहीमानिहीमें कोर कठिन सताय जात॥
कैसे जियों आली बनमालीविन फागुनमें,
देखतहीं रंग अंग अंग पियराय जात।
आयजात श्यामसुधि कालिंदीबिलोकतही,
छाय जात मैन पीर आंसू नैन आय जात॥

विषाद।

कवित्त।

दारिद निदारिबेकी प्रभुको तलाश तौ,
हमारे इहां अनगन दारिद की खानि है।
अघके शिकारी जो है नजरि तिहारी तौ पै,

हौंहूँ मन पूरन अचन राख्यो ठानि है ॥
दासनिज सम्पति सुसाहेबके काज आवे,
होत हरषित पूरो भाग अनुमानि है ।
अपनी विपतिको हुजूर हौं कहत नाहिं,
रावरेकी विपति विदारिबेकी बानि है ॥

निर्वेद ।

सवैया ।

या लकुटी अरु कामरियापर, राज तिहूँ पुरको तजि डारौं। आठहु सिद्धि नवो निधिके सुख, नन्दकी गाय चराय बिसारौं ॥ नैननसौं "रसखानि" कबै, ब्रजके बन बाग तडाग निहारौं । कोटिकके कलधौतके धाम , करीलकी कुञ्जन ऊपर वारौं॥

समाप्त.